Vol. I
No. 16



*Tuesday
16th March, 1951*

HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY DEBATES

Official Report

PART II—PROCEEDINGS OTHER THAN QUESTIONS AND ANSWERS

CONTENTS

Note: *at the beginning of the speech denotes conformation not received.

GOVERNMENT PRESS
HYDERABAD-DN.
[illegible]

THE HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY

Tuesday, the 16th March, 1954.

The House met at Half Past Two of the Clock.

[MR. SPEAKER IN THE CHAIR]

PART II

Questions and Answers

(*See Part* I)

General—Budget Demands for Grants

شری جی - راجہ رام (آرمور) - مسٹر اسپیکر سر - قبل اسکے کہ ڈیمانڈس پر چرچا شروع کیجائے میں ایوان کے ملاحظہ میں ایک چیز لانا چاھتا ھوں - وہ یہ کہ ہم ایوان میں اس وقت پولس کے ڈیمانڈس پر بحث کررھے ھیں - پولس کا عوام کے ساتھ جو رویہ ھے اور پولس کی کیا کارگزاریاں ھیں اس بارے میں کئی آنریبل ممبرس نے وضاحت کی ھے - اسکے باوجود ہم کل سے دیکھ رھے ھیں کہ اب تک تین مرتبہ پولس نے معصوم امن سے رھنے والوں پر . . . . .

Mr. Speaker : What is it that the hon. Member is speaking about ?

Shri G. Rajaram : I am speaking about the police lathi charge.

Mr. Speaker : How is it relevant here ? Is the hon. Member speaking on the Demands concerned?

Shri G. Rajaram : I want just to place before the hon. Minister certain matters.

کل رات کے ۱۱ بجے سے دو مرتبہ لاٹھی چارج ھوا - کئی ورکرس گرفتار کئے گئے . . .

Shri Ratanlal Kotecha (Patoda) : Is the hon. Member speaking on the demands ?

مسٹر اسپیکر - کیا آپ ڈیمانڈس پر تقریر کررھے ھیں ؟

شری جی - راجہ رام - میں تقریر نہیں کررہا ہوں - میں یہ کہہ رہا ہوں کہ چونکہ ہم پولس ڈیمانڈس پر بحث کررہے تھے اسلئے ہمارے لئے کوئی موقع نہیں تھا کہ ہم اڈجورنمنٹ موشن پیش کرتے لیکن ہم اسکو برداشت نہیں کرتے کہ ایک طرف تو معزز ایوان میں پولس اور پولس کے ڈیمانڈس پر بحث کیجائے اور دوسری طرف پولس اپنا اتیاچار جاری رکھے - اسمبلی سے ۲۰۰ گز یا ۱۰۰ گز پر مسلسل لاٹھی چارج ہوتا رہا اور جو ورکرس اپنے حقوق کیلئے پیسفل (Peaceful) جدو جہد کررہے تھے انہیں گرفتار کرکے لیگئے - اور یہ پتہ نہیں کہ انہیں کہاں رکھا گیا - کیونکہ پوچھنے پر بھی نہیں بتایا جاتا - ہاؤس کے آنریبل ممبرس کو یہ واقعات معلوم ہونے چاہئیں - اور یہ بتایا جانا چاہئے کہ آخر انہیں کہاں رکھا گیا ہے ....

مسٹر اسپیکر - منسٹر اسکا جواب دینگے -

شری جی - راجہ رام - منسٹر صاحب تو جواب دینگے - لیکن ہم خاص طور پر یہاں پولس پر بحث کررہے ہیں اور گورنمنٹ کی اس پالیسی سے متعلق کرٹسزم (Criticism) کررہے ہیں - اگر پولس اسی طرح کا اتیاچار جاری رکھے اور آنکھوں کے سامنے مارتی رہے تو ہم اسکو کبھی برداشت نہیں کرینگے - اسلئے میری پارٹی اس عمل کی پرزور مذمت کرتی ہے اور احتجاج کے طور پر ایوان سے واک اوٹ کرتی ہے -

(Members of the U.P.P. then left the Assembly Chamber).

श्री. व्ही. डी. देशपांडे (अिप्पागुडा) :—मिस्टर स्पीकर सर, कल मैंने अिस चीज को हाअुस के सामने रखा था और मैं खुद जाकर आनरेबल होम मिनिस्टर से मिला था और अुनसे कहा था कि आज कुछ अरेस्टस (Arrests) होने के अिमकानात हैं, अुनको रोका जाय। अिसके बावजूद पुरानी मिल के पास जो शख्स भूख हडताल कर रहे हैं अुनको गिरफ्तार करने की कोशिश की गअी है और बाकी जो हडताल करनेवाले हैं अुनमें से करीब दस वर्कर्स को गिरफ्तार किया गया है। वहां पर लाठी चार्ज किया गया। अिसके बाद सेक्रेटेरीअेट पर भी लोग प्रोसेशन लेकर गये और वह पर अुन्होंने मांग की कि जो लोग गिरफ्तार किये गये हैं अुनको रिहा किया जाय तो सेक्रेटरीअेट के पास भी लोगों पर लाठीचार्ज किया गया। मैंने सुना है कि लोग वहां धरना देकर बैठे हुअे हैं, अैसी अेक घंटे पहले मुझे अित्तला मिली है। जिस तरह का बर्ताव और लाठीचार्ज हमारी आंखों के सामने किया जा रहा है अुसके प्रोटेस्ट (Protest) में मैं अपनी पार्टी की तरफ से वाकऔट (Walk out) करता हूं।

(Members of the P. D. F. Party then left the Assembly Chamber.)

شری جے - بی - متیال راؤ (سکندرآباد - محفوظ) - اس بارے میں میں کچھ ثبوت پیش کرنا چاہتا ہوں - جیسا کہ آنریبل لیڈر آف دی اپوزیشن نے کہا ہے میں بھی

سیکریٹریٹ گیا تھا - وھاں ورکرس پولس پر حملہ کررھے تھے میں نے اپنی آنکھوں سے دیکھا ھے - کسطرح وہ ......

مسٹر اسپیکر - اسکا جواب تو منسٹر صاحب دینگے -

شری جے - بی - متیال راؤ - لیکن میں نے وھاں جو دیکھا ھے وہ ھاؤس کے سامنے بتلانا چاھتا ھوں - جس طرح دوسرے آنریبل ممبرس کو موقع دیا جاتا ھے کرپا کر کے مجھے بھی موقع دیا جائے -

مسٹر اسپیکر - آپ ڈیمانڈ کے سلسلے میں اسپیچ دیجئے -

श्री. रतनलाल कोटेचा :—मिस्टर स्पीकर सर, आर. टी. डी. (R.T.D.) के वर्किंग के बारे में मै अपने विचार हाअुस के सामने रखना चाहता हूं। बजट के जनरल डिसकशन (General discussion) के वक्त मैंने अिस डिपार्टमेंट के बारे में बहुत थोडे से विचार निवेदन किया था। आज कुछ विस्तारपूर्वक कहना चाहता हूं। आपको मालूम है कि तकरीबन हमारा रोड ट्रान्सपोर्ट डिपार्टमेंट (Road Transport Department) नेशनलाअिज (Nationalise) हुआ है। भारत में हैदराबाद रियासत पहली रियासत है कि जिसने अिस रोड ट्रान्सपोर्ट डिपार्टमेंट को नेशनलाअिज किया है। नेशनलायजेशन के तीन अुसूल होते हैं और अुन्हीं के अूपर यहां का नेशनलायजेशन हुआ है। काँग्रेस ने भी अपने अिलेक्शन मेनीफेस्टों (Election manifesto) में दर्ज किया है कि जितने भी रोड ट्रान्सपोर्ट डिपार्टमेंटस होंगे वे सब नेशनलाअिज हों, लेकिन यहां की रियासत ने अुससे भी पहले अिसका नेशनलायजेशन किया है। नेशनलायजेशन के लिये मैंने कहा कि तीन अुसूल मुख्य हैं। अेक यह कि अिसमें अेफीशिअन्सी (Efficiency) हो, दूसरा यह कि अेकानामी हो और तीसरा यह कि सर्विस टु दि पब्लिक' (Service to the public) यह अिसका अुद्देश हो। अिस कसौटी पर में यह देखना चाहता हूं कि हमारा जो अेक्सपेरीमेंट (Experiment) पच्चीस तीस साल से हो रहा है वह यशस्वी हुआ है या नहीं। रोड ट्रान्सपोर्ट डिपार्टमेंट का अितिहास बहुत लंबा अितिहास है। अुसकी तरफ में अैवानका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। यह डिपार्टमेंट हमारी रियासत में जून १९३२ में शुरू हुआ। अुस वक्त अिसके पास सिर्फ २७ बसेस थीं। १९३९ में डिपार्टमेंट गुडस लॉरीज (Goods lorries) का काम भी हाथ में लिया गया। अब हम देखते हैं कि अिस डिपार्टमेंट का कार्य १९५४ में कितना बढ गया है। अब अुनके पास पैसेंजर व्हिअीकल्स (Passenger vehicles) ६३२ हैं और लारीज ३३ हैं। पैसेंजर ढोने वाली मोटरें ६९८ हैं और लारीज १४ हैं। अिसी तरह से रुटस (Routes) की तरफ देखेंगे तो मालूम होगा कि १९३२ में ९ रुटस थे और अब १९५४ मे १७० रुटस होगये हैं। अिसी तरह से अिस डिपार्टमेंट का स्टाफ भी बढ गया है। १९३२ में स्टाफ १६१ था और आज तकरीबन वह साढे पांच हजार का हो गया है। आर. टी. डी. का कपिटल (Capital) आज तकरीबन २ करोड ७५ लाख है। अिस डिपार्टमेंट के अिनकम (Income) और अेक्सपेंडीचर साअिड (Expenditure side) की तरफ भी मै

हाअुस का ध्यान आर्कषित करना चाहता हूं। अिस डिपार्टमेंट को तकरीबन २ करोड ७४ लाख का अिनकम (Income) होता है, लेकिन १९५३-५४ के रिवाअिज्ड अिनकम (Revised Income) के लिहाज से २८ लाख का अिनकम बताया गया है अिस तरह से यह अिनकम कम क्यों हुआ है ? अेक्सप्लनेटरी मेमोरेंडम (Explanatory Memorandum) में बताया गया है कि कीमतें घट गअी है, स्लम्प (Slump) आ गया है और स्ट्राअिक (Strike) हुवा था अिसलिये यह २८ लाख का घाटा हुआ है। मैं समझता हूं यह कारण ठीक नहीं हैं। हम देखते है कि कीमतें बराबर बढती गअी है। पिछले साल फायनान्स मिनिस्टर ने अपने भाषण में कहा था कि कीमतें बढती गअी है, लेकिन यह जो कारण बताया गया है कि स्लम्प आया है और डिप्रीसिअेशन (Depriciation) की वजह से अिसमें घाटा आया है वह कारण मुझे ठीक नहीं मालूम होता। दूसरा कारण यह है कि स्ट्राअिक की वजह से अिनकम घट गया है। मैं समझता हूं कि स्ट्राअिक में गव्हर्नमेंट ने अैसा माकुल अिन्तजाम किया था कि अुसकी वजह से कोअी अिनकम घटने की वजह नहीं मालूम होती। असली वजह तो यह मालूम होती है कि डिस्ट्रिक्ट के अंदर कंडक्टर्स और ड्रायव्हर्स के अूपर अिस डिपार्टमेंट का बहुत कम चेकिंग (Checking) होता है। मै अैसे जिले का रहीवासी हूं जहां हम बसेस के सिवा कहीं नहीं जा सकते। रेलवे का प्रवास बिल्कुल नही है और मुझे तो हमेशा घूमना पडता है। मैं देखता हूं कि २५ फीसद नहीं बल्कि ५० फीसद अिनकम ड्रायव्हर्स और कंडक्टर्स अपने जेब में डालते हैं। चेकिंग बहुत कम है, हालांकि अिसके लिये करीब करीब चार या पांच लाख रुपया बजट में रखा गया है। चेकिंग करनेवाले ही कंडक्टर्स और ड्रायव्हर्स से मिल जाते हैं। अिससे हमारा बहुत बडा घाट होता है। मैं बंबअी के बस डिपार्टमेंट की तरफ देखता हूं तो वहां हर बस का चेकिंग होता है हर बस में चेकर रहता है। बस स्टार्ट होते ही वहां चेकिंग होता है और रास्तों में भी चेकिंग होता है, अिसलिये बंबअी स्टेट की आमदनी बढती जा रही है। हमारे यहां पूरे स्टेट में मोनापली (Monopoly) होते हुअे भी अिनकम घटता जा रहा है अिसके बारे में होम मिनिस्टर साहब को अच्छी तरह सोचना पडेगा।

मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि अुर्स और जत्राओं में बस डिपार्टमेंट का जो अिनकम होता है वह भी घटता जा रहा है। १९५२-५३ में ३ लाख ४ हजार का जो अुत्पन्न था वह १९५४ में १ लाख ९६ हजार का हुआ है। क्या लोगों की अुर्स और जत्राओं पर से या अीश्वर और अल्ला पर से श्रद्धा कम हो गअी है ? हमारे यहां कअी अुर्स और देवस्थान हैं जहां लाखों लोग दर्शन के लिये जाते हैं, लेकिन अुसीका फायदा लेकर कंडक्टर्स और ड्रायव्हर्स काफी पैसा जेब में डालते हैं। बीड के पास पंढरपूर और पैठण की जत्राअें होती हैं। लाखों लोग वहां जाते हैं लेकिन गव्हर्नमेंट की तरफ से कोअी खास अिन्तेजाम नहीं किया जाता। अिस तरह के मौकों से फायदा अुठाकर अेक अेक कंडक्टर और ड्रायव्हर हजार दो हजार रुपये जेबमें डालते हैं। गव्हर्नमेंट को अिसकी तरफ काफी ध्यान देना चाहिये।

लगेज (Luggage) का अुत्पन्न भी कम है। अुसमें भी कोअी खास फायदा नहीं है। अेक लाख ९ हजार का अिसका अुत्पन्न है। पूरे स्टेट की मोनापली होने पर दो करोड अिनकम में सिर्फ १ लाख ९ हजार का अुत्पन्न हो रहा है। यह अुत्पन्न १५-२० लाख तक जाना चाहिये।

कंडक्टर्स लगेज बुक नहीं करते, अगर करते हैं तो बहुत कम करते हैं, अिसलिये लगेज का अुत्पन्न बहुत कम हो रहा है। माल लॉरीज का सेक्शन तकरीबन घाटे में है क्योंकि अिसका अुत्पन्न कम है और खर्चा ज्यादा हो रहा है। गव्हर्नमेंट को या तो अिस डिपार्टमेंट को बंद करना पडेगा या बंबअी स्टेट की तरह अिसका पूरा नेशनलायजेशन (Nationalisation) करना पडेगा जिसके बारे में बंबअी गव्हर्नमेंट अभी सोच रही है और वे ज्यादा लॉरीज (Lorries) मंगवा रहे हैं। मालवाहतुक का सारा काम वहां की गवर्नमेंट अपने हाथ में लेनेवाली है। अुसी तरह से यहां भी लेना पडेगा या प्रॉयवेट (Private) लोगों के हाथ में देना पडेगा। जिस तरीके पर बंबअी स्टेट का ट्रॅसपोर्ट डिपार्टमेंट काम कर रहा है अुसी तरीके पर हम भी सोचें और हमारे ट्रान्सपोर्ट डिपार्टमेंट का अुत्पादन बढायें।

अेक्सपेंडीचर साअिड (Expenditure side) में चार मद हैं। अेक अेडमिनिस्ट्रेशन (Administration) दूसरा रिपेअर्स (Repairs) और मेन्टेनन्स (Maintenance), तीसरा ऑपरेशनल (Operational) और चौथा रिप्लेसमेंट (Replacement)। अिसका रेशो (Ratio) देखेंगे तो अेडमिनिस्ट्रेशन पर १२ परसेंट खर्च होता है। यह बहुत भारी है। अेकाध प्रायवेट आदमी सर्व्हीस चलाये तो अितना खर्च नही होगा। रिपेअर्स और मेन्टेनन्स का खर्च ३५ परसेंट है और रप्लेसमेंट का खर्च ७ परसेंट है। दूसरी चीज यह है कि यहां के स्टाफ को बहुत ज्यादा फॅसिलिटीज (Facilities) दी गअी है। दूसरे विभागों के कर्मचारियों को अितनी फॅसिलिटीज नहीं हैं जितनी की यहां के स्टाफ को हैं। कंडक्टर्स और ड्रायव्हर्स को क्या फॅसिलिटीज दी गअी हैं अुनको में हाअुस के सामने रखना चाहता हूं। अुनके लिये रेलवे पासेस अँड कन्सेशन्स (Concessions) फ्री मेडीकल फॅसिलिटीज (Free medical facilities) ग्रेन कन्सेशन्स (Grain concessions) स्टाफ बेनिफिट फंड (Staff benefit fund) कोआपरेटिव क्रेडिट सोसायटी रिक्रिअेशन फैसिलिटीज (Recreation facilities) फुड (Food) की सबसिडी (Subsidy) अितनी फैसिलिटीज हैं। अितनी फॅसीलिटीज होने पर भी हमारे कम्युनिस्ट दोस्तों ने अुनको भडकाकर स्ट्राअिक करवाया। अिन ड्रायव्हर्स और कंडक्टर्स के साथ मुझे कोअी सिंपथी (Sympathy) नहीं है, क्योंकि अुनको हमारी रियासतों दूसरी रियासतों के मुकाबले मे ज्यादा तनख्वाह मिलती है और साथ साथ अुनका जो दीगर गैर कानूनी अिनकम है वह करीब करीब दुगना है। अैसे जो देश को नुकसान पहुंचानेवाले लोग हैं जो अपने जेब में पैसे डालते है अुनके बारे में मुझे कोअी सिम्पथी नहीं है. तो भी हमारे कम्युनिस्ट दोस्तों ने अुनको भडकाया और स्ट्राअिक कराया। लेकिन हुकूमत ने बडे अच्छे ढंग से अुसको असफल बनाया जिसके लिये मैं हुकूमत को धन्यवाद देता हूं——

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :—आप पुलिस डिपार्टमेंट जॉअिन (Join) कीजिये।

श्री. रतनलाल कोटेचा :—हां, जरूर जॉअिन करुंगा, कम से कम आपके लिये तो जरूर करुंगा। साथ साथ अुनको फूड सबसिडी दी जाती है। मैं समझता हूं कि जब कंट्रोल अुठाया गया है तो सबसिडी देने की जरूरत नहीं है।

अब कुछ सजेशन्स (Suggestions) अिस डिपार्टमेंट के वर्किंग (Working) के बारे में देना चाहता हूं। मैं देखता हूं कि हमारी बसेस में काफी ओव्हर लोडिंग (Overloading) होता है और अुसकी वजह से पैसेंजर्स को बहुत तकलीफ होती है। हमारे सामने जो फायनान्शिअल बजट अेस्टीमेट रखा गया है अुसमें हम देखते हैं कि हैदराबाद और सिकंदराबाद में काफी बसेस हैं और डिस्ट्रिक्टस में बहुत कम हैं। ज्यादा वक्त न होने से में अिसके तफसीलात में नहीं जा सकता, लेकिन मैं अितना कहूंगा कि हैदराबाद और सिकंदराबाद में ९८ बसेस और अुनके अिनकम अुनकी तादाद) की लिहाज से बहुत कम है। शहर से डिस्ट्रिक्टस में जो बसेस जाती है अुनकी तादाद कम है लेकिन तादाद के लिहाज से अुत्पन्न ज्यादा है। तादाद कम है अिसीलिये ओव्हर लोडिंग होता है। साथ साथ गाडियों के टायमिंग्ज (Timings) का लिहाज बराबर नहीं होता। बीड से जालना आने के लिये जो साढेतीन घंटे का समय रखा गया है अुसके लिये पांच घंटे लगते हैं। तीसरी चीज यह है कि पैसेंजरों को अमीनिटीज (Amenities) देने के लिहाज से अिस डिपार्टमेंट ने कोअी खास तरक्की नहीं की है। डिस्ट्रिक्टस में कहीं भी बस स्टेशन्स नहीं हैं, पीने के पानी का अिन्तजाम नहीं है, लेव्हेटरी (Lavatory) और ल्याटरिन की सहूलियत नहीं है। अिससे औरतों और बूढे लोगों को बहुत तकलीफ होती है। बंबअी स्टेट में हर जिले और तालुके में अैसे बस स्टेशन्स बने हैं कि हर जिले के स्थान पर अेक लाख रुपये कीमत का स्टेशन, तालुके की जगह ४० हजार का और जहां मामूली जंकशन्स हैं वहां ६ हजार का स्टेशन बनाया गया है। चार साल की लाअिफ (Life) में अुनके यहां अितना प्रोग्रेस (Progress) हुवा है।

अिसके बाद हमारे यहां जो टाअिम टेबल प्रकाशित किया जाता है वह अंग्रेजी में होता है हालांकि डिस्ट्रिक्ट के बहुत कम लोग अंग्रेजी जानते हैं। दूसरी बात यह है कि ये जो टायमिंग्ज फिक्स (Fix) किये जाते हैं वे हैदराबाद में बैठकर किये जाते हैं अिसलिये स्वाभाविक है कि डिस्ट्रिक्ट के लोगों का अुसमें ख्याल नहीं किया जाता। साथ साथ मैंने यह भी देखा है कि हमारे बस डिपार्टमेंट में रिजर्वेशन (Reservation) की कोअी खास सहूलियत नहीं है। मैंने मिनिस्टर साहब से बंबअी की फीगर्स पूछा था लेकिन वे मिल नहीं सके। यहां सिर्फ दो हजार का अिनकम रिजर्वेशन के सिलसिले में होता है, यानी सिर्फ चार हजार लोगोंने ही अिसका फायदा अुठाया है और ये रिजर्वेशन चार्जेस भी 'हाय' (High) हैं। यहां रिजर्वेशन के लिये आठ आने चार्ज है। बंबअी में आठ आने से कम की टिकट के लिये १ आना रिजर्वेशन चार्ज है, आठ आने से अेक रुपये तक दो आने और अेक रुपये के अूपर कि टिकट पर ४ आने अिस तरह के चार्जेस हैं। अिस वजह से वहां लोग ज्यादा फायदा अुठाते हैं और वहां की हुकूमत की आमदनी बढती है। यहां तो रिजर्वेशन किया गया तो भी सीट मिलेगी या नहीं अिसकी शंका होती है।

[MR. DEPUTY SPEAKER IN THE CHAIR]

अिसके बारे में गवर्नमेंट को सोचना चाहिये। मैं यह भी देखता हूं कि कंडक्टर्स और ड्रायव्हर्स का लोगों के साथ ठीक बर्ताव नहीं रहता। अिस लिहाज से अुनमें सुधार करने की आवश्यकता है।

में यह भी देखता हूं कि डिस्ट्रिक्ट की बसेस की मुश्किलात को अगर कहना हो तो हमको हैदराबाद में आना पडता है। अिसके बजाय अगर हर डिस्ट्रिक्ट में अेक अेक अेडवायजरी बोर्ड (Advisory Board) कायम किया जाय, जैसे कि बंबअी स्टेट में किया गया है, तो मैं समझता हूं कि आज जो मुश्किलात पाअी जाती है वह कम हो जायेंगी। साथ साथ मेरे डिस्ट्रिक्ट में अेक दो लाअिन्स (Lines) अभी काम कर रही हैं अुनको भी गवर्नमेंट अगर अपने कबजे में ले लें तो गवर्नमेंट का अिनकम काफी बढ जायगा। अिसके बारे में मैंने अेक दो खत भी लिखे थे लेकिन मालूम होता है अुनकी तरफ कोअी खास तवज्जह नहीं दी गअी। अंमलनेर का जो रूट है वहाँ हमारी बसेस नहीं चलतीं। वहां अेस. टी. मोटर्स चलती थी अुसको अगर आर. टी. डी. अपने कब्जे में ले लें तो अुसका अिनकम बढ जायगा। अिन चंद सजेशन्स के साथ जो कि मैंने हाअस के सामने रखी हैं और जिन पर मै अुम्मीद करता हूं कि गवर्नमेंट सोंचेगी, मै अपना भाषण समाप्त करता हूं।

مسٹر ڈپٹی اسپیکر - آنریبل ممبر دس منٹ میں تقریر ختم کریں کیونکہ بہت سے ممبرس تقریر کرنا چاھتے ھیں -

شری جی - سری راملو (منتھنی) - میں نے ایسا سنا تھا کہ کٹ موشنس دینے پر ٹائم ملتا ھے - لیکن کٹ موشنس دینے پر بھی ٹائم نہیں مل سکا - نہ وہ اصول باقی ھے اور نہ یہ اصول -

شریمتی شانتا بائی (مکتھل آتما کور - عام) - اسپیکر سر - لیڈیز کو بھی موقع دیا جائے -

శ్రీ కె. రామచంద్రారెడ్డి (రామన్నపేట) :

మిస్టర్ స్పీకర్ సర్,

పోలీసు డిమాండు 3,౭౯,3౯,000 రూపాయలకు నేను క్రొత్త తీర్మానము ప్రవేశ పెట్టాను. ఆ క్రొత్త తీర్మానం గురించి మాట్లాడుతున్నాను. ప్రధానంగా ఈ డిమాండును చూసినట్లయితే యీ సంవత్సరం పోలీసుకు తక్కువ ఖర్చు చేయాలని చూపెట్టడం జరిగింది. గత సంవత్సరం కంటే ఈ సంవత్సరం బడ్జెటులో పోలీసుకు ఖర్చు ౧౧ లక్షల 30 వేలు తక్కువ చూపెట్టారు. ఇదే ఎస్టిమేటు బడ్జెటు మాత్రమే. రివైజ్డ్ బడ్జెటులో అంతా ఖర్చుపెట్టడం జరుగుతుంది. ఈ ౧౧ లక్షల 30 వేలు కూడ రివైజ్డ్ బడ్జెటులో ఖర్చు పెడతారు. అందుచేత ఇప్పుడు యీ పోలీసుపై ఖర్చు తక్కువ అయ్యే సమస్య లేదు. క్రొత్తగా ఏర్పడిన ఆంధ్రరాష్ట్రములో పోలీసు కింద ౨ కోట్ల ౬3 లక్షలు మాత్రమే బడ్జెటులో ఖర్చుపెట్టడం జరుగుతోంది. అక్కడ జనాభా ఎక్కువ. ఆ రాష్ట్రం వైశాల్యం ఎక్కువ వుంది. కాని, హైదరాబాదు స్టేటులో ౧౭0 లక్షల జనాభా మాత్రమే ఉంది. ఆంధ్రరాష్ట్రంకంటె దీని వైశాల్యముకూడ తక్కువ అయినా యీ స్టేటు బడ్జెటు చూచినట్లయితే 3 కోట్ల ౭౯ లక్షల 3౯ వేలు పోలీసుకు ఖర్చు చేయడం జరుగుతోందంటే, ఆంధ్ర స్టేటుకంటె హైదరాబాదు స్టేటులో ౬౬ లక్షల 3౯ వేలు పోలీసుకు ఎక్కువ ఖర్చు చేయబడుతోంది. వరంగల్, నల్లగొండ, కరీంనగర్ జిల్లాలలో చూసి

నట్లయితే పోలీసుకు ఎంత ఖర్చు పెడుతున్నారో తెలుస్తుంది. పోలీసుకు తక్కువ ఖర్చు చేస్తున్నామని చెప్పడం తప్పితే ఆచరణలో మాత్రం పోలీసుకు తక్కువ ఖర్చు చేయడమనేది జరగడంలేదు. ౧౯౫౩–౫౪ వ సంవత్సరంలో ౧౨,౧౮,౬౦౩ రూ. నల్లగొండ జిల్లాలో పోలీసుకు ఖర్చుపెట్టింది. నల్లగొండ జిల్లాలో ౩౯ స్టేషన్లు, ౯ మంది సి. ఐ. లు, ౪౮ మంది యస్. ఐ. లు, హెచ్. సిలు ౧౩౦ మంది, పోలీసులు ౧౩౫౫ మంది ఉన్నారు.

కరీంనగర్ జిల్లాలో ౬,౮౯,౬౯౫ రూ. పోలీసుకు ఖర్చు చేయబడుతోంది. ఆ జిల్లాలో ౩౮ స్టేషన్లు, ౯ మంది సి. ఐ. లు, ౪౩ మంది యస్.ఐ.లు, ౧౨౭ మంది హెచ్.సి.లు, ౧౦౫౨మంది పోలీసులు వున్నారు. ఉత్తర దక్షిణ వరంగల్ జిల్లాలో ౧౮,౨౨,౯౬౭ రూ. పోలీసుకు ఖర్చు చేస్తున్నారు. అక్కడ ౬౦ స్టేషన్లు, ౧౫ మంది సి. ఐ. లు, ౭౬ మంది యస్. ఐ. లు, ౨౫౫ మంది హెచ్. సి. లు, పి. సి. లు ౨౦౨౪ మంది వున్నారు. ఎందుకు ఈ విధంగా యీ మూడు జిల్లాలలో పోలీసుకు ఎక్కువ డబ్బు ఖర్చు పెడుతున్నారు? మొత్తం పోలీసు ఖర్చులో ౭ వంతులు డబ్బు యీ మూడు జిల్లాలలో ఖర్చుపెట్టడం జరుగుతోంది. మొత్తం ౩౭ లక్షల ౩౧ వేల ౨౬౫ రూపాయలు యీ మూడుజిల్లాలలో ఖర్చు పెడుతున్నారు. ప్రభుత్వము ౫,౧౪౩ మంది పోలీసులను యీ మూడు జిల్లాలలో కేంద్రీకరింపజేసి ఆ విధంగా ఎక్కువ డబ్బును పోలీసుకు ఖర్చు చేస్తున్నారు. ఈ మూడు జిల్లాలలోను ఇంతమంది పోలీసులను ఉంచి, పోలీసుకు ఎందుకు ఎక్కువ ఖర్చు పెడుతున్నారని ఆలోచిస్తే, యీ జిల్లాలలో కమ్యూనిస్టుపార్టీ, రైతు సంఘం, పి. డి. యఫ్ మొదలైన సంస్థలను అణచడానికి, ప్రజా ఉద్యమాలను అణచడానికి ఆ జిల్లాలలో ఎక్కువ మంది పోలీసులను పెట్టి వాళ్ళకు ఎక్కువ ఖర్చు పెడుతున్నారనే విషయం స్పష్టవౌతుంది. ప్రభుత్వము ప్రజా ఉద్యమాలను అణచడానికి అంత డబ్బు ఖర్చు చేస్తుందేగాని ప్రజల అవసరాల కొరకు, ప్రజలకు మేలు చేసే పనులకు ఏమాత్రము డబ్బు ఖర్చు పెట్టదు. ప్రజలకు అవసరమయ్యే చెరువులకు ౧౯౫౨–౫౩ వ సంవత్సరంలో నల్లగొండ జిల్లాలో ౩ లక్షల ౩౪వేల రూపాయలు మాత్రమే ఖర్చుపెట్టారు. ౧౫,౪౩,౯౭౫ మంది జనాభావుండే జిల్లాలలో పోలీసు పైన ౧౨,౧౮,౬౦౩ రూ. ఖర్చు చేస్తున్నారు. కాని ప్రజల అవసరమైన చెరువులు మొదలైన వాటి మరమ్మతుల కొరకు ౩ లక్షల ౩౪ వేలు మాత్రమే ఖర్చు చేస్తున్నారు. కరీంనగర్ జిల్లాలో చెరువు మరమ్మతులకు ఒక లక్షా, ౬౯ వేలు మాత్రమే ఖర్చు చేస్తున్నారు. కాని పోలీసులకు ౬ లక్షలు ౮౯ వేల ౬౯౫ మాత్రమే ఖర్చు చేస్తున్నారు. అదే విధంగా హెల్తు డిపార్టుమెంటుకు కూడా తక్కువ ఖర్చు పెడుతున్నారు. నల్లగొండ జిల్లాలో మందులు కొరకు ౯౯,౮౮౯ రూ. మాత్రం ఖర్చు చేస్తున్నారు. వరంగల్ జిల్లాలో ౧,౫౩,౯౭౨ రూ. కరీంనగర్ జిల్లాలో ౧,౦౧,౨౨౪ రూపాయలు మందులక్రింద ఆరోగ్య శాఖకు ఖర్చు చేస్తున్నారు. దీనిని బట్టి చూస్తే, యీ ప్రభుత్వం ప్రజలకొరకుగాని, ప్రజల శ్రేయస్సుకొరకుగాని నేషన్ బిల్డింగ్ ప్లాన్స్ (Nation Building Plans) కార్యాలకోసంగాని ఏవిధంగా ఖర్చు పెడుతోందో అర్థం అవుతుంది. అదేవిధంగా, పోలీసు ఆఫీసర్ల టి. ఎ ల విషయంచూస్తే ౧౯౫౨ వ సంవత్సరంలో ౧౭వేల రూపాయలు అయితే, ౧౯౫౩ లో ౪౦ వేల రూపాయలు అయింది. దీనిని బట్టి, ౫౨ కంటె ౫౩ లో పోలీసు ఖర్చు ఎక్కువ చేసిందేగాని తక్కువ ఏమీ చేయలేదు. పోలీసుపై తక్కువ ఖర్చు చేస్తున్నట్లు ఆచరణలో కనుపించడం లేదు. ఇప్పుడు ప్రధానంగా పోలీసు ప్రజా ఉద్యమాలను అణచడానికే ప్రయత్నం చేస్తోంది. ఇందుకు ఉదాహరణగా పెద్ద మునగాల నియోజక వర్గానికి జరిగిన బై–ఎలక్షన్స్

సందర్భంలో రావి నారాయణరెడ్డి, సుందరయ్యాగార్లను దెబ్బలు కొట్టడంవల్ల కాంగ్రెస్‌పై ఎలాంటి చర్యలు తీసుకోకపోగా, పైగా వారికి పోలీసులు అండగా వుండి ప్రజా ఉద్యమాలను అణచడానికి ప్రయత్నిస్తోంది. ధర్మసాగర్‌లో ఊరేగింపు జరుగుతూంటే పోలీసులు కాల్పులు కాల్చారు. ఇద్దరు మరణించారు. పానుగోడులో పోలీసులు కాల్చగా అనేక మందికి దెబ్బలు తగిలాయి. అదేవిధంగా హుజూర్‌నగర్, బలపాల గ్రామాలలో పోలీసులు అత్యాచారాలు జరిపారు. హుజూర్‌నగర్ మున్సిపల్ ఎన్నికల సందర్భంలో గందరగోళం జరిగింది. కాంగ్రెసువారు కమ్యూనిస్టులపై దాడులు చేశారు. వారి ఆఫీసులను లూటీ చేశారు. పోలీసులు వారికి అండగా వుండి, వారి వెంట ఉండి ఇలా అత్యాచారాలు చేయించారు. పోలీసులు కాంగ్రెసునాయకులు కలసి, ప్రజా ఉద్యమాలు ముందుకు రాకుండా ప్రత్యక్షంగా దాడులు చేస్తున్నారు. దీనిని గురించి హోం మంత్రిగారిని ప్రార్థించడం జరిగింది. కాని ఏమీ శ్రద్ధ తీసుకోలేదు. ప్రత్యక్షంగాను, పరోక్షంగాను కూడా పోలీసులు కాంగ్రెసువారి అండతో అత్యాచారాలు చేస్తున్నారు. కాంగ్రెసు నాయకులు, కాంగ్రెసు బురఖా వేసుకొని పోలీసుల అండతో దాడులు చేయడం జరుగుతోంది. జిల్లాలలో నిర్బంధ విధానాలు పెట్టారు. నల్లగొండ జిల్లాలో ౧౧౦, వ సెక్షన్ ౧౦౭,౫౧, ౧౫౧, మొదలైన సెక్షన్స్ పెట్టి మొత్తం ఆ జిల్లాలో ౧౫౦ మంది కార్యకర్తలమీద కేసులుపెట్టి కోర్టులచుట్టూ త్రిప్పుతున్నారు. రైతులు భూములనుండి బేదఖలు కాకుండా ఖానూన్‌ప్రకారము హక్కులను కాపాడుకోడానికి ప్రయత్నిస్తుంటే జమీందార్లు పోలీసులను అండగా పెట్టుకొని ౩౫౦ మంది రైతులపై కేసులు పెట్టారు. ఆ కేసులు ఇప్పుడు కోర్టులలో నడుస్తున్నాయి. ఈ విధంగా పోలీసులు జమీందార్లకు అండగా ఉండి, జమీందార్ల పైపు ఉండి, రైతులను అణచివేస్తున్నారనేది స్పష్టమౌతోంది. ౧౯౫౩వ సంవత్సరం డిశంబరు వరకు జిల్లాలలోపల ౧౫౫ కేసులు కొట్టివేయబడ్డాయి. ఒక్కొక్కరిపైనా ౧౦, ౧౧ కేసులు మోపి, లేనిపోని కేసులు పెట్టి జైళ్ళల్లో పెట్టడం జరుగుతోంది. ఒక్కొక్కరిపైనా ౧౦, ౧౧ కేసులు ఎందుకు మోపుతున్నారంటే ఒక కేసు కొట్టివేయబడినా ఇంకొక కేసులో నయినా శిక్ష పొంది వాళ్ళు జైళ్ళల్లోకి పెడతారుగదా అనే ఉద్దేశంతో ౧౦, ౧౧ కేసులు మోపుతున్నారు. ఆ విధంగా ప్రజా కార్యకర్తలపై లేనిపోని కేసులు పెట్టి బయటకు రాకుండా వారిని అణుస్తున్నారు. సంగప్ప మొదలైన ౧౭ మందిపైన కేసులు నడిచి ౫ సంవత్సరాల తరువాత వాళ్ళకేసులు కొట్టివేశారు. ఈ ౫ సంవత్సరాలు యీ ౧౭ గురిని జైళ్ళల్లోనే పెట్టింది. ప్రభుత్వం కావాలని లేనిపోని కేసులు మోపి కార్యకర్తలను బయటకు రానీయకుండా ప్రజలకు సహాయం చేయనివ్వకుండా జైళ్ళతో పెడుతున్నారు. ప్రభుత్వం మెత్తని పాలసీ అవలంబిస్తోంది. కత్తికి తేనెపూసే పాలసీ అవలంబిస్తోంది. జైళ్ళల్లో ఏడెనిమిదిమంది జబ్బులతో పడి వున్నారు. వారిని విడుదల చేయాలని రిప్రజెంటు చేసినా విడుదల చేయడం లేదు. రజాకార్ల కాలంనాటి కేసులు కూడా ఇంకా నడుస్తూనే ఉన్నాయి. నల్లగొండ జిల్లాలో ౩౫ కేసులు నడుస్తున్నాయి. ఒక్కొక్కరిమీద ౬, ౭ కేసులు వరకు నడుస్తున్నాయి. నూటికి ఎనభైమందిని F.I.R. లో పేరు రాయకుండా ఉంచుతున్నారు. ఆ విధంగా F.I.R. లో పేరు రాయకుండా ఉంచి వారిని అన్‌నోన్ (unknown) కమ్యూనిస్టులని, టెరరిస్టు కమ్యూనిస్టులని పేరులు పెట్టివీలున్నప్పుడల్లా వారిని జైళ్ళల్లో పెడుతున్నారు. ప్రభుత్వం బుద్ధి పూర్వకంగా యీ పనులు చేస్తున్నారు. ఇదే ఈనాటి పాలసీగా ఉన్నది. తిరుమలరావు, భీమిరెడ్డినరసింహారెడ్డి, అంద్రెడ్డి వెంకటరెడ్డి మొదలైన వారిపైన

కేసులు రహస్యంగా వుంచి, ఏమీ వారంట్లు లేకుండానే వారిని నాన్ కమ్యూనిస్టులని పెట్టి రిస్టు కమ్యూనిస్టులని చెప్పి అరెస్టుచేయడం జరిగింది. వారిని నవంబరులో అరెస్టుచేసి జైళ్ళల్లో పెట్టారు. **F.I.R.** లోపల వీరి పేరు లేదు. ప్రధానంగా ఈ పోలీసు పాలసీ యీ ప్రభుత్వం పాలసీ ఏమిటంటే, ముఖ్యంగా కార్యకర్తలను అందరిని మొదటజైళ్ళల్లో బంధించి వారిపైన లేనిపోని కేసులు మోపి, ఆ కేసులు ఋజువు కాకపోయినా ఆరేండ్లవరకు జైళ్ళల్లో పెట్టడం ప్రభుత్వ ఉద్దేశం అని బోధపడుతుంది. ఇటువంటి పాలసీని ప్రభుత్వము మానుకోవాలని చెబుతున్నాను. పూర్వం నైజాం ప్రభుత్వ కాలంలో పోలీసులు నరేంద్రజీని రహస్యంగా మహబూబునగర్ జిల్లా మున్నూర్ తీసుకువెళ్ళి జైళ్ళల్లో పెట్టారు. ఆ విధంగా ఆ ప్రభుత్వం చేసినట్లే, యీనాడు కాంగ్రెసు ప్రభుత్వంకూడా అదే పాలసీ అవలంబిస్తోంది. దీనిని బట్టి ఆ ప్రభుత్వానికి యీ ప్రభుత్వానికి ఏమి భేదము వుందో అర్థము చేసుకోవచ్చును. ఇటువంటి నిర్బంధ విధానాలను తప్పనిసరిగా ఉపసంహరించుకోవాలని కోరుతూ నా ఉపన్యాసం ముగిస్తున్నాను.

श्री भगवानराव बोरालकर (बसमत जनरल) :—अुपाध्यक्ष महोदय, कल से जिस पुलिस के महकमे की मांगोपर चर्चा हो रही है और कअी मेंबरोंने अबतक अपने ख्यालात का अिजहार किया। अगर कोअी अैसा महकमा है कि जिससे लागों का ज्यादा मे ज्यादा तालुक आता है तो वह पुलिस का ही महकमा है। मेरा ख्याल है कि हमारी गव्हर्नमेंट अिस महकमे में जो तरक्की करनी चाहिये वह अभी तक नहीं की है। अिस महकमे को सुधारने के लिये जो काम किया जाना चाहिये था वह अबतक सरकार नही कर सकी है और अिस डिपार्टमेंट में जो रिश्वतखोरी चलती है अुसे भी गव्हर्नमेंट न रोक सकी है। यह अेक महकमा अैसा है कि जहां पर दिन भर में कअी दरख़ास्तें पब्लिक की तरफ से आती हैं, लेकिन पुलिस अुसपर ध्यान नही देती और जो लोग कोअी जुर्म करते हैं अुन्हीं से रिश्वत लेकर पुलिस अुन्हे छोड देती है।

मैंने गुजिस्ता साल बजेट के वक्त भी बताया था कि पुलिस को हमें अच्छी तरह ट्रेनिंग देने की जरूरत है। हमारे पास ट्रेन्ड (Trained) पुलिस वहुत कम है, लेकिन अुस तरफ अबतक कुछ ध्यान नही दिया गया और कुछ तरक्की भी नहीं हुअी। परभणी जिले की हदतक तो मै बता सकता हूं कि वहां के पुलिस अफसर जिस तरह काम कर रहे हैं वह काम करने के ढंग ठीक नहीं हैं। गव्हर्नमेंट को अिस तरफ ध्यान देना चाहिये और अपना काम किस तरह ठीक से किया जाय अिसकी ट्रेनिंग पुलिस को देनी चाहिये, लेकिन जैसा काम जमहूरियत में पुलिस को करना चाहिय वैसा काम नहीं हो रहा है, यह मुझे अफसोस के साथ कहना पडता है।

दूसरी बात मुझे डिपार्टमेंटल अिनक्वायरी (Departmental enquiry) का जो तरीका है अुसके बारें में कहना है। यदि कोअी अफसर कुछ गलती करता है तो अुसकी अिनक्वायरी डिपार्टमेंट की तरफ से की जाती है। पहले भी यही तरीका था लेकिन आज मै कहना चाहता हूं कि यह तरीका ठीक नही है। अिस तरह से यदि अिनक्वायरी की जाती है तो वह बराबर नहीं होती है। मेरा अिसके बारें में यह सजेशन है कि जो अिनक्वायरी होती है वह खुली अिनक्वायरी होनी चाहिये। यदि किसी अफसर के खिलाफ पब्लिक की तरफ से कोअी कंपलेंट (Complaint) आती है तो अुसके बारें में खुली अिनक्वायरी होनी चाहिये। ओपन अिनक्वायरी (Open enquiry) करने से अव्वाम को मालूम होगा कि हम कुछ कंपलेंट करते हैं तो अुसके खिलाफ गव्हर्नमेंट क्या

कार्यवाही कर रही है। जब किसी अफसर की अिनक्वायरी डिपार्टमेंट के दूसरे अफसर करते हैं तो वह सब अेक दूसरे से मिले होते है, अिस लिये बराबर अिनक्वायरी नही होती है। जिस तरह से अिनसाफ होना चाहिये वैसा नहीं होता।

अिस तरह कअी वाकयात में यहां पर रख सकता हूं। कंठेश्वर नामी अेक मौजे में वहां के सर्कल अिनस्पेक्टर बसमत और पूर्णा के सब-अिनस्पेक्टर के खिलाफ डी. वाय. अेस. पी. के पास कअी बार शिकायतें की गअी, तहकिकात का वचन दिया गया लेकिन कुछ अॅक्शन (Action) नहीं लिया गया, अैसा नहीं होना चाहिये। हम गव्हर्नमेंट को अपनी गव्हर्नमेंट समझते हैं और अैसी चीजें होती है तो अुनका अिनसाफ गव्हर्नमेंट को करना चाहिये। पब्लिक की भलाअी के लिये यह डिपाटमेंट है और अिसका काम पब्लिक की भलाअी करना है। पब्लिक को तकलीफ होती हैं तो अुन्हे दूर करना चाहिये।

अिसके साथ साथ आज जो करप्शन सब जगह दिखाअी देता है। वैसा ही अिस डिपार्टमेंट में भी काफी करप्शन है। अिसको बंद करने का मसला हमारे सामने है। करप्शन बंद करने का काम सिर्फ गव्हर्नमेंट का है अैसा तो मै नही कहूंगा। अिसके लिये यदि जरूरत हो तो कोअी बिल भी हाअुसमे लाया जाना चाहिये। लेकिन आज सिर्फ बिल लाकर यह मसला हल होनेवाला नही है। यह कोअी पार्टि पॉलिटिक्स का काम नहीं। अिसके लिये सब पार्टि के लोगों का अिस काम में हाथ बटाना चाहिये और गव्हर्नमेंट को भी सब लोगों की अिसमें मदद लेनी चाहिये। यह नॉन पार्टि (Non-party) मसला है। हमारे सारे समाज को ही यह मर्ज लगा है। अुसमे हर पार्टि के लोगों ने अिसे दूर करने के लिये कदम अुठाना चाहिये, यह अुनका फर्ज है। हम यदि कोअी काम करने जाते है तो आपकी सी. आय. डी. डिपार्टमेंट के लोग हमारे खिलाफ शिकायत करते हैं और अुनके पास हमारे खिलाफ रिपोर्ट करते है। हमारी कितनी ही कंपलेंट होगीं लेकिन अुस तरफ कुछ भी ध्यान नहीं दिया जाता, और अुसमे अिनसाफ नही मिलता, लेकिन हमारे खिलाफ जरासी शिकायत आने पर फौरन सरकार की तरफ से कदम अुठाया जाता ह। मेरा कहना यह है कि यह जो करप्शन का मसला है अुसके खिलाफ तो सबको मिलकर मुव्हमेंट (Movement) चलाने की जरूरत है। यह अेक बहुत सिरियस प्रॉब्लेम (Serious problem)है अैसा समझकर अिसको हल करने की कोशिश की जानी चाहिये।

मैं और अेक सजेशन (Suggestion) आपके सामने रखना चाहता हूं, वह यह है किजो रिपोर्टस अिस डिपार्टमेंट के बारें में गव्हर्नमेंट के पास आते हैं और जो कंपलेंटस आती हैं, अुनको देखने के लिये और अुनकी जांच करने के लिये सिर्फ गव्हर्नमेंट मशिनरी ही नही बल्कि गव्हर्नमेंट को अिसके बारें में सलाह देने के लियें और अिनक्वायरी करने के लिये अेक नॉन ऑफिशयल ऑडवाजरी कमिटी अपॉअिंट (Appoint) करनी चाहिये और अुस कमेटी में यह तमाम मसले पेश होने चाहिये। जमहूरियत में अिस तरह पब्लिक का कोऑपरेशन (Co operation) लेना बहुत लाजमी है। गव्हर्नमेंट आखरी डिसिजन (Decision) अपने हाथ में रख सकती है, लेकिन अिस तरह की अेक अडवायजरी कमेटी रखना बहुत जरूरी है, जिनको अव्वाम का अेतमाद हासिल है। अिस तरह से यदि गव्हर्नमेंट स्टेप (Step) लेगी तो हमारे यहा से करपशन बहुत कम होगा। यह मर्ज हमारे सारे समाज में है। हमारे चीफ मिनिस्टर साहब कहते हैं

का यह अैसा मर्ज है कि हम अिसे पूरी तरह नहीं निकाल सकते आप यदि यहां से ही अिसे नहीं निकाल सकते तो सारे हिंदुस्तान से यह मर्ज कैसे दूर होगा ? हैदराबाद गव्हर्नमेंट को अपनी पूरी ताकद लगाकर अिसे दूर करना चाहिये । अिसके लिये कानूनी स्टेप्स लेने की जरूरत हो तो वह भी लिये जाने चाहिये, अिसके बारें में मैंने अिसके पहले ही हाअुस के सामने अेक रेजोल्युशन लाया था, कि अिसके बारें में हमें अेक कानून बनाना चाहिये । गव्हर्नमेंट सर्वन्ट को अपनी मुव्हेबल (Movable) और अिमुव्हेबल (Immovable) प्रॉपरटी की पूरी फेरिश्त गव्हर्नमेंट को देनी चाहिये, अितनाही नही बल्कि अपने जो करीब के रिलेटिव्हज (Relatives) हैं अुनकि प्रॉपरटी की भी लिस्ट गव्हर्नमेंट को देनी चाहिये । यह यदि किया जाय तो करप्शन कम हो सकता है और अिससे शायद अुसे रोकने में मदद होगी ।

डिपार्टमेंटल अिनक्वायरी (Departmental enquiry) के बारें में तो मैंने पहले ही कहा कि यह तरीका ठीक नहीं है । अगर किसी अफसर के खिलाफ किसी ने कोअी दरखास्त दी है तो अुसपर क्या अॅक्शन लिया जा रहा है यह अुस आदमी को समझने का कोअी रास्ता नहीं है । किसी के खिलाफ क्या कार्यवाही की गअी अिसकी अित्तला अुस कंपलेंट करने वाले को नहीं मिलती । अुस-आदमी को नौकरी पर से निकाल भी दिया तो अुस दरखास्त देनेवाले को मालूम नहीं होता कि यदि डिपार्टमेंटल अिनक्वायरी किसी बात में होकर कुछ शिकायत साबित हुअी और अुस अफसर का तबादला अुसी कारण दूसरी जगह किया गया तो अुस कंपलेंट करनेवालें को कुछ मालूम नहीं होता । अफसर भी वह बात छिपाकर रखता है और यदि किसी ने पूछा कि आपका तबादला कैसे हुवा तो कहता है कि यह तो रूटिन मॅटर (Routine matter) है, तबादला होना चाहिअे था अिस लिये हुवा । यदि अैसे अफसरों को क्या सजा दी जाती है यहअगर अव्वाम को मालूम हो तो अुसका असर अव्वाम में अच्छा होता है और वे समझते है कि हम शिकायत करते हैं तो अुसपर मुनासिब अॅक्शन लिया जाता है, और जिसके खिलाफ अॅक्शन लिया जाता है अुसे भी अेक तरह का अव्वाम का डर रहता है और अुसपर अेक तरह का मॉरल चेक (Moral check) रहता है ।

अब पुलिस ट्रेनिंग के बारे में मै कुछ कहना चाहता हूं । आज पुलिस के ट्रेनिंग का जो मेयार है अुसे बढाने की जरूरत है । खास कर जब हमारे यहां जमहूरी हुकूमत आअी है तो जमहूरित में पुलिस को कैसा बर्ताव रखना चाहिये अिसके लिये अुन्हें खास ट्रेनिंग की जरूरत है और दूसरे डिसिप्लिन (Discipline) की ट्रेनिंग भी हमारे यहां देने की जरूरत है । जिस तरह बांबे में पुलिस को नअी ट्रेनिंग देने के लिये और अुनकी अेफीशियनसी बढाने के लिये काफी कोशिश की जाती है वैसे हमारे यहां भी होनी चाहिये । बांबे में वहां के पुलिस अफसरों को खास ट्रेनिंग के लिये स्कॉटलॅंड यार्ड में भेजा जाता है और वहां के अफसरों को भी यहां बुलाकर अुनसे ट्रेनिंग दिलवाने का अितेजाम किया जाता है । अिस तरह का तरीका हमारे यहां अभी तक नहीं है । यह तरीका हमारे यहां भी शुरू करना चाहिये, जिससे पुलिस की अेफिशियन्सी बढेगी ।

मेरा सुझाव है कि अिसके लिये अेक ऑल पार्टी कॉनफरन्स (Conference) बुलाअी जानी चाहिये ताकि सब लोग अेक जगह बैठकर हमारे पुलिस डिपार्टमें मे अेफिशियन्सी बढाने के लिये क्या किया जाना चाहिये अिसके बारें में सोच सकें आज हमारे अफसर डी. सी. और डी. अेस. पि. की जो रिपोर्ट आया करती है अुस पर डिपेंड (Depend) रहते हैं लेकिन

यह तरीका ठीक नही है। आप को कुछ अैसी मशिनरी तयार करनी चाहिये कि अिन अफसरों के अलावा वहां के मुकामी लोगों के पास से ही आपके पास रिपोर्टस आते रहने चाहियें। अेक हि रिपोर्ट पर आप को डिपेंड रहना नही चाहिये। अिस तरह किया जाय तो आप सही मालूमात हासिल नही कर सकेंगे। करपशन के लिये गव्हनमेंट ही जिम्मेदार है अैसा तो म नहीं कहता हूं, गव्हर्नमेंट के साथ साथ अिस हाअुस में जो मेंबर बैठते हैं वह भी करपशन के लिये जिम्मेदार हैं। अिस लिये दोनों को मिलकर अिस करपशन को रोकने की कोशिश करनी चाहिये।

مسٹر ڈپٹی اسپیکر - ڈسکشن چھ بجے تک جاری رهیگا اسکے بعد چھ بجے سے منسٹر صاحب متعلقه جوابی تقریر کرینگے -

شری کے - وینکٹ رام راؤ (چنا کونڈور) - منسٹر صاحب کیلئے ایک گھنٹه کافی هے -

مسٹر ڈپٹی اسپیکر - وہ کم از کم دیڑھ گھنٹه چاهتے هیں اور ووٹنگ (Voting) کیلئے آدھے گھنٹه کی ضرورت هوگی اسلئے چھ بجے ڈسکشن ختم هونا چاهئیے -

منسٹر فار هوم ، لا اینڈ ری هیابیلیٹیشن (شری دگمبر راؤ بندو) - میں سمجھتا هوں که ووٹنگ اور جوابی اسپیچ (Speech) کیلئے دو گھنٹه کی ضرورت هوگی -

مسٹر ڈپٹی اسپیکر - اس لحاظ سے چھ بجے ڈسکشن ختم کرنا هوگا - آنریبل ممبرس پانچ پانچ منٹ میں اپنے خیالات کا اظهار کریں تو سب کو اظهار خیال کا موقع ملیگا -

Shri G. Sreeramulu: Persons who have given cut-omtions should be allowed to speak, whether for one minute or five minutes. There should be democratisation.

شری بی - ڈی - دیشمکھ (بھوکردن - عام) - اگر آج ساڑھے آٹھ بجے تک بیٹھیں تو اچھا هوگا -

مسٹر ڈپٹی اسپیکر - نهیں - چھ بجے تک ڈسکشن هوگا اور دو گھنٹے جوابی تقریر اور ووٹنگ کیلئے کافی هونگے -

شری بی - ڈی - دیشمکھ - مسٹر اسپیکر سر - ڈیمانڈ نمبر ۱۸ کے بارے میں جو کٹ موشن میں نے پیش کیا هے اوس بارے میں زیادہ گهرائیوں میں نه جاتے هوئے میں صرف ڈیمانڈ نمبر ۱۸ کے بارے میں اپنے خیالات کا اظهار کرونگا - اڈمنسٹریشن آف جسٹس (Administration of Justice) کے بارے میں مجھے یه کهنا هے که اس جمهوری دور میں عدالتوں کے بارے میں حکومت کا یه نظریه رهے تو مناسب نهیں هے - کئی لوگوں نے اسبارے میں اظهار خیال کیا هے که عوام کیلئے انصاف زیادہ سے زیادہ سستا هونا چاهئے بلکه اگر هوسکے تو عوام کیلئے انصاف مفت هونا چاهئے - هم دیکھتے هیں که اس جمهوری دور میں عدالتوں کے بارے میں جو تبدیلی لائی جانی چاهئے وہ نظر نهیں آرهی هے - رسوم عدالت و طلبانه میں کافی اضافه کیا گیا هے - حیدرآباد میں

پہلے ٦ فیصد رسوم عدالت لیا جاتا تھا۔ سنہ ١٩٥٤ع سے رسوم عدالت میں دو گونہ اضافہ ہوگیا ہے ۔ ملک کے جو غریب طبقات ہیں اونکو انصاف کے حاصل کرنے میں اس کی وجہ سے دشواری ہورہی ہے ۔ اور انکے لئے انصاف مہنگا ہوگیا ہے ۔ وہ رسوم عدالت اس قدر زیادہ مقدار میں داخل نہیں کرسکتے اسلئے انصاف سے محروم ہونا پڑتا ہے ۔

یہ ایسے مسائل ہیں کہ اسطرف حکومت کو توجہ کرنی چاہئے ۔ میں جوانان طلبانہ کے متعلق عرض کرونگا کہ ایک طرف تو حکومت حقیقت پسندی اور انصاف پسندی کا دعوی کرتی ہے اور دوسری طرف عدم مساوات کا یہ حال ہے ۔ جوانان طلبانہ کا مسئلہ جبکہ سابقہ حکومت کے پیش نظر رہا ایسی صورت میں آج کی وزارت اسکو اپنی نظر سے کیسے اوجھل کرسکتی ہے ۔ کریمنگر کے جوانان طلبانہ نے ١٩ ۔ جولائی کو ایک درخواست دی تھی ۔ جوانان طلبانہ ایسے لوگ ہوتے ہیں جن ہر عدالت کی کارکردگی کا دارو مدار ہوتا ہے ۔ مقدمات کے دوران کو کم کرنے میں انکی کارگزاری کو زیادہ دخل ہوتا ہے اگر انکے گریونسس (Grievances)کو نظر انداز کیا جائے تو اس سے عدالتی نظام متاثر ہوگا ۔ اور اس سے بدنامی کا اندیشہ ہے کہ یہ گورنمنٹ ایسی ہے کہ جو لوگ بیس بیس میل دیہاتوں میں جاتے ہیں اور جنکو سفر کی مصیبتیں برداشت کرنا پڑتا ہے اور جو مقدمات کے بعجلت تصفیہ میں مدد دیتے ہیں انکو وہ مراعات بھی نہیں دئے جاتے جو مستقل ملازمین کو دئے جاتے ہیں ۔ کئی مرتبہ یہ مسئلہ ھائیکورٹ کے زیر غور رہا ہے ۔ ہمارے سابق چیف جسٹس شری رامچندر نائک نے بھی وعدہ کیا تھا کہ وہ اس مسئلہ پر سنجیدگی کے ساتھ غور کرینگے اور انکو دوسرے ہم مرتبہ ملازمین کے مسائل یعنی پے ٹی ۔ اے اور ڈی ۔ اے ۔ ڈریس ۔ چھتریاں بیاج وغیرہ دئے جائینگے لیکن افسوس کہ عدالت کی جانب سے انصاف کا دعوی تو کیا جاتا ہے لیکن ان بیچاروں کے معاملہ میں کوئی توجہ نہیں کیگئی اور اس قسم کی ناانصافی ہورہی ہے ۔ مجھے امید ہے کہ اسبارے میں ضرور کوئی ایسا اقدام کیا جائیگا جو اس دیرینہ شکایت کو رفع کرسکے ۔

نقل نویسان ۔ نقل نویسوں کی عدالتوں میں کیا حالت ہے انکو ماہانہ ١٠ یا ١٥ روپیہ اجرت ملتی ہے ۔ ھائیکورٹ نے متعدد گشتیات جاری کئے کہ نقل نویسوں کی تعداد ١٠-١٥ سے زیادہ نہ ہونی چاہئے ۔ لیکن آج عدالتوں میں دو ہزار سے زیادہ نقل نویس ہیں جو مصیبت میں مبتلا ہیں ۔ اگر آپ انکی تعداد کو کم کرنا چاہتے ہیں ۔ انکو ریگولرائیز (Regularise) کرنا چاہتے ہیں اور اون سے زیادہ کام لینا چاہتے ہیں تو ضرور لیجئے لیکن انکو ایک ملازم کی حیثیت سے زندہ رہنے کیلئے جو معمولی پے (Pay) دیجانی چاہئے وہ تو دیجئے ۔ میرا خیال یہ ہے کہ انکا معیار تنخواہ ایک میٹر کیولیٹ کلرک سے کم نہونا چاہئے ۔ اور وہ جملہ مراعات جو دوسرے اہلکاروں کو دئے جاتے ہیں انہیں بھی دئے جانے چاہئیں ۔ ٥٠ تا ١٢٠ کا تھرڈ گریڈ انہیں دیا جانا چاہئے ۔

دوسری چیز لینگویجس (Languages) کے بارے میں میں عرض کرونگا کہ حال میں جو اعلان کیا گیا ہے وہ لائق ستائش ہے ۔ یہ کوئی نئی بات نہیں ہے ۔ بمبئی

اور سی - پی - اسٹیٹس میں یہ عملدرآمد پہلے سے چلا آرہا ہے - ہمارے ہاں عوامی حکومت آنے کے بعد تین سال گزرنے پر آج یہ اعلان کیا گیا ہے تو کوئی تعجب کی بات نہیں ہے - یہ تو بہت پہلے ہی ہوجانا چاہئے تھا - خیر میں اسکا خیرمقدم کرتا ہوں - عدالتی نظام کی حد تک دیہاتوں میں ولیج یونٹ (Village unit) بناکر یا تعلقہ بندی کے ذریعہ جو زبان وہاں رائج ہے اسکو رائج کیا جاسکتا ہے دونوں زبانیں رائج کرنے میں عدالتوں کو دشواری ہوگی - اسلئے ڈسٹریبیوشن آف تعلقاز آن لنگوسٹک بیسس (Distribution of Taluqs on linguistic Basis) عدالتی کام کے تعلق سے کیا جائے تو آسانی ہوگی - یہ کام مشکل نہ ہوگا -

تیسری چیز میں ہاؤس کےسامنے یہ رکھنا چاہتا ہوں کہ عدالت میں گشتی نسان ۳/۴ جاری ہے اور حال میں متعدد گشتیات اجراء کیگئی ہیں - لیکن افسوس کا مقام ہے کہ خود ہائیکورٹ میں کئی مقدمات ملتویات میں پڑے ہوئے ہیں - ہزاروں مثلیں تصفیہ طلب ہیں - سات سات سال کے مقدمات زیر دوران ہیں جو فیصل نہیں ہوے ہیں - چیف جسٹس اپنے ماتحت عہدہداروں کے کام کی نگرانی کرتے ہیں اور انہیں ہدایت کرتے ہیں کہ مقدمات ملتوی نہ رہیں - زیادہ عرصے تک مقدمے کا دوران نہ بڑھنے پائے لیکن خود ہائیکورٹ کی یہ حالت ہے کہ ہزاروں مقدمات زیر دوران ہیں - یہاں کوئی توجہ نہیں کیجاتی - پولس کے بارے میں بہت کچھ کہا گیا ہے لیکن میں صرف اتنا کہونگا کہ پولس کے اڈمنسٹریشن میں ایسی بنیادی تبدیلیوں کی ضرورت ہے جس سے افیشینسی (Efficiency) میں اضافہ ہو اور بجٹ میں دس فیصد کمی ہوسکے - اسبارے میں ایک سجیشن ایک آنریبل ممبر نے رکھا تھا کہ آئی - جی - پی کی جواسپیشل برانچ ہے اسکو ختم کردینا چاہئے اور تین برانچس کی بجائے دو رکھکر کام لیا جاسکتا ہے - پولس ٹریننگ اسکول بیدر اور عنبر پیٹھ لائینس کے بارے میں بھی ہم غور کرسکتے ہیں کہ انکو کسطرح ری آرگنائیز (Reorganise) کرنا چاہئے - ۱۰ ٹمپرری کلرکس آئی - جی - پی کے دفتر میں رکھے گئے ہیں انکی ضرورت نہیں ہے - اور اس طرح آڈٹ پارٹی کو بھی ختم کرنا چاہئے - سٹی پولس کے بارے میں بھی سوچا جاسکتا ہے کہ اسکو ڈسٹرکٹ پولس سے ملا کر کسطرح ری آرگنائیز کیا جاسکتا ہے - ایچ - ایس - آر - پی کی پولس میں تخفیف کے ذریعہ ہمارے مالیہ میں کمی ہوسکتی ہے - تین بٹالینس (Battalions) کو گھٹا کر دو کو ایک جا کیا جاسکتا ہے - اگر اسطرح کیا جائے تو بہتر ہوگا اور حیدرآباد و سکندرآباد کی پولس کو ملا کر ری آرگنائیز کیا جاسکتا ہے تو ایسا کیا جانا چاہئے - اور ایک چیز مجھے یہ کہنا ہے کہ ٹرانسپورٹ کا اسپیشل سکشن (Special Section) جو ہے اسبارے میں بھی حکومت کو توجہ کرنی چاہئے میں سمجھتا ہوں کہ وقت کے لحاظ سے مجھے تفصیلات میں جانے کا موقع نہیں ہے - آر - ٹی - ڈی کے بارےمیں میں اپنے خیالات مختصراً ہاؤس کے سامنے رکھتا ہوں - کہا جاتا ہے کہ آر - ٹی - ڈی کی جانب سے شلٹرس (Shelters) بنائے جارہے ہیں - لیکن جو مراعات آر - ٹی - ڈی کی جانب سے حیدرآباد سٹی میں رکھے گئے ہیں وہ تعلقات میں نہیں ہیں - مجھے

حیرت ہوتی ہے جب یہ کہا جاتا ہے کہ مراعات دئے جا رہے ہیں سکندرآباد اسٹیشن پر میں نے دیکھا ہے کہ جو بسس رات میں نائٹ اوٹ (Night out) پر جاتے ہیں انکے ڈرائیورس اور کنڈکٹرس بسس ہی میں سوتے ہیں - ایسے ۲۰-۲۵ لوگ سورہے تھے- آنریبل ممبرس چاہیں توجا کر دیکھ سکتے ہیں- ان لوگوں کو سردی گرمی کا اسیطرح مقابلہ کرنا پڑتا ہے - پورے اضلاع میں نائٹ اوٹ پرجانے والوں کے لئے کوئی انتظام نہیں ہے - محض بجٹ میں توانکے لئے مراعات کیلئے رقم رکھی جاتی ہے- لیکن وہ تجاویز عمل میں نہیں آتیں- آنریبل ممبرس ڈسٹرکٹ کے اوقات سے اچھی طرح واقف ہیں- آنریبل ممبرس کومعلوم ہے کہ پاسنجرس کیلئے بھی کوئی اسٹانڈ نہیں بنائے جاتے- انکے لئے کوئی شلٹر نہیں ہے میں اپنی اورنگ آباد سٹی کا ذکر کرتا ہوں - وہاں پاسنجرس کیلئے کوئی شلٹر نہیں ہے - نہ لیٹرن ہے نہ کوئی اور سہولت - پاسنجرس کو کہیں ایک منٹ ٹکنے کی گنجائش نہیں ہے- جس طرح عربستان میں قافلہ ریت اور دھوپ میں ٹھیرتا ہے-اس طرح پاسنجرس کو دھوپ اور پانی میں ٹھیرنا پڑتا ہے- کہیں کوئی جھاڑ کا سایہ ملجاتا ہے- تعلقوں میں کوئی شلٹرس نہیں بنائے گئے ہیں- بسوں پر ہیوی رش (Heavy rush) رہتا ہے لیکن اسکا کوئی بندوبست نہیں کیا جاتا- میں کہوں گا کہ جس طرح ریلوے کے بارے میں سنٹرل اڈوائیزری کمیٹی ہے آر-ٹی - ڈی -کے بارے میں بھی عوام کی مشکلات کو حل کرنے کےلئے ایک مرکزی اڈوائیزری کمیٹی بنائی جائے- اور اس کے لئے عوام کا تعاون حاصل ہو - ان چند خیالات کے ساتھ میں اپنی تقریر ختم کرتا ہوں -

مسٹر ڈپٹی اسپیکر - اس سے پیشتر کہ دوسری تقریر شروع ہو میں یہ واضح کرنا چاہتا ہوں کہ ہمارے پاس صرف ڈیڑھ گھنٹہ ہے - اور ۱۵-۲۰ آنریبل ممبرس تقریر کرنا چاہتے ہیں- میرا یہ سجیشن ہے کہ آئندہ ہر ممبر کو ۵-۵ منٹ دئے جائیں- اس سے کچھ زیادہ ممبرس کو موقع ملسکیگا- اگر سب ممبرس اس سے متفق ہوں تو اس طریقہ کو اڈاپٹ (Adopt) کیا جائے گا -

شری جی- سری راملو- آئندہ ڈیمانڈ سے اس طرح کا عمل کیا جا سکتا ہے -

مسٹر ڈپٹی اسپیکر- بہرحال ممبرس کم سے کم وقت لیں-

* شری جی - سری راملو- مسٹر اسپیکر سر- پولیس کے ڈیمانڈ پر میرا کٹ موشن ہے اور آنریبل ہوم منسٹر کے ڈیمانڈس سب سے زیادہ رقم کے ڈیمانڈس کے لحاظ سے دوسرے درجہ پر ہیں - ان کا ڈیمانڈ ۷ کروڑ ۱۹ لاکھ کا ہے - ان کے ڈیمانڈس کے ہیڈس (Heads) بھی امپارٹنٹ ہیں- اور اس کا تعلق دیش کے حالات کو سدھارنے اور حکومت کے رویہ کے بارے میں ہے - اس لحاظ سے یہ اہم مسائل ہیں - اور ان کے بارے میں ضروری باتوں کو کانگریسی حکومت کے علم میں لانا ضروری ہوجاتا ہے - میرا کٹ موشن الکشن کے مد پر ہے - اس پر میں اپنے خیالات کا اظہار کروں گا -

گذشتہ سال بائی الکشن پر ۲۷ - ہزار کا خرچہ بتا یا گیا ہے اور اس سال بھی اس کے لئے ۲۵ ہزار روپئے رکھے گئے ہیں - مجھے نہیں معلوم کہ کونسی جگہ خالی

ھوگی اور وھاں پر الکشن لڑنے کی نوبت آئیگی - اگر کانگریس پارٹی اکانمی کو ملحوظ رکھتے ھوے پہلے ھی دور اندیشی سے کام لے اور پہلے ھی سے نوجوانوں کا انتخاب کرے تو اس کی نوبت ھی نہیں آتی - اور ٹریزری پر اس کا بار نہیں پڑتا میں ایشور سے یہ پرار تھنا کروں گا کہ اس کی نوبت ھی نہ آنا چاھیئے -

اس سلسلے میں یونین سے قابل واپسی رقم دولاکھ ساڑے چہتر ھزار روپئے بتلائی گئی ھے - یہ کونسے مد کی بابتہ ھے اور کب سے قابل واپسی ھے آنریبل ھوم منسٹر اس کا جواب دیں -

کنٹریبیوشن ٹو میونسپالٹیز (Contribution to Municipalities) کے لئے تقریباً (۲۰۵۷ ۲) روپئے ھوتے ھیں - ممکن ھے یہ الکٹورل رولس کی تیاری کے بارے میں ھوں - مجھے صحیح پتہ نہیں ملا - اس کی بھی وضاحت ھونی چاھیئے - ٹاؤن کمیٹیز وغیرہ کے لئے جو الکٹورل رول تیار ھوتے ھیں یا جو دیگر اخراجات ھوتے ھیں اگر وہ واپس دئے گئے ھیں تو الکشن کے مد میں کوئی ایٹم مل سکتا ھے - میں اس کی وضاحت چاھتا ھوں - جہاں کہیں بھی الکشن ھوے ھیں ان میں رولنگ پارٹی کا رویہ ایسا رھا کہ اس سے آئندہ آنے والوں کے لئے رولنگ پارٹی نے بری مثال قائم کی ھے - وھاں ان دنوں منسٹرس خواہ مخواہ دورہ نکال کر پہنچ جاتے ھیں - اور وھاں اپنے اثرات - حکومت کی مشینری - کلکٹر - ڈپٹی کلکٹر - پولیس - پٹیل اور موٹر یہ سب استعمال کئے جاتے ھیں - رولنگ پارٹی کے لئے یہ عمل نازیبا اور ناموزوں ھے - ھم امید کرتے ھیں کہ آئندہ الکشن میں رولنگ پارٹی اس امر کو ملحوظ رکھیگی کہ وھاں منسٹرس نہ جائیں - اور اگر جائیں تو اپنی موٹر کار اور جھنڈا چھوڑ کر ایک آرگنائیزر کی طرح جیسے کہ وہ پہلے تھے ویسے ھی جانا چاھیئے - چیف منسٹر نے کہا ھے کہ

"A Minister is 24 hours a Minister"

میں مانتا ھوں - لیکن انہیں عوام کے سامنے اپنی غیر جانبداری کی مثال چھوڑ جانا چاھیئے - میں نہیں سمجھتا کہ ھمارے منسٹرس جو ایسے سجیشنس سنکر اثر نہ لینے کے عادی ھوچکے ھیں وہ ان باتوں کا بھی خیال کرسکتے ھیں - لیکن پھر بھی میری پرارتھنا ھے کہ الکشنس کے زمانے میں وہ الکشنس کے مقاموں پر سرٹیفیکیٹس تقسیم کرنے پریڈ دیکھنے یا زراعت وغیرہ کا انسپکشن کرنے یا گوداموں کا معائنہ کرنے یا اسی قسم کے کام نکال کر وھاں نہ پہنچ جائیں - وھاں اس طرح پہنچ جاتے ھیں اور جب ان کی آؤبھگت کے لئے عوام جمع ھوتے ھیں یا ان کے پاس کوئی ریپرزنٹیشن آتا ھے تو برسر موقع انہیں فوراً پبلک میٹنگ میں تبدیل کرلیا جاتا ھے - وھاں سے منسٹر کی پوزیشن چینج ھوجاتی ھے اور وہ تحصیل کچہری کے سامنے تقریر شروع کردیتے ھیں - وھاں اس طرح کام نکالے جاتے ھیں - سیٹ سینڈھیوں کو بلایا جاتا ھے اور پبلک میٹنگ کی جاتی ھے - یہ ھیں آپ کے کرتوت - یہ کام ھوگا تو اس کا لازمی نتیجہ یہ ھوگا کہ عوام اس سے متاثر ھوں گے - میں کہوں گا کہ اس سے وھاں موٹروں میں جا کر اثر استعمال کرنے سے کوئی تبدیلی ھونے

والی نہیں ہے - عوام کی بھلائی کے لئے کچھ کیجئیے - الکشن کے بارے میں میں آج ہی کا واقعہ بتلاتا ہوں - آج لینڈ امپرومنٹ بورڈ کے انتخاب کے سلسلے میں مجھے آنے میں دیر ہوگئی اور میں صرف آدھا منٹ پہلے یہاں آسکا - اس کے برخلاف رولنگ پارٹی کے ممبرس کو لینے کے لئے جیپ کار - میں نمبر کوٹ کرسکتا ہوں - ایم ایل ایز کوارٹرس سے انہیں جمع کرکے لایا گیا - رولنگ پارٹی عوام کے پیسے کا مصرف اس طرح کرتی ہے - لیکن عوام کا پیسہ اس طرح خرچ نہیں کیا جاسکتا - آج آپ کے ہاتھ میں اقتدار ہے اس لئے آپ اسے اس طرح استعمال کررہے ہیں - جھنڈے کو باندھ کر نہیں رکھے جیسا کرکے سوتوں کو جگا کر ان کے دروازے کھٹکھٹا کر ووٹ دینے کے لئے لایا جاتا ہے - اس پر میں سخت احتجاج کرتا ہوں - اسی لئے میں کہتا ہوں کہ حکومت کی مشنری کا اثر اس قسم کے کاموں سے ہونے والا نہیں ہے - یہ گاندھی جی کا نام لینے والوں پر دھبہ ہے - دور دراز مقامات پر رہنے والوں کو بھی یہ سہولت دیجئیے اس سے ظاہر ہوتا ہے کہ الکشنس میں رولنگ پارٹی کا رویہ کیا رہتا ہے - اس طرح کے عمل سے الکشن کا مطلب ہی فوت ہوجاتا ہے - اور آپ پر طرفداری کے کلنک کا جو ٹیکہ لگ چکا ہے وہ ہمیشہ کے لئے رہیگا - میں امید کرتا ہوں کہ آنریبل ہوم منسٹر جو ان واقعات سے اچھی طرح واقف ہیں - اس بارے میں اقدامات کریں گے -

مجھے پولس کے بارے میں یہ کہنا ہے کہ

The police should be the custodians of the honour, life and property of the people.

مگر پولس جس گاؤں میں جاتی ہے تو وہاں لوگ یہ سمجھتے ہیں کہ بلا نازل ہوگئی - خطرہ آگیا - ان لوگوں کو ۲۵ - روپیئے تنخواہ دیجاتی ہے - الونسس ملا کر جملہ ۴۰ روپیئے دئے جاتے ہیں - وہ ایسی حرکت کرنے پر مجبور ہو جاتے ہیں جس سے ان کا پیٹ بھرے - اس لئے جو لوگ بڑی بڑی تنخواہیں پارہے ہیں ان کی تنخواہیں کم کرکے چھوٹی تنخواہیں پانے والوں کی تنخواہ کو بڑھانا چاہیئے - لیکن رولنگ پارٹی تو اس پر سوچنے کے لئے تیار ہی نہیں ہے - ان لوگوں کی معاشی حالت اس قدر پست ہے - انہیں کوئی خاص ٹریننگ نہیں دیجاتی - اسطرح انہیں رکروٹ کرنے سے کوئی کام ہونے والا نہیں ہے - وہ موضع میں پہنچتے ہیں تو پہلے پیٹ بھرنے کے لئے مرغی مانگتے ہیں ساہوکار سے اچار - املی بغیر پیسے دئے حاصل کرلیتے ہیں - بیٹی چاکری تو اب تک چل رہی ہے - ان کے خلاف رپورٹ کرتے ہیں تو کہا جاتا ہے کہ کچھ نہیں ہوسکتا - اوپر کے آفیسر کے پاس شکایت کی جاتی ہے تو ان کا یہ رویہ رہتا ہے کہ وہ اپنے ماتحت کو بچا لینا چاہتے ہیں اگر کوئی شکایت کرتا ہے تو کہا جاتا ہے :-

"I welcome your complaints and shall see that something is done in the matter."

ایسا کہنے والے کئی آفیسرس ہیں - آنریبل ہوم منسٹر اس پر توجہ کریں - آنریبل ہوم منسٹر کی ہمدردی کی وجہ سے انہوں نے کچھ کیسس کی انکوائیری

کا آرڈر دیا جس کی وجہ سے ۴ - ۵ لوگ میرے تعلقہ میں دشمن ہوگئے ہیں - میں یہ نہیں کہہ سکتا کہ ہر تعلقہ میں ایسا ہوتا ہے لیکن اس کے باوجود اس بارے میں (Fact-finding committees) ڈسٹرکٹس میں ہونا چاہیئے جو لوگ شکایتیں کرتے ہیں - راز میں رپورٹ کرتے ہیں تو انکوائیری کے لئیے کیس اسی کے پاس جاتا ہے جس کے خلاف شکایت کی گئی ہے - اس کے فیکٹس انڈیکیشن کے لئیے نان آفیشیلس کا کمیشن رکھا جائے تو بہت اچھا ہوگا - ان کو ٹی - اے وغیرہ دینا چاہیئے تاکہ وہ وہاں جاکر کام کرسکیں - آج پورے ہاؤس کے مباحث کا اقتباس یہی ہے کہ پولس برابر وہی کام کرتے جا رہی ہے جس کے خلاف عوام کو شکایت ہے - اس سے صاف ظاہر ہوتا ہے کہ پولس کے رویہ میں کوئی تبدیلی نہیں ہوئی - اس نکتہ چینی سے بھی اس کے رویہ میں کوئی فرق نہیں ہوتا تو یہ باعث تعجب ہے -

श्रीमती आशाताअी वाघमारे (वैजापूर) :—अध्यक्ष महोदय, मी माननीय गृहमंत्र्यांचे लक्ष दोन तीन मुद्द्यांकडे वेघूं अिच्छिते. प्रथम महत्वाची गोष्ट अशी कीं रस्ता वाहतुकीसाठीं शहरांतून जी व्यवस्था आहे, ती सर्व जिल्ह्याच्या ठिकाणीं व्हावयास पाहिजे. कारण खेड्यातून चार पांच मैल चालत येअून लोकांना बस स्टँडवर झाडाखाली बसावे लागते. तसेच स्त्रियांनाहि झाडाखालीच बसावे लागते. जर त्या स्त्रीजवळ लहान मूल असले, आणि बस भरून आली तर, जेथे दूध मिळत नाहीं व पाणी मिळत नाहीं अशा ठिकाणी, त्या स्त्रीला अुन्हांत झाडाखालीं बसावे लागते. म्हणून बस स्टँडवर लोकांना बसण्यास व आश्रय घेण्यास जागा असणे अत्यंत महत्वाचे आहे. या कडे गृहमंत्री लक्ष देतील अशी मी अपेक्षा करते.

दुसरी महत्वाची गोष्ट म्हणजे अशी आहे, आणि ती मोठ्या दुःखाने सांगावी लागते, कीं पोलीस आमच्या संरक्षणासाठी असतात, पण जर कुंपणानेच शेत खाअून टाकले तर त्याला काय अुपाय ? अशी पोलीस संरक्षकांची गोष्ट आहे. मला असे म्हणावयाचे आहे कीं, आज तुमचे कुंपणच शेत खात आहे. या दोन वर्षाच्या काळांत पोलीस खात्यावरील खर्च निम्याने कमी झालेला आहे. आज पोलीसावरील खर्च तीन कोटी चोवीस लक्ष आहे. हा खर्च होणारच, कारण तो समाजाच्या संरक्षणासाठीं होत आहे, आणि पोलीस हे समाजाचे संरक्षक आहेत. पण ही गोष्ट पोलीसांना अद्याप शिकवली गेली नाहीं असें मोठ्या दुःखाने म्हणावे लागते. कोणत्याहि ठिकाणी मग ती अेखादी यात्रा असो किंवा अेखादा समारंभ असो, तेथे व्यवस्थेसाठीं पोलीस असतात. आमच्या येथे मुंबअी प्रांताप्रमाणें दारूबंदी नाहीं. तेव्हां पोलीस अशा प्रसंगी दारू पिअून अुभे असतात. मला मोठ्या खेदाने म्हणावे लागते कीं अशा ठिकाणी जेव्हां स्त्रिया येतात, तेव्हां त्यांची सभ्यतेची वागणूक नसते. कारण आपण त्या ठिकाणीं आलेल्या महिलांच्या संरक्षणासाठी आलो आहोत ही जाणीव पोलीस अधिकाऱ्यांना नसते. मी विधान सभेत बोलत आहे, तेव्हां त्यांच्या वागणुकी आणि वर्तनाचे वर्णन करणे योग्य होणार नाहीं. पण मला अेवढेच सांगावयाचे आहे कीं त्यांची वागणूक अत्यंत असभ्यतेची असते. याकडेहि गृहमंत्र्यांनी लक्ष द्यावे अशी माझी त्यांना आग्रहाची विनंती आहे.

तिसरी गोष्ट अशी आहे कीं, या वर्षी स्त्री पोलीसवर सरकारने खर्च केला आहे. हैदराबाद मध्यें ४० स्त्री पोलीस आहेत. पण त्या फक्त हैदराबाद आणि सिकंदराबादसाठीच आहेत. मला नम्रतेनें असे सुचवावयाचे आहे कीं प्रत्येक जिल्हयांच्या ठिकाणीं त्यांनी अेक महिला पोलीस सब-अिन्स्पेक्टर नियुक्त करावी. कारण स्त्रियांची चौकशी करताना पुरुष पोलीस फारच असभ्य पणाने वागतात. मी अेक जेल व्हिजीटर (Jail Visitor) असल्यामुळें मला माहित आहे. मी तेथील स्त्रीकैद्यांना विचारले, तेव्हां असे दिसून आले कीं अशा चौकशीमुळें त्या स्त्रिया अितक्या बिघडल्या आहेत कीं त्या आतां सुधारणें शक्य नाही. म्हणून जर त्यांची चौकशी करण्यासाठी स्त्रीपोलीस असल्या तर त्यांना जाणीव राहील की आपणहि अेक स्त्री आहो व त्या पुरुष पोलीसांअितका त्रास त्यांना देणार नाहीत. शिवाय स्त्रियांची चौकशी पुरुषाकडून होणे हे देखील योग्य नाही.

मुंबअी मद्रास आणि मध्यप्रदेश येथे ज्या प्रमाणांत स्त्रीपोलीसांवर खर्च केला जातो त्या प्रमाणांत आमच्या येथे केला जात नाही. म्हणून आमच्या येथे त्या खर्चात वाढ झाली पाहिजे. आम्ही या दोन वर्षात आमचे पोलीसांचे बजट अर्ध्यावर आणले आहे, पण पुढच्या वर्षी स्त्री पोलीसांवरचे बजट चौपटीनें वाढले पाहजे अशी मी अपेक्षा करते. ज्याज्या ठिकाणी पोलीस स्टेशन आहे तेथे अेक स्त्री पोलीस अधिकारी नेमला जाअील अशी आशा करून मी आपले भाषण दिलेल्या वेळांत संपविते.

* شری کے۔ وینکٹ رام راؤ۔ مسٹر اسپیکر سر۔ ہمارے سامنے آج عدالت کا بجٹ پیش ہے ۔ اگر اس بجٹ کو دیکھیں تو معلوم ہوتا ہے کہ تمام عدالتوں کا بجٹ حتی کہ ہائیکورٹ کے سلسلہ میں بھی اور دیگر عہدہ داروں کی تنخواہوں کے سلسہ میں بھی ہم دیکھتے ہیں کہ بجٹ میں زیادتی ہوتی جارہی ہے ۔ لیکن جہاں عدالت اور عوام کے تعلق سے نظر ڈالتے ہیں تو معلوم ہوتا ہے کہ گواہوں کے بھتوں میں کمی ہوتی جارہی ہے ۔ مجھے اس سلسلہ میں اعداد ایوان کے سامنے رکھنے کے لئے وقت نہیں ہے ۔ مختصراً آنریبل منسٹر سے یہ عرض کرنا ہے کہ عدالتوں کے اہم جز گواہ ہیں ۔ اور ان کے ناتے سے یہ طرزعمل ٹھیک نہیں ہے ۔ اس کو تبدیل کرنے کی ضرورت ہے ۔ میں اس پر اس قدر ہی کہتا ہوں ۔

اس کے بعد میں یہ عرض کروں گا کہ یہ کہاجاتا ہے کہ ''میان ایزمارٹل بٹ لیٹیگیشن ایز امارٹل'' (Man is mortal but litigation is immortal) یعنی مدعی اور مدعی علیہ مرجاتے ہیں لیکن مقدمہ نہیں مرتا ۔ یہ مقولہ آج بھی صادق آتا ہے ۔ منصفی سے لیکر ہائیکورٹ تک یہی حالت ہے ۔ ایک حد تک میں یہ ضرور مانتا ہوں کہ بقایا کام کو نکال دیا گیا ہے ۔ لیکن اب بھی بہت تیزی کے ساتھ اس سلسلہ میں قدم اٹھانے کی ضرورت ہے کیونکہ آج بھی سال ہا سال کے مقدمات پڑے ہوئے ہیں ۔ اس لئے اس پر توجہ کرنے کی سخت ضرورت ہے ۔

اسکے ساتھ ساتھ پبلک پراسیکیوٹرس (Public prosecutors) کے سلسلے میں مجھے یہ عرض کرنا ہے ۔ تمام اضلاع میں انکا تقرر عمل میں آیا ہے ۔ لیکن آپ کا طرزعمل ان کے ساتھ کیا ہے ۔ جس طرح رکشا میں بیٹھنے کے بعد چار آنے دے کر چلے جاتے ہیں اسیطرح کا عمل ان کے ساتھ بھی کیا جاتا ہے ۔ انکا تعلق کن سے ہے ۔

طبقه وکلاءسے ہے۔ انٹلکچویلس سے ہے پبلک پراسیکیوٹرس ایڈوکیٹ جنرل سےلیکر اضلاع کی عدالتوں میں تک کام کرتے ہیں ۔ لیکن ان کی زندگی تین تین سال کیلئے بڑھائی جاتی ہے۔تو سرویسس کے تعلق سے جو انسرٹنٹی خاصکر نیچے کی عدالتوں کے تعلق سے ہے وہ غور مکرر کے قابل ہے۔ ابھی ابھی مجھے یہ معلوم ہوا ہےکہ ایڈوکیٹ جنرل کے تحت جو پبلک پراسیکیوٹرس کام کرتے ہیں وہ ۱۲-۱۵ سال کا تجربہ رکھتے ہیں ۔ لیکن انکو نوٹس دیگئی ہے ۔ ان لوگوں کے بارے میں پولس ایکشن سے پہلے یہ اطمینان دلایا گیا تھا کہ انفارسلی ہی سہی یہ وثوق دلایا گیا تھا کہ ہوسکے تو انکو بنچ میں رکروٹ کیا جائےگا ۔ لیکن اس کے باوجود بھی یہ ان سرٹنٹی ویسی ہی قائم ہے۔ اور آج حیدرآباد میں خود جو شخص بارہ سال تک کام کرچکا ہےاسکو نوٹس دیجاتی ہے ۔ ایسا حکم عدالت کی جانب سے دیاجاتا ہے یا آنریبل منسٹر غوروخوض کے بعد دیتے ہیں مجھے علم نہیں ہے ۔ لیکن اس چیز کو میں پرزور طریقہ پر ایوان کے سامنے رکھنا چاہتا ہوں جن لوگوں کو بار کے اہم ممبر ہونے کی وجہ سے سرویس میں لیا گیا ہے ان کے ساتھ یہ برتاؤ قابل اعتراض ہے اور اس سلسلے میں حکومت کی پالیسی غور مکرر کی محتاج ہے ۔

اس کے بعد ایک معمولی چیز کورٹس (Courts) کے تعلق سے کہتا ہوں ۔ یہاں ہائیکورٹ کے اونچی اونچی عمارتیں موجود ہیں لیکن جو لٹیگنٹس آتے ہیں ان کے لئے کیا فسیلیٹیز ہیں۔ جسطرح نئے پل پر فٹ پاتھ ہے ویساہی فٹ پاتھ انکے لئے بھی ہے ۔ انکےلئے فسیلیٹیز کچھ بھی نہیں ہیں ۔ جب کورٹ فیس کےنام سےلیٹیگنٹس آپکے خزانے میں پیسہ جمع کرتے ہیں تو انکو فسیلیٹیز بھی ملنا چاہئے ۔

اسکے ساتھ ساتھ یس ۔ پی ۔ اوز۔ (S.P.Os.) کے سلسلے میں یہ کہنا ہےکہ وہ ایڈوکیٹ جنرل کےتحت نہیں ہوتے ۔ ایک خوددار آدمی پہلے تو یہ نہیں تسلیم کرتا کہ وہ ڈی ۔ یس ۔ پی کے تحت کام کرے ۔ ایسےلوگ جن کی وکالت اچھی نہیں چلتی وہ ۲۰۰ روپئے کیلئے یس ۔ پی ۔ اوز کے تحت کام کرتے ہیں ۔ لیکن انکے ساتھ ڈی ۔ یس ۔ پی کا کسقدر نازیبا سلوک ہوتا ہے کہنے کیلئے وقت نہیں ہے ۔ میں صرف اتنا ہی کہتا ہوں کہ جسطرح ڈی ۔ یس ۔ پی ہیڈکانسٹیبل کے ساتھ سلوک کرتے ہیں ویساہی انکےساتھ بھی سلوک کرتے ہیں۔ یہ ناقابل برداشت ہے ۔ اسلئے وہ چاہتے ہیں ایڈوکیٹ جنرل کے تحت ہی انکو رکھا جائے ۔ اور اس پر بھی یہ حالت ہےکہ تین تین سال کیلئے تقررات ہوتے ہیں ۔ تو میں یہ عرض کررہا تھاکہ پولس ڈپارٹمنٹ کےتحت انہیں رکھنے کی ضرورت نہیں ہے ۔ کیونکہ جب مستقل سرکاری ملازمین کی طرح ان پر آپ فرائض عائد کرتے ہیں توحکومت پر یہ لازم آجاتا ہےکہ انکو فسیلیٹیز بھی ویسی ہی ملنا چاہئے جیسی کہ دیگر ملازمین کو دی جاتی ہیں ۔

اس کے بعد میں پولیس کے طرز عمل اور رویہ سے متعلق کہتا ہوں ۔ اس کے متعلق ہم کو بولنے کی اور آپ کو سننے کی عادت ہوگئی ہے ۔ سوالات کے موقع پر بھی یہی کہا جاتا ہے یہ " بھی صحیح نہیں ہے ۔ یہ بھی صحیح نہیں ہے "۔ اس سلسلہ میں

بنیادی وجوہات پر غور کرنے کی ضرورت ہے - میں ۷۰ روپیئے پانے والے پولیس کانسٹیبل کو ذمہ‌دار نہیں گردانتا - لیکن حکومت کی جو پالیسی ہے اس پر توجہ دلانا چاہتا ہوں - عوام اور حکومت کے ناتے سے جو پالیسی ہے اس سلسلہ میں مجھے زیادہ تفصیلات بتلانے کی ضرورت نہیں ہے - میں اس بجٹ ہی کو لیتے ہوئے یہ کہوں گا کہ ہوم ڈپارٹمنٹ نے انٹی کمیونسٹ ورک کے لئیے ۲۰۰ تا ۳۰۰ کا ایک کلرک اور عملہ رکھا ہے - جو ڈیموکریٹک پارٹیز ہیں ان کے خلاف کام کرنے کے لئیے خاص طور پر ایک سکشن رکھنے کی کیا ضرورت ہے - کیا اس طریقہ سے ڈیموکریسی کے بیل بوٹے بڑھنے والے ہیں - کیا ان طریقوں سے ڈیموکریسی کی بیخ کنی نہیں ہوتی - اس کے علاوہ اضلاع میں کیا ہوتا ہے میں وہ بھی بتلانا چاہتا ہوں - وہاں معمولی خطوط بھی وقت پر نہیں ملتے - ہمیں ہمارے اخبارات تک نہیں ملتے - تو پھر یہ کس کا شکار ہوتے ہیں - یہ آپ کے پولیس ڈپارٹمنٹ میں سنسر کا شکار ہوتے ہیں - میں خود اپنا تجربہ بتلاتا ہوں کہ پولیس کے سنسر کا شکار ہو کر میرے خطوط مجھ تک نہیں پہنچتے - اپوزیشن کے ساتھ حکومت کی کیا پالیسی ہونی چاہیئے اس پر غور کیا جانا چاہیئے کیونکہ اپوزیشن پارٹیز کے ساتھ حکومت کی جو پالیسی ہوتی ہے وہی عوام کے ساتھ بھی ہوگی - آج حکومت کے جو وزراء ہیں ان کے آنکھ - کان اور ناک ہے - اخبارات میں یہ تمام چیزیں لائی جاتی ہیں لیکن پھر اپوزیشن پارٹیز کے سلسلہ میں دیہات میں جس قسم کی ذہنیت کا بیج بویا گیا ہے اسی کو میں اس کی جڑ بنیاد قرار دیتا ہوں کیونکہ حکومت کی اس پالیسی کی وجہ سے ہی پولیس پارٹی ایسی ہوگئی ہے - اور یہ رویہ اختیار کیا ہے - اس سلسلہ میں اس طرف کے بعض آنریبل ممبرس نے تقریریں فرمائیں اور یہ کہا کہ آپ یہ تو کہتے آئے ہیں اس کے بجائے کچھ کنسٹرکٹیو سجیشنس (Constructive Suggessions) دیجیئے - بہت سے کنسٹرکٹیو سجسیشنس ہیں بشرطیکہ سننے کے لئے کان ہوں - میں یہ کہوں گا کہ یہاں جو قانون بنایا جاتا ہے نمبرون (Number one) محکمہ جو اس کی خلاف ورزی کرتا ہے وہ پولیس ہے - اس پر توجہ کریں تو بہت سی شکایات خود بخود کم ہو جائینگی -

اس کے بعد میں یہ عرض کروں گا کہ ضابطہ فوجداری جس کو انگریزوں نے اپنی غیر مستحکم حکومت چلانے کے لئیے عوام پر لادنے کی کوشش کی وہ ویسا ہی قائم ہے - اگر آج کوئی حکومت کا ذمہ‌دار ہے تو سب سے پہلے چیف منسٹر - اس کے بعد کلکٹر اور اس کے بعد سب انسپکٹر کیونکہ انہیں اس قسم کے وسیع اختیارات ہوتے ہیں کہ وہ کیا نہیں کرسکتے - انہیں وسیع اختیارات ضابطہ فوجداری کے تحت دئے گئے ہیں - اسی کا نتیجہ ہے کہ وہ ان اختیارات کا مس یوز (Misuse) کرتے ہیں - اپوزیشن پارٹیز کو دبانے کی کوشش کی جاتی ہے لیکن ساتھ ساتھ اس کا رفلکشن (Reflection) عوام پر بھی پڑتا ہے - اور اشانتی (अशांती) میں جانے والے افراد اس سے اپنی جیب گرم کرنے کی کوشش کرتے ہیں - یہ تمام چیزیں اس کی جڑ بنیاد ہیں - اس طرح سے انہیں آج غیر معمولی اختیارات حاصل ہیں

جس شخص کو چاہے گرفتار کرسکتے ہیں۔ اور اس کے ساتھ جو چاہے کرسکتے ہیں۔ یہ اختیارات جو پولیس کو دئے گئے ہیں ان میں تبدیلی کی ضرورت ہے ۔ اس کے ساتھ ساتھ جب پولیس کی جانب سے کوئی مقدمہ دائر ہو اور وہ ناکام ہوجائے تو ان لوگوں کے خلاف ایکشن لینا چاہیئے جو اس قسم کے جھوٹے مقدمات پیش کرتے ہیں۔ پولیس کے حکامان کی یہ عادت ہوگئی ہے کہ جس کسی پر چاہیں مقدمہ دائر کردیں اور اس کو عدالت کی کشاکشی میں پھنسائیں۔ اس کے ساتھ ساتھ رولنگ پارٹی اور پولیس میں کیا تعلق ہے اس کو بھی میں ایوان کے ملاحظہ میں لانا چاہتا ہوں ۔ یہ روزمرہ کی عام شکایت ہے ۔ جہاں پولیس گڑبڑ کرتی ہے اس کے ساتھ ساتھ وہاں کانگرس والے بھی رہتے ہیں ۔ میں ہر کس و ناکس پر اس کا الزام عائد نہیں کرتا بلکہ بعض راکشیپ ہوتے ہیں اون کی حدتک میرا یہ کہنا ہے ۔ میں جنگاؤں کا ایک واقعہ ایوان کے ملاحظہ میں لانا چاہتا ہوں ۔ ایک پنچایت کمیٹی مقرر ہوئی تھی اور مشترکہ زراعت کر کے وہاں کے چنے کی پیداوار کو فروخت کیا اور اس رقم سے وہ لوگ ایک اسکول اور ایک دیول تعمیر کرتے ہیں وہاں اسکول بلڈنگ کے ساتھ ساتھ ایک مڈل اسکول کا قیام بھی عمل میں لایا گیا ۔ بد قسمتی سے وہاں کوئی کانگریسی ورکر نہیں ہے وہاں کا دیشمکھ کانگریس کا صدر ہے اور وہاں کا پروہت کانگریس کا سکرٹری ہے ۔ یہ دونوں مل کر پولیس میں شکایت کرتے ہیں کہ جس شخص نے یہ اسکول بنایا ہے وہ بدمعاش ہے ۔ اس کے بعد آپ کے (۱۰۱) اور (۱۱۰) پرونٹیو سکشنس اس کے لئے ناگ سانپ بن کر آتے ہیں ۔ اس کو مقدمہ کی کشاکشی میں مبتلا کرتے ہیں۔ ایک دفعہ مقدمہ خارج ہوجاتا ہے تو مکرر مقدمہ دائر کرتے ہیں۔ ہوتا یہ ہے کہ پولیس سب انسپکٹر جو ہوتے ہیں وہ اوپر کے طبقہ سے ہی تعلق رکھتے ہیں۔ دیشمکھوں اور پٹیل پٹواریوں اور فیوڈل سکشن ان کے روٹس رہتے ہیں ۔ اگر ان کے پاس گاؤں کا کوئی بھی بڑا آدمی اگر کچھ شکایت کرتا ہے تو اس کے لئے ان کے دل میں ہمدردی کی لہریں موجیں مارتی ہیں۔ عوام کی شکایت وہ لوگ نہیں سنتے ۔ کس بھونڈے اور غلط طریقہ پر آپ کے پرونٹیو سکشنس استعمال ہورہے ہیں اس کی میں نے ایک مثال آپ کے سامنے پیش کی ۔ صرف اسکول کی تعمیر کرنے کے سلسلہ میں اس پر (۱۱۰) کے تحت مقدمہ چلایا جاتا ہے ۔ میں پوری ذمہ داری سے کہتا ہوں پرچہ وغیرہ منگا کر آنریبل منسٹر دیکھ سکتے ہیں ۔ اس طریقہ سے خود عدالتوں کو بھی متاثر کیا جاتا ہے ۔ اگر (۱۱۰) کے تحت کوئی مقدمہ خارج ہوجاتا ہے تو پھر اس کے بعد پولیس انسپکٹر کانگریس کے پریسیڈنٹ سے لیکر منصفی تک سب لوگوں کو متاثر کرتا ہے ۔ در اصل وہاں کے نام نہاد کانگریسی یہ چاہتے تھے کہ چنے کی پیداوار ہڑپ کرلی جائے ۔ پی ۔ ڈی ۔ یف والے یہ چاہتے تھے کہ اس پیداوار کا نصف نکال کر اسکول کی تعمیر میں خرچ کیا جائے ۔ کانگریس کے پرپوزل کی پولس تائید کرتی ہے اور اس کے ساتھ ساتھ عدالتوں کو بھی متاثر کیا جاتا ہے ۔ اس سلسلہ میں مرافعہ بھی کیا گیا ہے ۔ لیکن میں یہ عرض کروں گا کہ جہاں کہیں پرونٹیو سکشنس کا اس طرح بیجا استعمال ہوتا

ہے وہاں پولس کے عہدہداروں کو اس کا ذمہدار گردانانا چاہیئے تاکہ اس طرح کے غیر ذمہدارانہ حرکات عمل میں نہ آسکیں۔ اور اس کا انسداد ہو۔

شری بسن گوڑہ (لنگسگور) ۔ مسٹر اسپیکر سر۔ پولیس ڈپارٹمنٹ کے بجٹ پر میرا ایک کانسٹی ٹیوشنل آبجکشن ہے۔ اڈمنسٹریشن آف جسٹس کے مد میں دس لاکھ سات ہزار روپیہ جو بتائے گئے ہیں میں سمجھتا ہوں کہ وہ پورے ہائی کورٹ کے بنائے گئے ہیں۔ حالانکہ (۲-۲-۱ے) میں صرف ہائی کورٹ کے ججس کی سیلیریز اور ان کے الاؤنسس کے بارے میں چارجڈ (Charged) ہے۔ لیکن پورے ہائی کورٹ کے اکسپنڈیچر کی ووٹنگ اس میں نہیں آتی ۔ کیونکہ یہاں ہم ڈسکشن کرسکتے ہیں اور اسٹیبلشمنٹ پر ووٹ نہیں دے سکتے ۔ اس کا یہ مطلب ہوسکتا ہے ۔ مگر کانسٹی ٹیوشن کے لحاظ سے میں سمجھتا ہوں کہ ہائی کورٹ کے ججس کی سیلری اور ان کے الاؤنسس کے بارے میں چارجڈ اکاؤنٹ ہوسکتا ہے ۔ مگر دوسرے اکسپینڈیچر بھی اس میں آتے ہیں۔ اس طرح سے بجائے (۴۰۱۵۲۰) روپیہ کے (۲۴۱۱۱۰) چارجڈ اکاؤنٹ ہوسکتے ہیں ۔ باقی ادرا کسپینڈیچر (Other expenditure) ہوسکتے ہیں ۔ اس لئے میں سمجھتا ہوں کہ اس میں تبدیلی ہونا لازمی ہے ۔

دوسری چیز یہ ہے کہ حال ہی میں گورنمنٹ کی اس پالیسی کا اظہار ہوا تھا کہ ہر تعلقہ پر ایک منصفی قائم کی جائے ۔ لیکن ابھی تک اس کا انتظام نہیں ہوا ۔ اور اس کے برخلاف گلبرگہ ضلع میں سے ایک منصفی کم کرنے کی پالیسی کا اظہار گورنمنٹ کی جانب سے ہوا ہے میں سمجھتا ہوں کہ یہ ایک تکلیف دہ چیز ہے ۔ کیونکہ ہر تعلقہ کے ہیڈ کوارٹر پر ایک منصفی کا ہونا لازمی ہے تاکہ ہر تعلقہ میں کافی سہولت مل سکے ۔ ورنہ رعایا کو تکلیف ہوگی ۔ گلبرگہ ضلع میں تعلقہ جیورگی ایسا تعلقہ ہے اگر وہاں کی منصفی کو کم کیا جائے تو جیورگی کے لوگوں کو کم از کم ۸۰ میل کا فاصلہ طے کرکے گلبرگہ آنا پڑیگا ۔ درمیان میں پل نہ ہونے کی وجہ سے بارش کے زمانے میں ان لوگوں کو بڑی تکلیف ہوتی ہے ۔ شاہپور سے یادگیر اور یادگیر سے ہوتے ہوئے گلبرگہ آنا پڑتا ہے ۔ اس کی وجہ سے نہ صرف عوام کو بلکہ گورنمنٹ کو بھی زیادہ اکسپینڈیچرس ہوتے ہیں۔ پولیس والوں کے آنے جانے کا خرچہ ۔ گواہوں کو طلب کرنے کا خرچہ وغیرہ اس قسم کے اکسپینڈیچرس زیادہ ہوں گے ۔ میں آنریبل منسٹر سے عرض کروں گا کہ شاہپور اور جیورگی کے لئے ایک منصفی شاہپور میں قائم کی جائے تو اچھا ہوگا ۔ اگر آنریبل منسٹر اس کے متعلق غور کریں تو اس تعلقہ کی رعایا کی تکلیف کم ہوجائیگی جو اب تک تکلیف اٹھا چکی ہے ۔

تیسری چیز یہ ہے کہ حال ہی میں یہ بھی ظاہر کیا گیا تھا کہ تعلقہ النڈ۔ کام ۔ سیڑم ۔ تانڈور میں کورٹ لینگویج (Court language) مرہٹی قرار دی گئی ہے ۔ اور بیدر ضلع میں سون پور ۔ بیدر ۔ ہمناباد ۔ ظہیرآباد اور ملکھیڑ کو مرہٹی زبان کا علاقہ قرار دیا گیا ہے ۔ میں کرناٹک کی طرف سے حکومت سے یہ عرض

کرنا چاھتا ھوں کہ کرناٹک کے تعلق سے حکومت حیدرآباد ناانصافی کررھی ھے - اس واسطے کہ ھمارے پاس بیدر ضلع میں احمد پور اورنلنگہ چھوڑ کر پورے ضلع کرناٹک کے تسلیم کئے گئے ھیں - اس طرح گلبرگہ کو بھی کنڑی ضلع تسلیم کیا گیا ھے - رائچور میں بھی عالم پور اور گدوال کو چھوڑ کر پورے ضلع کو کرنا ٹک تسلیم کیا گیا ھے - یہ چیز خود کانگریس کے رزولیوشن میں درج ھے - اس کے باوجود میں نہیں سمجھتا کہ بیدر کو اس طرح سے مرھٹواڑہ اور تلنگانہ میں کیوں بٹوارہ کیا جارھا ھے - گلبرگہ جو خاص طور پر کنڑی ضلع ھے اس میں سے چار تعلقوں کی کورٹ لینگویج تلگو یا مرھٹی قرار دی گئی ھے - ھائی پاور کمیشن کے آنے سے پہلے ھی کرنا ٹک کی رعایا پر اس قسم کا انیائے کرنے کی ایک کانسپائریسی (Conspiracy) معلوم ھوتی ھے - اگر آپ اردو کو کورٹ لینگویج سے نکال کر دوسری ریجنل لینگویج کو اس کی جگہ قائم کرنا چاھتے ھیں تو میں آپ سے یہ صاف عرض کروں گا کہ احمد پور اور نلگنہ کو چھوڑ کر بیدر کی کورٹ لینگویج کنڑی رکھئیے - پورے گلبرگہ ضلع میں کنڑی رکھئیے اور رائچور میں عالم پور اور گدوال کو چھوڑ کر کنڑی لینگویج قائم کیجئیے - اگر ایسا آپ نہیں چاھتے ھیں تو میں سمجھتا ھوں کہ یہ بالکل نا انصافی ھوگی - اس کا تصفیہ تو ھائی پاور کمیشن کو کرنا چاھیئیے - اور بھا شا واری پرانتھ کا باونڈری کمیشن جو نرنئے کرے اس میں کسی قسم کی تبدیلی نہ ھونی چاھیئیے - اگر ایسا نہ ھوا تو کرناٹک کی جنتا جواب تک بھی حیدرآباد حکومت کی نا انصافی برداشت کر رھی ھے وہ ان چیزوں کے خلاف پروٹسٹ کریگی - اور اپنے حقوق حاصل کرنے کے لئے پیس فل مینس (Peaceful means) اڈاپٹ کریگی - پہلے کی حکومت نے بھی کرناٹک کی جنتا کے لئے کوئی سہولت نہیں دی تھی اور آج کی حکومت میں بھی مہاراشٹرا اور آندھرا دونوں کے انٹیرسٹس ھی زیادہ ھیں - کرناٹک کے جو کچھ بھی گریونسس اور ڈیمانڈس ھیں ان کو نظر انداز کیا جارھا ھے - میں کچھ اور چیزیں دوسرے آئٹم کے وقت عرض کروں گا لیکن فی الوقت کورٹ لینگویج کے بارے میں میں یہ صاف عرض کرنا چاھتا ھوں کہ ھائی پاور کمیشن کے تصفیہ تک اور حیدرآباد کاڈس انٹگریشن ھونے تک اسٹیٹس کو (Status Quo) مینٹین کیا جائے - اور ان علاقوں میں بتدریج اردو کو نکال کر کورٹ لینگویج کو کنڑی میں تبدیل کیا جائے - اگر اس کے خلاف کچھ ھوگا تو کرناٹک کی جنتا اس کی ذمہ دار نہیں ھوگی بلکہ حیدرآباد اسٹیٹ کی حکومت اسکی ذمہ دار ھوگی -

اس کے علاوہ ایک اور چیز مجھے کہنی ھے - کرناٹک میں جو بسس ڈپوز ھیں وھاں لوگوں کے ٹھیرنے کا انتظام نہیں ھے - بہت سے آنریبل منسٹر ھمنا آباد اور گلبرگہ تشریف لاتے ھیں - اور یادگیر سے ھو کر شولا پور وغیرہ جاتے ھیں انہوں نے دیکھا ھوگا کہ جہاں جہاں بس اسٹانڈ ھیں وھاں لوگوں کے ٹہرنے کے لئے کافی انتظام نہیں ھے - یادگیر تعلقہ میں جس جگہ گورنمنٹ کے بسس آتے ھیں اور جس جگہ سے گزرتے ھیں وھاں ٹھیرنے کا انتظام نہیں - کم از کم وھاں ٹین شیڈس کا بھی انتظام نہیں ھے - جس کی وجہ سے بارش میں بہت تکلیف

ہوتی ہے - اس لئیے یادگیراور همناآباد میں وھاں کی رعایا کو ٹھیرنے کے لئیے انتظام ہونا چاھیئے - تاکہ گرما - سرما اور بارش میں سہولت مل سکے - اس کے علاوہ یہ بھی میں عرض کروں گا کہ جہاں کہیں بسس میں ہم جاتے ہیں ....

Mr. Deputy Speaker : The time is over.

شریمتی شانتا بائی - مسٹر اسپیکر سر - میرے اٹھنے کے ساتھ میرے بھائی دیشپانڈے ہنس رہے تھے -

یہ آپ کی مہربانی ہے - کل سے پولیس بجٹ پر بارش کی طرح ہر شخص بحث کر رہا ہے - صرف مجھے پانچ منٹ دئے گئے ہیں - اس کی پابندی کرنا ہے - مجھے اس سلسلے میں تھوڑے بھی پائنٹس رکھنا ہے - مرہٹی میں ایک کہاوت ہے -

"दर वर्षा प्रमाणें गण पती बेतो"

اسی طرح ھرسال پولیس بجٹ پر سب سے زیادہ بحث ہوتی ہے اور اسی پر گالیوں کے گولے بارش کی طرح برسائے جاتے ہیں بجٹ میں پچھلے دوسال سے کمی ہورہی ہے - لیکن اس کے باوجود بعض آنریبل ممبرس جو ذمہ داری کے ساتھ ایک لاکھ عوام کی نمائندگی کرتے ہیں بار بار یہ دہراتے رہتے ہیں کہ پولس کے خرچہ میں کمی کرو - کیا میں تھوڑی دیر کے لئے پوچھ سکتی ہوں کہ پولس کو کم کرنا حقیقت میں ٹھیک ہوگا - پولس ہماری حفاظت کا کام کرتی ہے اس کو کم کریں تو بدامنی زیادہ ہونے کا امکان ہے - کرپشن وغیرہ پر اعتراض کیا جاتا ہے - اس قسم کے اعتراضات برابر دو سال سے کئے جارہے ہیں - میں یہ کہنا چاہتی ہوں کہ آپ لوگ ذمہ دار لوگ ہیں اسطرح کی باتیں نہیں کرنی چاھئے - اور میں پراتھنا کرتی ہوں کہ اس سال کے بجٹ کو آپ لوگ منظور کر لیجئے - میں آنریبل ہوم منسٹر کا شکریہ ادا کرتی ہوں کہ انہوں نے پولس ڈپارٹمنٹ میں عورتوں کی بھرتی کی ہے - چالیس عورتوں کا تقرر اس میں کیا گیا ہے - میرا کہنا یہ ہے کہ انکی ذمہ داری ان پر لادنی چاھئے - انکو کوئی ذمہ دارانہ کام دینا چاھئے - میں سمجھتی ہوں کہ سی - آئی - ڈی - میں عورتیں زیادہ بہتر طریقے پر کام کرسکتی ہیں اسلئے اس میں انکو زیادہ حصہ دینا چاھئے - اور سی - ائی - ڈی - میں انکو کام کرنے کا موقع دیا جائے تو وہ اچھی کارگزاری کر دکھائیں گی - میں ہر ماہ جیل کی وزٹ (Visit) کرتی ہوں - میں دیکھتی ہوں کہ بہنوں کو ۱۰-۱۰-۱۵-۱۵سال کی سزادی جاتی ہے - میں سمجھتی ہوں کہ اگر سی - آئی - ڈی - میں ہماری بہنوں کو لیا جائے گا تو وہ اچھی طرح سے جانچ کرینگی اور صحیح رپورٹ دیں گی - میں پراتھنا کرتی ہوں کہ ہماری چالیس بہنوں کو اس میں لیا گیا ہے لیکن اب اور زیادہ بہنوں کو لیا جائے - ہر ضلع میں انکے ناکے رکھنے چاہئیں - اگر اس پر اپوزیشن کی طرف سے اعتراض ہوتو میں یہ کہوں گی کہ عورتیں جتنا کام کرسکتی ہیں آپ لوگ نہیں کرسکتے - (Laughter) صحیح کہوں تو آپ لوگوں کو غصہ آئیگا - گذشتہ دوسال سے اس بجٹ پر جو گالیاں اور برسات کی طرح باتوں کا جو چھڑکاؤ کیا جارہا ہے

اس طرح اس سال نہیں ہونا چاہئے۔ میں آنریبل منسٹر صاحب کو پھر مبارکباد دیتے ہوئے کہوں گی کہ سی-آئی - ڈی- میں عورتوں کو زیادہ سے زیادہ بھرتی کرنا چاہئے - میں اپوزیشن پارٹی کے بھائیوں سے کہوں گی کہ بغیر کسی اعتراض کے اس سال کا بجٹ منظور کردیں لیکن عورتوں کے لئے بجٹ میں گنجائش ہونی چاہئے - (Laughter) کیوں کہ عورتیں ہی دیش کے مسائل کو حل کرسکتی ہیں - ہر بات میں عورتیں آگے بڑھ رہی ہیں - میں بھی عورت ہوں اسلئے کہتی ہوں کہ عورتوں کو زیادہ موقع دینا چاہئے - (Laughter) بلکہ میں تو یہ کہونگی کہ عورتوں کو انسپکٹرس اور آئی - جی - پی - کی پوسٹس (Posts) بھی دینا چاہئے- چالیس عورتوں کو لفٹ - رائیٹ (Left Right) کرنے کیلئے لیا گیا ہے یہ کافی نہیں ہے- میں کہوں گی کہ زیادہ سے ذیادہ اونچے پوسٹ (Post) عورتوں کو ملنا چاہئے - میں ایوزیشن پارٹی سے کہوں گی کہ اس بجٹ کو منظور کرلیں تو آئندہ آپ کے مسائل ٹھیک طور پر حل ہوسکیں گے -

శ్రీమతి ఆరుట్ల కమలాదేవి: (ఆలేరు) :

అధ్యక్షా మహాశయా,

ఇదే మూడవ సంవత్సరం బడ్జెటు. పోలీసుపైన కొద్దిగా డబ్బు తగ్గించారని చెప్పి మనం యీనాడు పోలీసు మినిస్టరుగారిని మెచ్చుకోవడం గాని, వారికి వందనాలర్పించడంగాని మన బాధ్యత కాదు. ఈ సంవత్సరం బడ్జెటులో పోలీసుపైన ఖర్చు కొంత తగ్గించారు. నిజమే కాని ప్రతి సంవత్సరం ఏవిధంగా అయితే పోలీసుకు ఖర్చు పెంచుతూ వచ్చారో అదే విధంగా ఇప్పుడు కొద్దీ కొద్దిగా తగ్గిస్తూ వచ్చారు. ఈ రోజున హోంమంత్రిగారు ఒక ప్రశ్నకు జవాబుచెబుతూ ౧౯౪౩వ సంవత్సరం పోలీసుకు ౫౦ లక్షలు ఖర్చు పెట్టబడిందని చెప్పారు. ౧౯౫౨వ సంవత్సరంలో ౫౯౨ లక్షలవరకు యీ పోలీసు ఖర్చును పెంచుతూ వచ్చారు. ఏదో కొద్దీ మొత్తము తగ్గించినంత మాత్రమున పూర్తిగా పోలీసుపై ఖర్చు తగ్గించారని కాదు. ౧౯౪౩ వ సంవత్సరం నుండి ౧౯౫౩ వ సంవత్సరం వరకు అంటే ఈ పది సంవత్సరాలలోను ౫౦ లక్షల నుండి ౫౯౨ లక్షలవరకు పోలీసు ఖర్చును పెంచడం జరిగింది. పోలీసు యాక్షను అయిన తరువాత కూడా రజాకార్లు పరిపాలన తరువాత కూడా, చివరకు కాంగ్రెసు పరిపాలనలో కూడా, మూడు సంవత్సరాల కాంగ్రెసు ప్రభుత్వకాలంలో కూడా పోలీసుపై ఖర్చును పెంచుతూ వచ్చారు. దానిని బట్టి యీ సంవత్సరం కొద్దిగా తగ్గించినంత మాత్రమున నిజంగా పోలీసు ఖర్చును తగ్గించారా అనేది చూడాలి. ఆనాడు పోలీసులు కావలసివస్తే యూనియన్ నుంచి తెప్పించుకొన్నారు. ఇప్పుడు వారిని తగ్గించడం వల్ల పదిలక్షల అరవైఐదువేల డబ్బు మిగిలింది. 3 బెటాలియన్స్‌లో ఒకటి తగ్గించారు. అందువల్ల ౭ లక్షల ౫౪ వేలు మిగిలాయి. రైల్వేలను సెంటర్ తీసుకోవడంచేత రైల్వే పోలీసుల ఖర్చు తగ్గి అందువల్ల కొంత డబ్బు మిగిలింది. ఈ విధంగా వీనిపైన మిగిలింది దాదాపు ౨౦ లక్షల డబ్బు. అంతేగాని, గ్రామాలలోపల పోలీసునుతగ్గించారా, గ్రామాలలోని క్యాంప్స్ తగ్గించారా, అనేది ఆలోచించాలి. ప్రతి గ్రామంలోపల ఇదివరకు ఎంతమంది పోలీసులు ఉన్నారో ఇప్పుడు అంతమందే ఉన్నారు. ఇదివరకు ఎన్ని క్యాంప్స్ ఉన్నాయో ఇప్పుడు అన్నే ఉన్నాయి.

క్యాంప్సును తగ్గించలేదు, పోలీసును తగ్గించలేదు. ప్రజలను అసహ్యించుకునే పోలీసులు అలాగే ఉన్నారు. ౧౯౫౩ వ సంవత్సరం వరకు పోలీసుపై ఏదైతే ౫౯౨ లక్షలవరకు ఖర్చు పెడుతున్నారో అందులో నుంచి ౨౦ లక్షలు తగ్గించినంత మాత్రమున సరిపోదు. ౧౯౫౨ వ సంవత్సరములో అప్పటి అవసరము కోసము బయటినుంచి పోలీసును తెప్పించుకొని పోలీసు ఖర్చును పెంచాము. ఇప్పుడు ఆ అవసరము అయిపోయింది. కాబట్టి తిరిగి ౧౯౪౩ వ సంవత్సరమునాటి లేక ౧౯౫౦ వ సంవత్సరము నాటి పోలీసు ఖర్చువరకు తెస్తే సరిపోతుంది. కాబట్టి, ౧౯౪౩, ౧౯౫౦ వ సంవత్సరాలలో ఎంతైతే పోలీసుకు ఖర్చుపెట్టారో అంతవరకు తగ్గించాలి. అంతేగాని, ౨౦ లక్షలు తగ్గించినంత మాత్రమున సరిపోదు. నిన్న ఒక ప్రశ్నకు జవాబు చెబుతూ హోంమంత్రి ముహినాబాద్‌లో ఒక పోలీసు సబ్–ఇన్‌స్పెక్టరు రేప్ (Rape) చేసిన విషయం నిజమేనని ఒప్పుకొన్నారు. పోలీసులు ఇటువంటి అత్యాచారాలు చేస్తుంటే, యీ పోలీసు శాఖను సపోర్టు చేయడం మంచిది గాదు. ఆడ పోలీసులను వేస్తే ఇటువంటి అత్యాచారాలన్నీ పోతాయని అంటున్నారు. ఆడపోలీసులను వేసినంత మాత్రాన ఇవి పోవు. ఈ నాడు అధికారంలో ఉన్న పార్టీ పాలసీ మారాలి. ఈ పార్టీయొక్క పద్ధతి మారాలి. ఆడపోలీసును వేయడం అవసరమే. ఆడ పోలీసులు కావాలని మేము కోరాము. ఇప్పుడు వున్న పోలీసులను తగ్గించి కొంతమంది ఆడపోలీసులను ఏర్పాటు చేయాలి. ఇప్పుడు ఉన్న పోలీసులను తగ్గించకుండా అదనంగా పోలీసులను ఏర్పాటు చేసి ఎక్కువ ఖర్చుపెట్టడము కాదు. ఈ నాడు ఆడవారు మంత్రులై కూర్చున్నారు. ఈనాడు ఆడవారు మంత్రులై సీట్లలో కూర్చొని ఎంత చేస్తున్నారో, పోలీసులలో ఆడవాళ్ళను తీసుకొన్నా అంతే చేస్తారు. ఆడవాళ్ళు వచ్చినంత మాత్రమున పోలీసు పాలసీగాని, ప్రభుత్వ పాలసీగాని, మారదు. అయితే, ఇప్పుడు వున్న పోలీసును తగ్గించకుండా కొత్తగా ఆడ పోలీసులను ఏర్పాటు చేసి హెచ్చు డబ్బును పోలీసుపైన ఖర్చుపెట్ట వలసిన పనిలేదు. ఈనాడు వున్న పోలీసులను తగ్గించి కొంతమంది ఆడపోలీసులను నియమిస్తే అత్యాచారాలు కొంతవరకు తగ్గవచ్చును.

ఆర్. టి. డి. విషయం చూస్తే,—పోయిన సంవత్సరం స్ట్రయిక్ (Strike) జరిగింది. ఆ సందర్భంలో పోలీసుకు ౯౫ వేల రూపాయలు ఖర్చు పెట్టారు. పోలీసులను ఆ సందర్భంలో పిలిపించి ఆ ఖర్చు పెట్టారు. ఆర్. టి. డి. కి ఎంత ఆదాయం వస్తుంది? ఖర్చు పోగా ౩౨ లక్షల వరకు ప్రస్తమిగిలుతుంది. యిక్ వల్ల కొంత నష్టము వచ్చినా ౩౨ లక్షల వరకు మిగిలింది. వారు బోనసు కావాలని కోరితే, అందుకు అంగీకరించడం లేదు. వారు బోనసు కావా అని కోరినంత మాత్రాన ఇల్లీగల్ (Illegal) అంటూ ౧౬ రోజులు జీతం ఇవ్వలేదు. కాని వారు స్ట్రయిక్ చేస్తే పోలీసులను పిలిచి వారిక్రింద ౯౫ వేల రూపాయలు ఖర్చు పెట్టడానికి మాత్రం ఒప్పుకొన్నారు. వారు మూడుమాసాలు బోనసు కోరితే ఒక నెల బోనసు అయినా యివ్వలేదు. స్ట్రయిక్ చేసిన రోజుల డబ్బును కూడా ఇంతవరకు వారికి ఇవ్వలేదని విన్నాం.

ఆర్. టి. డి. లో సామానులు పెట్టేవారు హమాలీలను గురించి కొన్ని విషయాలు చెబుతాను. బస్సుల్లో సెకండుక్లాసు చార్జీలు వున్నాయి. ప్రజలు బస్సు చార్జీలనే ఇవ్వలేని స్థితిలో వున్నారు. అసలు బస్సు రేట్లను తగ్గించాలి. చిన్న మూటను పైన పడవేయటానికిగాని క్రిందకు దించటానికి గాని హమాలీలు రెండు అణాలు తీసుకొంటున్నారు. సామాన్య ప్రజలు అసలే బస్సుచార్జీలు ఇవ్వలేని స్థితిలో ఉంటే ఈ డబ్బును కూడా ఎట్లా ఇస్తారు. రైళ్ళల్లో పెద్ద-పెద్ద మూటలను

కూడా లోపల పెట్టుకుంటారు. కాని చిన్న మూట అయినా, బస్సులలో పైన పడవేయ వలసి వస్తుంది. ప్రజలు బస్సుచార్జీలే ఇవ్వలేక పోతున్నారు. మిగతా అదనపు చార్జీలు మూటలు పడ వేసే హమాలీలకు ఇచ్చుకోలేరు. కాబట్టి ప్రభుత్వమే హమాలీలకు జీతము ఇచ్చే ఏర్పాటు చేయాలి. డబ్బు ఇవ్వగలవారు హమాలీలచేత మూటలు పైన వేయించుకొంటారు. డబ్బు లేనివాళ్ళు వారంతటవారే సామానును పెట్టుకొనే వీలు కల్గించాలి. కాని వారంతట వారు సామాను పెట్టుకొంటే హమాలీలు వారిని పైకి ఎక్కనివ్వరు. మనం పైకి ఎక్కి సామాను తీసుకోకూడదు. హమాలీలు మాత్రమే పైకి ఎక్కి సామాను తీసి ఇవ్వాలి. అందుచేత, ప్రభుత్వమువారే హమాలీలకు జీతం ఇచ్చే ఏర్పాటు చేయాలి. ప్రభుత్వము చాలామందీ హమాలీలను ఏర్పాటు చేయనక్కరలేదు. పెద్దపెద్ద స్టేజీలలో మాత్రము ఒక్కొక్క హమాలీని జీతంతో ఏర్పాటు చేస్తే సరిపోతుంది. ఆర్. టి. డి. కి లాభంకూడా వస్తోంది. కాబట్టి, ఇది కష్టమైనది కాదు. రైల్వేలలో మాదిరి వందలాది హమాలీలను పెట్ట నక్కర లేదు. ఒక్కొక్క జంక్షన్‌లో పెద్ద పెద్ద స్టేజీలలో, ఖమ్మం, ఖాజీపేట, మొదలైన పెద్దపెద్ద స్టేజీలలో పెయిడ్ (paid) హమాలీలను పెడితే సామాన్యప్రజలకు పేద ప్రజానీకానికి ఎంతో మేలు కలుగును. కాబట్టి పెద్దపెద్ద స్టేజీలలో, రైల్వేలు లేని స్థలాల్లో బస్సులలో పోయేవారికి వీలుగా ఉండేటట్లు జీతం ఇచ్చి హమాలీలను ప్రభుత్వం ఏర్పాటు చేయాలని కోరుతున్నాను.

* شری رنگ راؤ دیشمکھ - مسٹراسپیکرسر- آج پولس کا ڈیمانڈ ایوان کے سامنے زیر بحث هے - پولس کا وجود اس لئے رکھاجاتا هے که وه ملک میں لا اینڈ آرڈر (Law & Order) مینٹین (Maintain) کرے - لیکن افسوس کے ساتھ کہنا پڑتا هے که پولس میں خود لااینڈ آڈر نہیں هے-چنچولی کےواقعه سے اس بات کا پته چلتا هے که پولس عوام کیلئے نہیں هے - پولس عوام کا پیسه کھاتی هے لیکن عوام کوکچلنے کیلئے اپنا اثر استعمال کرتی هے-اپنی قوت استعمال کرتی هے - حکومت نے اپنی رپورٹ میں بتایا هے که سنه ۵۲ع کے مقابله میں سنه ۵۳ع میں جرائم کی تعداد میں کمی هوئی هے - سنه ۵۲ع میں مرڈرس (Murders) کی تعداد ۶۵۸ تھی اور سنه ۵۳ میں ۴۹۸- اس طرح رپورٹ میں بتایا گیا هےاور منسٹر صاحب نے بھی بیان کیا هے-اس طرح کی غلط رپورٹس چھپتی هیں- پنگلی میں پربھنی کے قریب قتل کی واردات هوئی - پولس تفتیش برابر کرتی هے اور نه گواهوں کوبرابر تلاش کرتی هے - نتیجه یه هوتا هے که مقدمات خارج هوجاتے هیں - ایک طرف تو آپ یه کہتے هیں که پولس لا اینڈ آڈرمینٹین کرنے کیلئے هے اور دوسری طرف انکی یه حالت هے - ڈسٹرکٹ کے مقابله میں حیدرآباد کی آبادی ۱۰ لاکھ ۵۵ هزار ۸سو ۴۷ هے - مدراس کی آبادی ۴۲ لاکھ هے اور وهاں کا ایریا (۷۷۸) اسکوائرمائیلس (Square miles) هے - وهاں (۳۷۴۷) پولس انتظام کیلئے رکھی جاتی هے یہاں کی آبادی ۱۰ - ۱۱ لاکھ هے اسکے باوجود (۵۲۶۶) پولس انتظام کے لئے رکھی جاتی هے - کیا یه پولس عوام کی بھلائی کے لئے رکھی گئی هے یا حکومت کو سنبھالنے کے لئے رکھی گئی هے - میں کہونگا که یہاں کی پولس میں کمی هونی چاهئے -

ڈسٹرکٹس میں جو بد انتظامی هورهی هے- اسکو هم نے با رها پیش کیا هے - پربھنی ضلع کے واقعات یہاں کئی مرتبه بیان کئے گئے هیں - وهاں پولس کا خود ڈاکوؤں وغیره

میں ہاتھ ہے یہ چیز ڈی - یس - پی - کی رپورٹ اور تفتیش میں خود ظاہر ہوئی ہے -

ڈسٹرکٹ کا ایریا بڑا ہونے کے باوجود وہاں پولس کم رکھی جاتی ہے - اورنگ آباد جسکا ایریا (۶۳۰۵) مربع میل اور پاپولیشن (۱۱۸۳۳۸۵) ہے وہاں پولس کی اسٹرنتھ (۱۶۷۳) ہے - پربھنی میں جسکا ایریا (۴۸۳۶) مربع میل ہے - اور آبادی (۱۰۹۹۳۰۵) ہے پولس کی اسٹرنتھ ۸۶۱ ہے اس کے برعکس شہروں میں زیادہ پولس رکھی جاتی ہے - تاکہ یہاں جو عوامی تحریکیں اٹھتی ہیں انہیں کچلا جائے - میں تلنگانے کا حال بتلاتا ہوں - نظام آباد کا ایریا (۲۷۸۰) مربع میل اور آبادی (۷۷۳۰۷۷) ہے وہاں پولس کی اسٹرنتھ (۸۹۴) ہے - اس سے عوام کی عزت و آبرو کا تحفظ نہیں ہو سکتا - میرا حکومت پر یہ الزام ہے - اور پھر آپ نے الگ الگ ڈویژنس رکھے ہیں - پربھنی ناندیڑ نظام آباد میں ایک ایک ڈویژن ہے - بیدر گلبرگہ وغیرہ میں دودو ڈویژنس ہیں - میرا یہ کہنا ہے جہاں دو دو ڈویژنس رکھے گئے ہیں وہاں دو کے بجائے ایک ڈویژن رکھی جائے - اس طرح کافی بچت بھی ہوسکتی ہے - تلنگانہ میں عوامی تحریکوں کو کچلنے کیلئے جو پولس اسٹیشنس قائم کئے گئے تھے انہیں اٹھالینا چاہئے اور جہاں رابری (Robbery) اور ڈکیتی کی وارداتیں زیادہ ہوتی ہیں وہاں انہیں قائم کرنا چاہئے -

ایک اور بات مجھے یہ کہنی ہے کہ پولس کمشنرس آفس پر ۱۰ لاکھ روپئے خرچ ہوتے ہیں یہ بہت زیادہ ہے - حیدرآباد اور سکندرآباد میں توہر قسم کی سہولتیں مہیا کی جاتی ہیں -

سٹی پولیس کے تحت ۴۴ ٹرکس - موٹر سیکلس ۳۱ - جیپس کارس ۶ اور دیگر قسم کی کارس وغیرہ ہیں - اس کے باوجود انتظام برابر نہیں ہوتا - ان پر کافی پیسہ خرچ کیا جاتا ہے - ہر قسم کی سہولتیں حاصل ہیں - اورپھرمجھے یہ بھی کہنا ہے کہ جو جیپ کارس ۱۰-۱۲ ہزار میں خریدی گئی تھیں انہیں ایک دو سال چلاکر پولیس کے عہدہ داروں کو ایک ایک ہزار دو دو ہزار میں اقساط پر دیا گیا - اس طرح انہیں یہ موٹریں مفت دی گئیں - اور حکومت کا پیسہ اس بے دردی سے پانی کی طرح بہایا جاتا ہے - ایسے ۳۰ - ۴۰ جیپ کارس فروخت کئے گئے ہیں - میں آنریبل ہوم منسٹر سے درخواست کروں گا کہ وہ ان کارس کو حاصل کرکے پبلک آکشن کریں - اس سے حکومت کو فائدہ ہوسکتا ہے - اگر پولیس کے لوگوں کو ضرورت ہو تو وہ پبلک آکشن میں لے سکتے ہیں کیونکہ مارکٹ میں ان جیپ کارس کی قیمت ۵-۶ ہزار سے کم نہیں ہے -

آر- ٹی - ڈی کے بارے میں مجھے کہنا ہے کہ پربھنی میں آر - ٹی - ڈی کے بسس چلانے کی ضرورت ہے - آنریبل منسٹر کے ڈپارٹمنٹ نے خود اپنی رپورٹ میں یہ لکھا ہے اور یہ خود رپورٹ میں کہا گیا ہے - وہاں مناپلسٹس عوام کو لوٹ رہے ہیں - لیکن کہا جاتا ہے

The question of extension of R. T. D. to Parbhani District is under consideration.

کہ یہ فائیو ایر پلان میں انڈر کنسیڈریشن ہے - پربھنی جیسے ... چلائی

جا سکتی ہے - جنتور میں ڈپو بنا کر - جنتور سے سیلو بسمت - جنتور سے پربھنی - جنتور سے اندول سرویسس چلائی جاسکتی ہیں - وہاں عوام کے پیسہ کو خرچ کرکے نئی روڈ بھی بنائی گئی ہے - لیکن مناپلیسٹس فائدہ اٹھا رہے ہیں - میں آنریبل منسٹر سے یہ مطالبہ کروں گا کہ وہ مناپلسٹس کو جو پرمٹس دئے گئے ہیں وہ کینسل بھی کرسکتے ہیں - آپ نے انہیں جنم بھر کے لئے تو پرمٹ نہیں دیا ہے - یہ وہاں کے عوام کا مطالبہ ہے - اس بارے میں دلچسپی لیکر ضروری کارروائی کرنا چاہئے - مجھے یہ بھی کہنا ہے کہ جو ۱۱۰ نئے بسس خریدے گئے ہیں ان میں ہر ایک پر ۴۰۰ روپے کا نقصان ہوا ہے - آنریبل منسٹر اس پر توجہ کریں - میں آخر میں یہی کہوں گا کہ پربھنی میں بس سرویس چلانے کے بارے میں حکومت جلد سے جلد کارروائی کرے -

The House then adjourned for recess till Thirty five minutes past Five of the clock.

The House reassembled after recess at Thirty five minutes past Five of the clock.

[Mr. Deputy Speaker in the chair.]

శ్రీ వి. రామారావు : (కామారెడ్డి, రిజర్వుడు).

అధ్యక్ష మహాశయా,

నేటి సమస్య పోలీసు సమస్య. ఈపోలీసు బడ్జెటుపై అనేక మంది గౌరవ సభ్యులు చర్చించారు. అయితే ఈ చర్చ చాలా తీవ్రంగా ఉన్నది. అసలు ఈ పోలీసు యొక్క ఉత్పత్తికి కారణమేమిటి? పోలీసు ఎవరికొరకు వుంచబడ్డది. అని కూడా మనం ఆలోచించ వలసి యున్నది. ఇది ఆలోచిస్తే మనకు ఒక విషయం తేటగా తెలుచున్నది. అదేమంటే యిప్పుడు రాను రాను ప్రతి సంవత్సరం పోలీసు తక్కువ అవుతోంది. ఈ సంవత్సరంకూడా తక్కువ అయినది. ఇది మనం ఎంతో గర్వించవలసిన విషయం. దీనిని గౌరవించడానికి బదులు మనం ద్వేషించడం, క్రిటిసైజ్ చేయడం ఎంతమాత్రం మంచి విషయం కాదన్నమాట. మన హైదరాబాదు స్టేటులో అనేకమైనటువంటి జులుములు అల్లరులు జరిగినవి. అందువలన హైదరాబాదు స్టేటులో వుంచబడినటువంటి పోలీసు ఇండియాలో ఏ స్టేటులోనూ లేదన్నమాట. హైదరాబాదు స్టేటులో ఆర్మీ (Army) గాని, పోలీసుగాని చాలా ఎక్కువగా వుండటానికి కారణం హైదరాబాదు స్టేటులో అనేకమైన జులుములు జరిగాయి. అవి ఏవి జులుములు అంటే రజాకార్ల జులుము, కమ్యూనిస్టుజులుము ఇవిగాక హైదరాబాదు ఎక్స్‌రెజిం ఇండియా ప్రభుత్వముతో పోరాడడానికి మిలిటరిని పెంచారు. కాబట్టి హైదరాబాదు స్టేటులో పూర్వం ఆర్మీ, పోలీసు ఎక్కువగా వుండేది. సరే ఇప్పుడు పోలీసు మన హైదరాబాదు స్టేటులో ఎంత వున్నదంటే ౧౯౪౬-౪౭ లో ఆర్మీ ౨౫ వేల చిల్లర, ౪౭-౪౮ లో ౨౫ వేల పైచిలుకు, ౪౮-౪౯ లో ౨౫ వేల చిల్లరవుండి ౪౯-౫౦ లో ౧౩ వేలకు వచ్చింది. ౫౦-౫౧ లో ౭౬౬ దాకా వచ్చింది. కాబట్టి హైదరాబాదు స్టేటులో మొదట ఆర్మీ వున్నట్లు మిగతా ఏ స్టేటులోను లేకుండా

వుండేది. ఆ ఆర్మీ అంతా యిప్పుడు రూపం లేకుండా పోయింది. ఆ నాడు, అంత ఆర్మీ ఎందుకొరకు పెట్టబడింది ? మన ఇండియన్ యూనియన్‌తో హైదరాబాదు స్టేటు ఎదుర్కొనేందుకు పెట్టబడింది. అనంతరము ఇండియన్ యూనియన్‌తో హైదరాబాదు స్టేటు కలిసి పోయినతరువాత ఆ ఆర్మీ రూపం లేకుండా పోయింది. అదే ప్రకారం ఆ నాడు పోలీసు కూడా మిలిటరీ, పాయగా, సర్ఫెఖాస్ మరియు రెగ్యులర్, ఇర్రెగ్యులర్ అంతా కలిపి దాదాపు ఒక లక్ష ఫోర్సు (Force) హైదరాబాదు స్టేటులో వుండేది. ఇది ఇండియన్ యూనియన్‌తో కొట్లాడ్డానికి ఆ ఎక్స్-రెజీమ్ (Ex-regime) పెట్టింది. ఆ ఎక్స్-రెజీమ్ పోయిన తరువాత కాంగ్రెసు ప్రభుత్వం హైదరాబాదు స్టేటులో ఏర్పడిన తరువాత అనేక చర్యలు తీసుకొని మెల్లమెల్లగా, దౌర్జన్యాలు తగ్గిన తరువాత, మిలిటరీని, పోలీసును తక్కువచేస్తూ వచ్చింది. అయితే ఈనాడు పోలీసు ఇప్పుడు ఎంత వున్నదంటే,—పోలీసు అంటే సివిల్ పోలీసు, తరువాత ఆరమ్డ్ పోలీసు—మొత్తం 30 వేలు పైన వున్నది. అనగా పూర్వం ఒక లక్ష ఉన్నది—యిప్పుడు దాదాపు 30 వేల వరకు వచ్చినది అన్నమాట. ఇది చాలా సంతోషించవలసిన విషయం. ఈ సంవత్సరం లోపల దౌర్జన్యాలు ఇంకా తగ్గిపోతే పోలీసుకూడా యింకా తగ్గిపోతుంది. పోలీసు ఎక్కువగా వుండటంవల్ల ట్రెజరీ బెంచెస్‌కుగాని కాంగ్రెసు ప్రభుత్వమునకుకాని ఏవిధమ్మైనటువంటి లాభం లేదు. పోలీసును వుంచడం వలన ప్రజలకు లాభం. పోలీసు బడ్జెటు అంటే ప్రజల బడ్జెటని మనము అనుకోవలసివున్న దన్నమాట. అటు గౌరవ సభ్యులలో ఒకరు రూరల్‌ఏరియాలో పోలీసు ఎక్కువగా వుందన్నారు. ఒకరు అర్బన్ ఏరియాలో పోలీసు ఎక్కువుందన్నారు. అర్బన్ ఏరియాలో వుండటానికి కారణమున్నది. రూరల్ ఏరియలో ఉండుటకు కారణమున్నది. ఇండియాలో రెండు చోట్లలోనే అర్బన్ ఏరియాలో ఎక్కువ వున్నది. ౧. హైదరాబాదు, ౨. కాశ్మీర్, ఈ పట్టణాల్లో పోలీసును ఎక్కువ పెట్టవలసి వచ్చింది. ఇండియాలో ఈ రెండు స్టేటులలో వున్నంత పోలీసు మిగతా ఏ స్టేటులోనూ లేదన్నమాట. తెలంగాణాలో కమ్యూనిస్టు యాక్టివిటీస్ (Communist activities) వలన ప్రజలకు ఎంతో నష్టంకలిగింది. ఆనరబుల్ ఆలేరు మెంబరుగారు మాట్లాడుతూ పల్లెప్రాంతాలలో పోలీసు క్యాంప్సు ఎక్కువగా వున్నాయని చెప్పారు. అవి ఏమీ తగ్గలేదని కూడా చెప్పారు. అవును ఎంతవరకైతే అక్కడ అల్లరులుంటాయో అంతవరకు అక్కడ పోలీసు వుంటుందన్నమాట.. ఇంకొక విషయమేమంటే ప్రక్క రాష్ట్రంలో ఎక్కువ ఏరియా వున్నదని, అక్కడ పోలీసు తక్కువవున్నదని చెప్పారు. ఆ లెక్కప్రకారం చూసినా మన పోలీసును చూచి గౌరవించ వలసినదే. ఎందుచేతనంటే మన స్టేటులో వున్నటువంటి పోలీసు చాలా ఎఫిషియంట్ (Efficient) పోలీసు అనుకోవాలి. ఎందుచేత ననగా మన హైదరాబాదు స్టేటులో వున్న క్రైములు చూడండి, ఇతర స్టేట్సులోని క్రైమ్సు చూడండి. మన హైదరాబాదు స్టేటులోని క్రైమ్సును గురించి ఏమి చెప్పారో చూడండి

"From the point of crime position, in Hyderabad, cognisable crimes reported in 1950-51 is 1,04,655 while the figures for the previous year is 1,11,084 which works out to 5.5 crime incidents per thousand of population in 1950-51. The figures for Madras for 1950 are 12.9 per thousand of population and in Madhya Pradesh, 7 per thousand of population."

మన హైదరాబాదు స్టేటులో పోలీసును ఎక్కువ పెట్టడం వల్లనే క్రైములుకూడా తగ్గిపోయాయనే విషయం తెలుసుకొని మనం సంతోషించవలసి యున్నది. అంతేకాకుండా మన హైదరాబాదు స్టేటులో డెకాయిటీస్ (Dacoities), రాబరీస్ (Robberies), మర్డర్సు (Murders) తగ్గిపోయాయి. ఔరంగాబాదులో చూచినట్లయితే ౧౯౫౨లో ౨౬ డెకాయిటీస్ వుంటే ౧౯౫౩ లో ౮ మాత్రమే వున్నాయి. ఈ ప్రకారం భీడ్‌లో ౧౯౫౨లో ౨౧ వుంటే ౫౩ లో ౮ వున్నాయి.

పర్భనీలో	౧౯౫౨ లో	౧౮—	౧౯౫౩లో	— ౯
నాందేడ్‌లో	,,	౮—	,,	౧౫
గుల్బర్గా	,,	౪౪—	,,	౧౫
ఉస్మానాబాద్	,,	౩౦—	,,	[illegible]
భీదర్	,,	౩౯—	,,	౬
ఆదిలాబాద్	,,	౩౫—	,,	౨
రాయచూర్	,,	౨౨—	,,	౩
మహబూబ్‌నగర్	,,	౫౫—	,,	[illegible]
మెదక్	,,	౩౦—	,,	[illegible]
నిజామాబాద్	,,	౨౪—	,,	[illegible]
హైదరాబాదు జిల్లా	,,	౩౦—	,,	[illegible]
వరంగల్ ద.	,,	౧౭—	,,	౫
వరంగల్ ఉ.	,,	౪౭—	,,	౮
నల్‌గొండ	,,	౩౦—	,,	౪
కరీంనగర్	,,	౩౬—	,,	౨
హైదరాబాద్‌నగరం	,,	౪—	,,	—
రైల్వేపోలీసు	,,	౫—	,,	౨

[MR. SPEAKER IN THE CHAIR.]

ఈ ప్రకారం ౧౯౫౨ లో క్రైమ్సు ౫౧౧ వుంటే ౧౯౫౩ లో ౧౦౪ వున్నాయి. ఇంత తగ్గిపోయినందుకు మనం ఎంతో సంతోషించవలసి యున్నది. పోలీసు ఎఫిషియంట్ అయినది. పోలీసు ఎషియంట్ కాకపోతే ఇంతమంది అప్పోజిషన్ సభ్యులు ఈ అసెంబ్లీలోకి రాలేకపోయే వారన్నమాట. పోలీసు తెలివిగాను, న్యాయంగాను పని చేసినందుననే న్యాయంగా ఎలెక్షన్స్ జరిగి అప్పోజిషన్ సభ్యులు రాగలిగినారన్న మాట. కమ్యూనిస్టు చేతుల్లోనే ప్రభుత్వం వుంటే ఒక్క కాంగ్రెసు సభ్యుడు కూడా రాలేకపోయేవాడన్నమాట.

ఇంకొక విషయం. "What Communists have done to the Harijans?" అనేది. కమ్యూనిస్టులు హరిజనులకు మెహర్బానీ చేశామని చెప్పుకుంటున్నారు. నిజానికి హరిజనులకు కమ్యూనిస్టులు చేసినటువంటి సేవ ఏమిటి? మేము తెలంగాణాలో, ఈ అసెంబ్లీ పెట్టకపూర్వం, తిరిగి చూశాము. కమ్యూనిస్టులు హరిజనులకు అనేకమైనటువంటి మోసాలు చేశారని మేము గౌ. మెంబరు సికిందరాబాదు రిజర్వుడుసీటు, S.R. బాజయ్య, D.రాజయ్య, దళితజాతీనాయకులు, దళితజాతీ సంఘాధ్యక్షులు S. లక్ష్మయ్యగారి ధన సహాయంతో తెలంగాణాలో పర్యటనముచేసి అక్కడ హరిజనుల పరిస్థితులు చూసి తెలుసుకున్నాము. ఇక్కడ అప్పటినుంచి హైధరాబాద్ స్టేట్ దళితజాతిసంఘం స్థాపించి బాబూ జగజీవన్ రామ్ ఇన్‌స్ట్రక్షన్స్ ప్రకారం తెలంగాణాలో పర్యటన చేశాము. అక్కడ ఈ కమ్యూనిస్టులు హరిజనులకు అనేకమైనటువంటి మోసాలు చేసి వాళ్ళను అనేక బాధలు పాలు చేశారు, కమ్యూనిస్టులు రాత్రులందు పోయి హరిజనవాడల్లో వుండి దొంగతనాలు చేస్తూ, లూటీలుచేస్తూ వుండి, తెల్లవారితే పారిపోయేవారు. తరువాత కమ్యూనిస్టులు చేసిన ఆ దురంతాలకు గాను పోలీసుల చేతుల్లో హరిజనులు పడి అనేక కష్టాల పాలయ్యారు. ఈ ప్రకారం మొత్తం తెలంగాణాలో దాదాపు నూరు మంది యువకులు హరిజనులు చచ్చిపోయారు. వారి భార్యలు ముండా మోశారు. ఈ ప్రకారంగా హరిజనులను కమ్యూనిస్టులు అనేక విధాలుగా ఎక్స్‌ప్లాయిట్ చేసి అనేక కష్ట నష్టాలను కలిగించారు. ఒక ఉదాహరణ చెబుతాను. నేను తెలంగాణాలో పర్యటన చేసే నప్పుడు ఆలేరు సమీపంలో సిద్దంకి గ్రామానికి వెళ్ళాము.

श्री. व्ही. डी देशपांडे:—यह हरिजनों के बारे में बजट नहीं है, पुलिस के बारे में है। ऑनरेबल मेंबर कम्युनिस्टों और हरिजनों के बारे में कह रहे हैं वह आज के विषय से अलग है।

شری جے - بی - ستیال راؤ- پولیس کے بجٹ کے بارے میں ہی بول رہے ہیں - پولیس کو کمیونسٹوں کے مرڈرس کی وجہ سے بڑھانا پڑا -

شری گوپال راؤ- اگر آنریبل ممبر یہ بتلاسکتے ہیں کہ پولیس کی فائرنگ کی وجہ سے کتنے ہریجن مرے ہیں اور کمیونسٹوں کے فائرنگ سے کتنے ہریجن مرے ہیں تو اچھا ہے -

శ్రీ వి. రామారావు : అందుకొరకే చెబుతున్నాను. నిజానికి పోలీసు ఏమి చేసింది? పోలీసు జులుం చేసిందని అక్కడ సభ్యులు అనేకముగా మాట్లాడారు. నిజానికి పోలీసు చేసినదేమిటి, అక్కడ హరిజనులలో కమ్యూనిస్టులు ఆడిన నాటకమేమిటో తేట తెల్లంగా చెప్పాలనుకుంటున్నాను. మేము సిద్దంకి గ్రామానికి పోయినప్పుడు అక్కడ హరిజనులంతా కూడి ఒకళ్ళనిప్పివి తీసుకు వచ్చారు. అతనిని

గోరు మొదలుకొని వెంట్రుకలవరకు కాల్చి వాతలు పెట్టినట్లుగా దెబ్బలు కొట్టారు. ఈ దెబ్బలు ఎందుకు కొట్టారు? ఎవరు కొట్టారని అడిగితే "పోలీసువారు కొట్టారు. నావద్ద ౨౦౦ తులాల వెండి దొరికింది. అందువల్ల పోలీసులు కొట్టారు" అని అతను చెప్పాడు. ఈ వెండి ఎవరు ఇచ్చారంటే "నరహరి అనేటటువంటి కమ్యూనిస్టు ఇచ్చాడు. ఆ ౨౦౦ తులాల వెండిని నావద్ద దాచిపెట్టమని యిచ్చాడు. అందులో ఒక్కతులం అమ్మినాగాని, లేక ఎవరితో నైనా చెప్పినాగాని తుపాకితో కాల్చివేస్తాను, జాగ్రత్త" అని చెప్పి యిచ్చాడని చెప్పాడు. సంవత్సరం తరువాత నరహరిని పోలీసులు పట్టుకొని అతనిని దెబ్బలు కొట్టిన తరువాత ఆ హారిజనుని ఇంటివద్ద దాచిన వెండిని చూపించాడు. ఈ ప్రకారంగా కమ్యూనిస్టులవలన హారిజనులకు అనేక నష్టాలు సంభవించాయి. అనంతరం నేను సికిందరాబాదు వచ్చివేసిన తరువాత ముషీరాబాదు ఏరియాలో ఒక స్నేహితుని ఇంటికి పనిమీదపోతే అక్కడ నన్ను అడిగారు దలిత్ జాతి సంఘానికి జనరల్ సెక్రటరీగా పని చేస్తున్న రామారావునీవేనా అని అడిగి తెలుసుకొన్నారు. నరహరిఅనే కమ్యూనిస్టు వచ్చి వారి ఇంట్లో ఉన్నాడని, అయితే మొదట్లో వాళ్ళు కమ్యూనిస్టులని తనకు తెలవలేదని ఏదో స్నేహితులని వస్తే వుండనిచ్చాననీ, తరువాత ఆలేరు పోలీసు వచ్చి అరెస్టుచేసి తీసుకు పోయారని వారు చెప్పారు. ఈ ప్రకారం హారిజనుల ఇండ్లలో కమ్యూనిస్టులుపోయి దాక్కొని, హారిజనులకు అనేక విధాలుగా కష్టాలు కలిగించారు. కాబట్టి కమ్యూనిస్టులు హారిజనులకు చేసినటువంటి మెహర్బానీ ఇది. కాంగ్రెసు మాత్రం హారిజనులకు అద్భుతమైనసేవ చేసినదని చెబుతున్నాను. నేడు హైదరాబాదు మొదలుకొని ఢిల్లీవరకు దాదాపు ౫౦౦ హారిజన్ యం. ఎల్. ఏస్. ౫౦ పార్లమెంటేరియన్సు వున్నారు. ౨౫, ౨౬గురు హారిజన మినిస్టర్సు వున్నారు. ఈ విధంగా రిజర్వేషన్ చేసి శాసనసభలలోను, పార్లమెంటులోను మాకు సీట్లు వచ్చేందుకు మహాత్మా గాంధీగారు మార్గదర్శి. ఆ ప్రకారం హారిజనులకు కాంగ్రెస్సు గొప్పసేవచేసినది. ఈ నాడు హారిజనులకు ఏపార్టీ సిఫారసు చేయవలసిన అవసరంలేదు. ఈ నాడు స్వయంగా మేము హుకుమత్ లో వున్నామన్నమాట. మా దేశాన్ని ఏవిధంగా పరిపాలించుకొనవలెనో, ఏవిధముగా సౌకర్యములు కలిగించుకొనవలెనో మాకు తెలుసును. Now we are the rulers of our Country and we know how to rule ourselves. We do nor want any recommendations form others. అని చెబుతూ నేను ఇంతటితో విరమిస్తున్నాను.

شری اے۔ رامچندرریڈی (رامائن پیٹھ) ۔جیل اڈمنسٹریشن پر ۱۳ کٹ موشنس ھیں لیکن کسی ایک کے بارے میں بھی وقت نہیں دیا گیا۔

* شری کے۔انت ریڈی(بالکنڈہ)۔ مسٹر اسپیکر سر۔ ھوم منسٹر کے ڈیمانڈس کے متعلق میں چند چیزیں کہری........

مسٹر اسپیکر۔ سات منٹ میں تقریر ختم کیجیے ۔

شری کے۔انت ریڈی۔اور صاف طور پر آنریبل ھوم منسٹر صاحب کے سامنے پیش کرنا چاھتا ھوں۔ آج کل جو پولس کا ظلم اور برا رویہ روز بروز شدت اختیار کرتا جارھا ھے اس میں اور گزشتہ پانچ چھ سال پہلے کی پولس کے رویہ میں کوئی فرق مجھے دکھائی نہیں دیتا۔

اسوقت جبکه ایک مطلق العنان حکومت تھی اور لوگوں کی لڑائی اقتدار میں تبدیلی لانے کیلئے تھی تو پولس کا سپریس (Suppress) ھوسکتاتھا - اسکو میں سمجھ سکتا ھوں لیکن اب جبکه لوگ بے روزگاری اور بھوک کے خلاف آواز اٹھاتے ھیں تو انکا سپریشن کرنے - انہیں دبانے کا جو طریقه حکومت نے اختیار کیا ھے وہ قابل مذمت ھے - اسلئے میں آنریبل منسٹر کی اسطرف توجه دلانا چاھتا ھوں که بدلے ھوئے حالات میں پولس کے طرز عمل کو بھی بدلنے کی ضرورت ھے - کیونکه جہاں عوام بھوکے ھیں جہاں وہ آگے بڑھتے ھیں اور یه کہتے ھیں کارخانے والے ھمارے پیٹ پر ٹھوکر مارتےھیں حکومت بجائے اسکے که انکو سہارا دیتی - انکو بندوق اور لاٹھی سے مارتی ھے تو یه بڑی شرمناک بات ھے - انکے رویئے کو بدلنا ضروری ھے - اس کے ساتھ ساتھ لوگوں میں یه وشواس پیدا کرنا بھی ضروری ھے که پولس لا اینڈ آرڈر مینٹین کرنے کے لئے ھے - اس کا مطلب یه نہیں ھے که لوگوں کے حقوق اور انکی مانگوں کو دبایاجائے بلکه جو سبورسیوا کٹیوٹیز (Subversive activities) تخریبی اعمال ھیں انکو دبایاجائے - لیکن انکی جائز مانگوں کو اس طرح لا اینڈ آرڈر مینٹین کرنے کے نام پردبایاجائے تو وہ غلط ھے سرے سے غلط ھے - اسلئے حکومت سے مجھے یه عرض کرنا ھے که پولس کے رویه کو بدلے اور ڈیموکراٹک میتھڈس (Democratic methods) جو عوام اختیار کرنا چاھتے ھیں انہیں اسکا موقع دیا جائے تب ھی لوگوں کو ڈیموکراٹک پرنسپلس پر بھروسه ھوسکتا ھے -

ایک اور نظریه جو پولس ڈپارٹمنٹ میں ھے وہ یه ھے که پولس بلکی (Bulky) ھونا چاھئے - زیادہ ھونا چاھئے - یه نظریه بھی غلط ھے - میں یه نظریه ماننے والوں میں سے نہیں ھوں که پولس بلکی ھونا چاھیے اور زیادہ ھونا چاھئے - بلکه دراصل جو پولس فورس ھو وہ ایفیشنٹ ھونا چاھئے - وہ ناگہانی صورت حال کا مقابله کرکے اسپر قابو حاصل کرنے کے قابل ھونا چاھئے - لیکن آج یه عام رجحان ھے اور یه دیکھا جاتا ھے که پولس فورس کی تعداد کیا ھے - اس پر سے طاقت کا اندازہ لگاتے ھیں که ھماری پولس کتنی ھے میں کئی ایسی مثالیں بتلاسکتا ھوں که پولس زیادہ تعداد میں رھنے کے باوجود بھی چند لوگوں کا مقابله نه کرسکی - اسلئے میں حکومت سے یه اپیل کرنا چاھتا ھوں که لمیٹیڈ فورس رکھیں لیکن وہ ایفیشنٹ ھو - انکی تنخواھیں زیادہ ھوں - انکے بھتے زیادہ ھوں ایسی صورت میں پولس امن قائم کرسکتی ھے اور لا اینڈ آرڈر مینٹین کرسکتی ھے -

تیسری چیز مجھے انٹلیجنس ڈپارٹمنٹ (Inteligence Department) کے بارے میں عرض کرنا ھے - میں کہوں گا که یه ایک فالتو ڈپارٹمنٹ ھے - انکا کیا کام ھے سوائے اسکے که پولیٹیکل ورکرس کا نام نوٹ کریں که کب میٹنگ ھونے والی ھے - کہاں ھونے والی ھے اسکی اطلاع دیں - آنریبل ھوم منسٹر یه بتلائیں که انٹی نیشنل اکٹیویٹیز کے ضمن میں انہوں نے کیاکام کیا ھے - انہوں نے کیا ان ارتھ (In earth) کیا ھے - آج ھم یه کہتے ھیں که دیش میں کرپشن ھے -

رشوت کا بازار گرم ہے ۔ (یہ ایک انٹی نیشنل ’اکٹیوٹی ہے خواہ کوئی بھی کرتا ہو) اسکو ان ارتھ کرنے کیلئے انٹلجنس ڈپارٹمنٹ نے کیا کام کیا ۔ جس وقت کنٹرول تھا بلاک مارکٹ میں مال فروخت ہوتا تھا تب انہوں نے کیا ان ارتھ کام کیا ۔ آج ہم ان پر لاکھوں روپیہ صرف کرتے ہیں تو کس لئے؟ کیا اس لئے کہ مختلف پولیٹیکل پارٹیز اور کسان جو زمین داروں کے خلاف لڑتے ہیں اسکا نوٹ رکھاجائے ۔ انکے کیریرس (Carrears) کے ریکارڈس رکھے جائیں تاکہ انہیں پاسپورٹ نہ ملسکے کیونکہ انکے خلاف غلط ریکارڈ ہے ۔ ان سب چیزوں کی جانب میں آنریبل منسٹر کو توجہ دلاؤں گا کہ؟ ہمارے پولس ڈپارٹمنٹ میں ایک بڑی پری ورتن لانے اور ایسے لوگوں سے قریب لانے کی ضرورت ہے ۔

دوسری چیز میں آر۔ ٹی ۔ اے ۔ کے بارے میں عرض کروں گا ۔ اس کے تعلق سے مجھے یہ بتایا گیا ہے کہ کچھ کرایہ کی سواریوں پر اس قسم کی پابندیاں عائد کی گئی ہیں ۔ ریجنل گروپس بنائے گئے ہیں اور اس کے تعلق سے اجازت نامے عطا ہوتے ہیں ۔ جہاں تک مال گاڑیوں کا سوال ہے پرمٹ وغیرہ لیئے جا سکتے ہیں ۔ لیکن جہاں تک ٹیکسی سواری گاڑیوں کو ریجنل طور پر پرمٹ دینے کا سوال ہے میں اوس سلسلہ میں وضاحت چاہتا ہوں ۔ جو ڈسٹرکٹ گروپس قائم کئے گئے ہیں وہ غیر موزوں ہیں ۔ مثال کے طور پر نظام آباد کے حد تک اجازت یافتہ جو اضلاع ہیں وہ محبوب نگر ۔ نلگنڈہ ۔ اور دوسرے ضلعے ہیں ۔ حالانکہ اوس کے اطراف کے اضلاع تو کریم نگر ۔ عادل آباد اور ناندیڑ ہیں ۔ جو بھی ٹیکسی سواری جاتی ہے اون ہی اضلاع کو جاتی ہے ۔ مجھے یہ بتایا گیا ہے کہ اگر کوئی ٹیکسی نظام آباد سے ۲۰ میل کے فاصلہ پر مثلاً نرمل یا کورٹلہ جانا چاہے تو وہ اوس روز نہیں جا سکتی ۔ بلکہ دوسرے روز پرمٹ حاصل کرکے جاسکتی ہے ۔ یہ گروپنگ سسٹم میری سمجھ میں نہیں آیا ۔ پہلے تو یہ سوچنا چاہئے کہ اس طرح ریجنس قائم کرنے کی کیا ضرورت ہے ؟ لیکن اگر ایسا کرنا ضروری ہی ہو تو ریجنس کنٹنجنٹ ایریاز کو ملا کر قائم کرنا چاہئے ۔ آپ نے جو سسٹم قائم کیا ہے اوس کی وجہ سے پبلک بھی تکلیف محسوس کر رہی ہے اور سواری والے بھی محسوس کر رہے ہیں ۔ اس جانب آنریبل منسٹر توجہ کریں ۔ ایک اور چیز کی جانب توجہ دلا کر میں اپنی تقریر ختم کرتا ہوں ۔ اور وہ ہے آر ۔ ٹی ۔ ڈی کے بارے میں ۔ اس سلسلہ میں بہت سی چیزیں کہی گئیں ۔ میں دو چار چیزیں ہی کہوں گا ۔ فیر (Fair) کے سلسلے میں میں یہ سجیشن دوں گا کہ ہم بھی بمبئی کی طرح یہاں پر ۹ پائی فی میل کرایہ مقرر کرسکتے ہیں ۔ کیونکہ آئندہ ایک سال میں تو او ۔ یس (O.S.) ختم ہونے والا ہے ۔ او ۔ یس ایک آنہ جو لے رہے ہیں اوس کو گھٹا کر بمبئی کی طرح آئی ۔ جی ۹ پائی کردیں تو جو پیچیدگیاں بٹاون سے پیدا ہونے والی ہیں وہ دور ہوسکتی ہیں ۔ اس کے علاوہ فیر میں وجہ سے ٹریفک میں اضافہ ہوگا ۔ یہ جو کہا گیا ہے کہ چونکہ ٹریڈ چینل ڈس اپیر کمی کی (Trade channel disappear) ہوتا جا رہا ہے اس وجہ سے اس میں خسارہ ہو رہا ہے یہ غلط ہے ۔ صحیح بات تو یہ ہے کہ اکنامک ڈپریشن کی وجہ سے میعار زندگی گھٹ رہا ہے ۔ اور لوگ موٹروں میں سواری نہیں کر رہے ہیں ۔ اس لئے

اگر کرایہ کم کیا جائے تو لوگ عام طور پر اس کو پسند کریں گے کہ موٹر میں سوار ہوکر جائیں - اس ڈپارٹمنٹ میں کرپشن اور ان افیشینسی کی وجہ سے جو نقصان ہو رہا ہے اوس کی جانب بھی آنریبل منسٹر کو توجہ کرنی چاہئے - یہ روز مرہ کی شکایت ہے کہ کنڈکٹرس اور بسس کے متعلقہ آدمی پیسہ کھا لیتے ہیں - اور ٹکٹ وغیرہ اجرا نہیں کرتے - اس کو دور کرنے کے لئے ہمیں کوئی نہ کوئی فارمولا نیار کرنا چاہئے یہ دیکھنا چاہئے کہ کرایہ جو دیا جاتا ہے اوس کے ٹکٹس جاری کئے جاتے ہیں یا نہیں اس کی برابر چکنگ ہونا چاہئے - ایک اور چیز مجھے ایوا کوئی پراپرٹی (Evacuee property) کے سلسلہ میں کہنا ہے - لایق علی فارم پر کوئی دا نچ سو مزدور تقریباً پندرہ سال سے کام کرر ہے ہیں - لایق علی کے پاکستان جانے کے بعد وہ فارم ایوا کوئی پراپرٹی ہو گئی ہے - اور ایوا کوئی پراپرٹی کے قانون کے تحت اوس فارم کو سندھیوں اور دوسرے ریفیوجیز (Refagees) میں الاٹ کیا جارہا ہے - میں یہ عرض کروں گا کہ اس سلسلہ میں حکومت حیدرآباد حکومت ہند سے سفارش کرے کہ اس فارم کو اون پانچ چھ سو مزدوروں کے حوالے کیا جائے جو پندرہ سال سے اس پر کام کرر ہے ہیں وہاں کی اراضی کو ڈولپ (Develope) کئے ہیں - اوس فارم کو کلکٹیو فارم کی شکل دیکر اون لوگوں کو وہاں رکھنا چاہئے تا کہ وہ لوگ بے روزگار نہ بننے پائیں - اگر حکومت حیدرآباد حکومت ہند کو اس سلسلہ میں سفارش کرے کہ اوس کو کلکٹیو فارم کی شکل دی جائے تو مناسب ہوگا - یہ کہکر میں اپنی تقریر ختم کرتا ہوں -

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :—मिस्टर स्पीकर सर, दो बातें मैं हाअुसके सामने अर्ज करना चाहता हूं। पहली बात यह है कि जनरल तरीके से जो डिसकशन डिमांडज पर चल रहा है अुसके बारे में तजुर्बे के बाद हम महसूस कर रहे हैं कि कुछ डिपार्टमेंटस पर बहस नहीं हो सकती, मसलन जेल डिपार्टमेंट है अुसके अूपर आज कोअी बहस नहीं हो सकी, अिसी तरह से रिहैबीलिटेशन के मसले पर भी कोअी राय हाअुस के सामने नहीं आ सकी। चंद आनरेबल मेंबरों से मशविरा करने के बाद मेरी यह गुजारिश है कि आज हाअुस का वक्त आठ के बजाय साढे आठ तक बढाया जाय तो मुनासिब होगा।

दूसरी चीज यह है कि दो रोज के तजरुबे के बाद हम यह महसूस कर रहे हैं कि डिमांड वाअिज डिसकशन रखा जाय तो ज्यादा मुनासिब होगा ताकि अहम बहस पर हम फोकस कर सकें। आयंदा के लिये जब डिमांड रखी जायेंगी तब डिमांड वाअिज डिसकशन रखा जाय। लीडर ऑफ दि हाअुस अिसको मानेंगे तो मुनासिब होगा।

مسٹر اسپیکر- بات یہ ہے کہ (۱۲۰) سے زیادہ موشنس فارورڈ کشنس ہیں - اگر انکو ووٹ پر رکھا جائے تو میں سمجھتا ہوں کہ آپ نے جو آدھا گھنٹہ بڑھانے کی خواہش کی تھی اس سے بھی زیادہ وقت لگ جائے گا - کیونکہ چھ بجے سے ایک گھنٹہ ہوم منسٹر کو جواب کیلئے دینا پڑیگا - اسکے بعد موشنس کو ووٹ پر رکھا جائے گا - اگر ہر موشن کے لئے آدہ منٹ بھی رکھا جائے گا تو ایک گھنٹہ اس کے لئے بھی لگے گا - دوسری چیز جو آپ نے کہی اوس پر آئندہ جس روز ڈیمانڈس پیش ہونگے اوسدن ضرور کنسیڈر کریں گے -

شری دگمبر راؤ بندو - مسٹر اسپیکر سر - میرے ڈیمانڈس پر جو بہت سے موشنس فار
رڈکشن (Motions for reduction) آئے ہیں اون کے تعلق سے کل اور آج جو
بحث ہوئی میں نے اوسکو کافی غور کے ساتھ سنا - میں نے یہ بھی محسوس کیا کہ بجز
ایک دو اسپیچیس کے عام طور پر تمام اسپیچیس کا معیار کافی اونچا رہا۔ میں نے یہ بھی
محسوس کیا کہ کئی آنریبل ممبرس نے اس بات کی کوشش کی کہ کچھ کنسٹرکٹیو
سجیشنس (Constructive suggestions) ہاؤز کے سامنے رکھے جائیں چنانچہ
کافی محنت کے بعد انہوں نے کچھ سجیشنس یہاں رکھے ہیں - میں سمجھتا ہوں کہ
ایسی تقریروں سے ہمارے پورے ہاؤز کا اسٹینڈرڈ بڑھتا ہے اور مجھے بڑی مسرت ہوئی -
چنانچہ میں اسکے لئے ہاؤز کو مبارکباد دیتا ہوں - میں اون تمام چھوٹی چھوٹی چیزوں
کا جو کٹ موشن کے ذریعہ پیش کیگئی ہیں الگ الگ جواب دینے کے بجائے یہ مناسب
سمجھتا ہوں کہ میں نے جو ڈیمانڈس پیش کئے ہیں اور ہر ڈیمانڈ کے تعلق سے جو
اسپارٹمنٹ نقاط الگ الگ ممبرں نے یہاں پیش کئے ہیں اونکے بارے میں عرض کروں -
میں نے جو ڈیمانڈ نمبر (۸) پیش کیا ہے وہ موٹر وہیکل ایکٹ (Motor Vehicle Act)
کے تعلق سے ہے - موٹر وہیکل ایکٹ آل انڈیا ایکٹ ہے - اس کے بارے میں سوالات کے
سلسلے میں غالباً کئی مرتبہ میں نے یہ بتایا ہے کہ موٹر وہیکل ایکٹ ایک پرانا
ایکٹ ہے جس میں ترمیم جو ابھی حکومت ہند کے زیرغور ہے - چنانچہ ایک امنڈمنٹ
ایکٹ اس کے تعلق سے پیش کیا جا رہا ہے - میں سمجھتا ہوں کہ وہ جلد ہی پیش ہوگا۔
اس ایکٹ کے تحت ریجنل ٹرانسپورٹ اتھاریٹیز (Regional Transport Authorities)
اور اسٹیٹ ٹرانسپورٹ اتھاریٹیز (State Transport Authorities) کی باڈیز
بنائی گئی ہیں - خود میں نے بھی یہ محسوس کیا ہے کہ دراصل اس میں کافی ردوبدل
کی ضرورت ہے - لیکن اس وقت میں اس کے بارے میں اتنا ہی کہہ سکتا ہوں کہ ریجنل
ٹرانسپورٹ اتھاریٹیز اور اسٹیٹ ٹرانسپورٹ اتھاریٹیز ایکٹ کے خاص پراویژنس کے تحت ہم
مجبور ہیں کہ اسی طرح سے عمل کریں - کئی ممبروں نے کہا کہ ایک ہی راستہ پر کامپیٹیشن
(Compitetion) کرنے کی اجازت دینا چاہئیے اور اس طرح کی آزادی دینا
چاہئے - لیکن اس ایکٹ کی اسپرٹ یہ ہے کہ اس طرح کا کامپیٹیشن زیادہ نہیں ہونا
چاہئے - اس کا یہ مطلب نہیں کہ کسی کو مونا پلی (Monopoly) دیدیجائے
لیکن زیادہ کامپیٹیشن نہیں ہونا چاہئے یہ خیال رکھنا ضروری ہے - دراصل موٹر وہیکل
ایکٹ کو کسی طرح متاثر کیا ہے تو اوس قانون نے کیا ہے جو یہاں تھا - اور جس کے
لحاظ سے آر - ٹی - ڈی - کے مونا پلی ایسے راستوں پر لائی گئی جو کہ نوٹیفائی کئے گئے تھے
عام طور پر یہ کہا جاتا ہے کہ کراس کنٹری روڈس (Cross country Roads)
پر بھی عام طور پر پرمٹ دئے جاتے ہیں یہ چیز پبلک کی سہولت کے پیش نظر ضروری
ہے کہ آر-ٹی-ڈی- کی نوٹیفائی راستوں پر جب وہ لوگ آجائیں تو اونکو اس راستے پر سے
گزرنے کی اجازت دیجائے - یہ اجازت چند قواعد اور شرائط کے تابع ہوتی ہے اور اون شرائط
کے تابع ہی اس طرح پرمٹ دئے جاتے ہیں - یہ دیکھا گیا ہے کہ اس کی وجہ سے آر - ٹی - ڈی کی

آمدنی متاثر ہوتی ہے۔ گڈ س و ھیکل (Goods vehicles) کے سلسلے میں آر۔ٹی۔ ڈی۔ پر بحث کرتے ہوئے ایک آنریبل ممبر نے کہا کہ یا تو گورنمنٹ یہ پالیسی طے کرے کہ پرائیویٹ بسس کو پرمٹ دئے جائیں یا گورنمنٹ خود اپنے طور پر جس طرح پیسنجر بسس چلاتی ہے گڈس کیلئے بھی بسس چلائے۔ لیکن گورنمنٹ نے اس سلسلے میں یہ طے کیا ہے کہ گڈس و ھیکل ہماری طرف سے نہ چلائے جائیں۔ گو بہت سی بسس ہمارے پاس ایسی ہیں۔ لیکن وہ کام میں نہیں لائی جاسکتیں۔ اب یہ سوچا گیا ہے کہ اگر اون کو پاسینجر بسس میں کنورٹ (Convert) کیا جائے تو وہ بھی کام میں آسکتی ہیں۔ اس سلسلے میں یہ بھی کہا گیا کہ چونکہ انسپکٹروں کو پرمٹ دینے یا نہ دینے اور اس کی جانچ کرنے اور رپورٹ دینے کا اختیار ہوتا ہے اس لئے اس میں کافی بدعملی کی گنجائش ہے ایسی شکایتیں آئی ہیں اور میں اس قدر عرض کروں گا کہ جب کبھی کسی انسپکٹر کے بارے میں شکایت آئی میں نے اس کی جانچ کی۔ ایسے کیسس ہیں جن میں انکا تدارک کیا گیا ہے یا سزا دی گئی ہے۔ الکشن کے مد کے لئے بھی میرا ایک ڈیمانڈ تھا۔ اس کے بارے میں بھی کہا گیا ہے۔ میں یہ وضاحت کرنا چاہتا ہوں کہ آنریبل لیڈر آف دی اپوزیشن نے اس بارے میں سوال بھی کیا تھا انہوں نے یہ بھی کہا تھا کہ گورنمنٹ آف انڈیا سے جو رقم آئی ہے اوسکے وضع جانے کے بعد پھر اتنے ڈیمانڈ کی ضرورت نہ تھی۔ لیکن میں نے پہلے بھی کہا تھا اور اب بھی یہ وضاحتاً کہہ دینا چاہتا ہوں کہ کم از کم ہمارے بجٹ میں یہ طریقہ رہا ہے کہ گورنمنٹ آف انڈیا سے جو رقم آتی ہے وہ کل کی کل ایک طرف جمع کردی جاتی ہے۔ ڈپارٹمنٹ پر کتنا خرچ ہوتا ہے اوسکو علحدہ بتایا جاتا ہے۔ اور گورنمنٹ آف انڈیا سے جو رقم آتی ہے اسکو آمدنی کے مدات میں شامل کیا جاتا ہے۔ اور خرچ پورا پورا اس ڈیمانڈ میں بتایا جاتا ہے۔ میونیسپالٹی کے تعلق سے ایک آنریبل ممبر نے جو کہا اوس سلسلے میں مجھے یہ عرض کرنا ہے کہ الکٹورل رولس (Electoral Rolls) جو تیار ہوتے ہیں وہ اسی ڈپارٹمنٹ کی جانب سے تیار ہوتے ہیں۔ اس ڈپارٹمنٹ کا بالراست تعلق اگرچیکہ الکشن کمشنر سے ہوتا ہے لیکن اسکو ہماری طرف سے چلایا جاتا ہے۔ اس سلسلے میں خرچہ وہ بھی برداشت کرتے ہیں۔ ہم بھی برداشت کرتے ہیں۔ جو خرچہ اس مد کے تحت بتلایا گیا ہے وہ عملہ کا خرچہ ہے اور چھپوائی کا خرچہ ہے الکٹورل رولس کی جانچ پڑتال کرنا۔ اوس میں رد وبدل کرنا اور اس کو ٹھیک ٹھاک کرنا یہ بھی اسی ڈپارٹمنٹ کا کام ہے۔ جب کبھی الکشنس ہوتے ہیں اوسکے الکٹورلس رول کی پرنٹنگ وغیرہ کے لئے رقم کی ضرورت ہوتی ہے اس وجہ سے کچھ رقم اس کے لئے رکھی گئی ہے۔ ایک آنریبل ممبر نے اس سلسلے میں یہ بھی پوچھا تھا کہ کیا عنقریب کوئی الکشنس ہونے والے ہیں۔ وہ تو کنٹنجنسیز (Contingencies) پر منحصر ہے۔ لیکن عام طور پر جو خرچہ ہوتا ہے وہ عملہ پر ہوتا ہے اور الکٹورل رولس کی چھپوائی وغیرہ کے لئے ہوتا ہے۔

اس سلسلہ میں بحث کرتے ہوئے یہ بھی کہا گیا کہ کانگریس پارٹی اور منسٹرس کا عمل یہ ہے کہ وہ اپنی پوزیشن کا جو انہیں حاصل ہے ناجائز استعمال کرتے ہیں اور الکشن پر اثر ڈالنے کی کوشش کرتے ہیں لیکن میرے سامنے جو واقعات ہیں ان کے تحت میں یہ تسلیم کرنے کے لئے تیار نہیں ہوں کہ منسٹرس اپنی پوزیشن کا ناجائز طور پر اثر ڈالنے کی کوشش کرتے ہیں - ہاں یہ ضرور ہے کہ جو پوزیشن انہیں اپنی پارٹی کے لیڈر ہونے کی حیثیت سے حاصل ہے وہ زائل نہیں ہوسکتی - یہ صحیح نہیں ہے کہ محض منسٹر بننے سے وہ الکشن پر اثر ڈال سکتے ہیں - یہ بھی کہا گیا کہ منسٹرس سرکاری اخراجات سے الکشن پر اثر ڈالنے کے لئے جاتے ہیں - یہ صحیح نہیں ہے - منسٹر جب الکشن پرپزس (Election purposes) کے لئے جاتے ہیں تو اس کے اخراجات یا تو وہ خود برداشت کرتے ہیں یا ان کی پارٹی برداشت کرتی ہے - اس کی تمیز منسٹر کو ہوتی ہے کہ کون سے اخراجات کا بار سرکار پر عائد ہونا چاہیئے اور کون سے اخراجات کا بار پارٹی یا خود کو برداشت کرنا چاہیئے - جیسا کہ آنریبل ممبرس جانتے ہیں کہ یہاں اور سنٹرل گورنمنٹ میں یہ ہوتا ہے کہ جب کوئی لیڈر الکشن کے مقام پر جاتے ہیں تو ان کا کام ہے کہ اپنی پارٹی کی حمایت کریں - جب وہ وہاں جاتے ہیں تو یہ تو نہیں کہہ سکتے کہ تم دوسری پارٹی کو ووٹ دو - ظاہر ہے کہ وہ اپنی پارٹی کی حمایت میں کچھ کہتے ہوں گے - میں نہیں سمجھتا کہ اس میں کوئی ایسی بات ہے جو قابل اعتراض ہو.........

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :—मै आपसे अेक सवाल पूछना चाहता हूं कि अभी सिद्दिपेठ में अिलेक्शन होनेवाला है और हमने सुना है कि डिप्टि मिनिस्टर शंकरदेव साहब अभी वहां जाकर लोगों को अनाज और जमीनात तकसीम करने का काम करनेवाले हैं। यह काम सोशल डिपार्टमेंट की तरफ से किया जानेवाला है सौ अभी अिसी वक्त यह काम क्यों लिया जा रहा है क्या यह फेयर अिलेक्शन है? आपको अेक दो दिन में यह बात देखने को मिलेगी कि वहां पर अनाज और जमीन तकसीम की जायेंगी।

شری دگمبر راؤ بندو - آخر الکشن کے سلسلہ میں یہ تو کہنا ہی پڑیگا کہ گورنمنٹ نے اب تک کیا کیا ہے اور آئندہ کیا کیا کریگی - یہ ضرور کہا جائیگا - .....

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :—अैन अिलेक्शन के वक्त सोशल सर्विस डिपार्टमेंट की तरफ से किस तरह वहां के लोगों को अनाज और जमीन बटाना यह कहांतक ठीक है। अिसका असर वहां की अव्वाम पर क्या होता है ?

श्री. नरेंद्र :—यह अित्तेफाक है।

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :—यह अित्तेफाक नहीं है। भोनगीर गढवाल, सिद्धिपेठ आदि के अिलेक्शन में क्या हुवा जरा देखिये वहां भी अिलेक्शन के वक्त ही अिस तरह से अनाज वगैरा बांटा गया। मै कहना चाहता हूं अिसमें कोअी अित्तेफाक नहीं है। अैन अिलेक्शन के वक्त अैसा जानबुझकर किया जाता है।

شریمتی شاھجہاں بیگم (پرگی) لیکن آپ ھی تو جنت بتا تے ھیں۔

شری دگمبرراؤ بندو۔ اپنی پارٹی کی سپورٹ ((Support))کرنا ان کا کام ھے۔

میں چاھتا ھوں کہ مجھے وہ موقع دیں۔.........

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :—अैन अिलेक्शन के वक्त जानबूझकर अैसा किया जाता है यह मेरा कहना है ।

شری دگمبر راؤ بندو۔ وہ جو چیز ٹھیک سمجھتے ھیں وہ ضرور کہیں گے۔ میں نہیں سمجھتا کہ کوئی منسٹر جاکر کچھ اس قسم کا کام کرتے ھیں جو انہیں نہیں کرنا چاھیئے۔ ایسا نہیں ھے۔ اور اگر وہ ایسا کرتے ھیں تو اس کے لئے چارہ کار موجو ھے۔ ٹرائیبیونل (Tribunal) کے سامنے یہ مسئلہ جاسکتا ھے۔ لیکن میں نہیں سمجھتا کہ ھاؤز میں اس طرح یہ ڈیبیٹ (Debate)کا مسئلہ بن سکتا ھے۔ یہ نہیں ھوسکتا۔ محض قیاس آرائی کرکے جو جی چاھے کہدینا درست نہیں ھوسکتا۔ یہ کہنا کہ آئندہ یہ ھونے والا ھے وہ ھونے والا ھے کچھ مناسب بات نہیں ھے۔ اس کے بعد میں جو ڈیشل ڈپارٹمنٹ، جیل اور پولیس کے بارے میں کچھ کہنے سے پہلے دو ایک مدات کے بارے میں کچھ کہوں گا۔ ایواکیو ڈپارٹمنٹ (Evacuee Department) اور ری ھیبیلیٹیشن (Rehabilitation) کے تعلق سے ڈیمانڈ نمبر ۷۰ اور ڈیمانڈ نمبر ۸۰ ھے۔ ایواکیو پراپرٹی کے تعلق سے ایک آنریبل ممبر نے کچھ سجیشن دئے ھیں میں سمجھتا ھوں کہ ڈپارٹمنٹ نے یہ کوشش کی ھے کہ مقامی لوگوں کو جو وھاں کاشت کرتے ھیں زیادہ سے زیادہ فائدہ پہنچے اور ان کو زمینات دی جائیں۔ یہ سنٹرل ڈپارٹمنٹ (Central Department)کا سبجکٹ (Subject) ھے اور وھاں سے ابھی کوئی فیصلہ نہیں کیا گیا ھے۔ اگر وھاں سے یہ تصفیہ کیا جائے کہ یہ بیچدینا چاھیئے تو رفیوجیز ((Refugees)) کو بیچ دیا جائے گا اور اگر رفیوجیز خریدنے کے لئے تیار نہ ھوں تو کوآپریٹیوفارمنگ (Co-operative farming) کے تحت دیا جائیگا اور لینڈٹیننسی کے قانون کے تحت عمل کیا جائیگا لیکن اس بات کی ضرور کوشش کی جائیگی جس کی جانب آنریبل ممبر نے اشارہ کیا ھے۔ ری ھیبیلیٹیشن کے تعلق سے ایک آنریبل ممبر نے فرمایا کہ جو طریقہ اختیار کیا گیا ھے وہ زیادہ مفید نہیں ھے۔ اس سے بہتر تو یہ ھوگا کہ ڈسٹرکٹ وائیز (District-wise) کمیٹیاں بنائی جائیں اور یہ کام ان کے تفویض کیا جائے تاکہ وہ لوگ موقع پر جاکر تحقیقات کرکے فیصلہ کرسکیں کہ ناجائز قبضے ھوئے ھیں یا نہیں۔ میں نے خود ملٹری گورنمنٹ کے زمانے میں اس بات کی کوشش کی تھی اور اس کے بعد بھی کہ سرسری تحقیقات کے بعد قبضہ دھانی کے اختیارات کلکٹر کو دئے جائیں۔ میرا خیال تھا کہ اس قسم کا اختیار دینے کے بعد جو فیصلے ھوں گے ان سے جو فریق ناراض ھوگا وہ عدالت دیوانی میں رجوع ھوسکتا ھے۔ لیکن

اس زمانے میں یہ بات نہوسکی اور کانسٹی ٹیوشنل لا (Constitutional law) لاگوھوگیا اور ٹرانسفر آف پراپرٹی ایکٹ بھی لاگرھوگیا ۔ جس طرح ہندوستان کے دوسرے حصوں میں یہ قوانین لاگو ھوےیہاں بھی لاگوھوگئے اس کے بعد ھم کوئی آرڈیننس نکال سکتے تھے اور نہ کوئی ایساقانون بناسکتے تھے جو اس ایکٹ اور ان قوانین کو متاثر کرے اور کوئی ایسافیصلہ کسی ایسے عہدہ دار کی طرف سے نہیں کیا جاسکتا تھاجو جوڈیشل عہدہ دار نہو ۔ کسی عاملہ کے آفیسر کو ایسا اختیار نہیں دیا جاسکتا تھا ۔ جب یہ دقت محسوس کی گئی تو کافی بحث و مباحثہ کے بعد ھم نے مناسب سمجھا کہ ایسے اشخاص کو جنہیں نا جائز طور پر پولیس ایکشن سے پہلے یا پولیس ایکشن کے بعد بیدخل کیا گیا ھے انہیں رلیف (Relief) کے طور پر دو تین طریقوں سے مدد کیجائے ۔ ایک یہ کہ آپسی سمجھوتے کے تحت ایسا کرسکتے ھیں چنانچہ کئی کیسس میں اس طرح کا عمل کیا گیا ھےاور کامیابی ھوئی ھے ۔ قبضہ واپس دلایا گیا ھے ۔ البتہ کچھ ایسے کیسس ھیں کہ جن لوگوں کے قبضے ھوگئے ھیں وہ چھوڑنے کے لئے تیار نہیں ھیں ۔ اس کے بعد ھم نے مناسب سمجھا کہ ایک ایسے شخص کو جو ان امور سے دلچسپی رکھتا ھے اور تجربہ رکھتا ھے اس کام کے لئے مقرر کیا جائے ۔ چنانچہ ملا عبدالباسط صاحب کو جو ایک زمانے میں مجسٹریٹ تھے اور قانون کے جاننے والے ھیں اسپیشل ایڈوکیٹ (Special Advocate) مقرر کیا گیا ۔ وہ ری ھبیلیٹیشن کے بارے میں بہت کچھ کوشش کرچکے ھیں اور دلچسپی سے ان امور کی جانب متوجہ ھیں ۔ ان مقدمات کے لئے رسوم کی معافی کا بھی فیصلہ کیا گیا ھے ۔ میں اتنا کہہ سکتا ھوں کہ ایسے مقدمات کی تعداد زیادہ نہیں ھے . . .

شری سید حسن (حیدرآباد ۔ سٹی) ۔ کئی ھزار کیسس ھیں ایک صاحب کیسے فیصلہ کرسکتے ھیں ۔

شری ڈگمبر راؤ بندو ۔ میرے سامنے جو کیسس آئے ھیں وہ ھزاروں کی تعداد میں نہیں ھیں ۔ مجھے یہ سنکر تووہ مقولہ یاد آتا ھے جو ایک مرتبہ اکبر یار جنگ بہادر نے کہا تھا ۔ جب اون کے اجلاس پر یہ کہا گیا کہ اس سلسلہ میں ھزاروں نظائر ھیں توانہوں نے جواب دیا کہ ھزاروں نظائر کے دیکھنے کی تو مجھے فرصت نہیں ھے البتہ ایک نظیر دیدیجئے ۔ میں دیکھ لونگا ۔ اسی طرح ھزاروں کیسس ھیں کہنے سے تو کام نہیں چلےگا ۔ تفصیلی طور پر جانچ کرنے کی ضرورت ھوتی ھے ۔ آفیشل اور نان آفیشل لوگوں کے ذریعہ یہ کام عثمان آباد اور بیدر میں کیا گیا ھے ۔ کلکٹروں نے کوشش کی ھے اور جو لوگ اضلاع تعلقے اور دیہات چھوڑکر حیدرآباد چلے آئے ھیں اون کو آر ۔ ٹی ۔ ڈی کی بسس میں اسپیشلی (Specially) لیجا کر ھم نے وھاں پھر سے بسایا ھے ۔ جہاں تک تفصیلی رپورٹس کا تعلق ھے اون کی بنا پر میں کہہ سکتا ھوں کہ اب صرف چند مسائل تصفیہ طلب رہ گئے ھیں ۔ وہ اتنے زیادہ نہیں ھیں کہ ان کی تعداد کو ھزاروں کی تعداد کہا جائے ۔ جہاں تک ملا عبدالباسط صاحب کا تعلق ھے وہ

دلچسپی سے کام کر رہے ہیں - اب چالیس کیسس ان کے پاس ہیں - اس کے باوجود کیسس کی تعداد اور کام کے اعتبار سے حکومت کو اگر یہ معلوم ہو کہ ایک صاحب سے کام نہیں چلے گا اور کسی کو مقرر کرنے کی ضرورت ہے تو یقیناً کسی اور کو بھی مقرر کیا جائے گا - قبضہ دھانیوں کے کام کے ساتھ ساتھ جو دیگر لوگ متاثر ہوے ہیں ، بیوائیں وغیرہ جو پولیس ایکشن کے بعد یا اوس زمانے میں جب کہ گڑ بڑ تھی تو اون کو بیوہ فنڈ کے طور پر امداد دی جا رہی ہے اور یتیم بچوں کی پڑھائی کا انتظام کیا گیا ہے - وکٹوریہ میموریل آرفنج (Victoria Memorial Orphanage) میں ان کو رکھا گیا ہے - اس طرح سے کام کیا جا رہا ہے - یہ دراصل پانچ لاکھ کی جو مد ہے اس میں ڈھائی لاکھ کی منظوری چاہی گئی ہے - اس کی وضاحت میں نے پہلے بھی کی ہے اور اب بھی کہتا ہوں کہ چھ مہینے کی حد تک یہ رقم مانگی گئی ہے - گورنمنٹ آف انڈیا سے جو نئی منظوری آئے گی تو اوس رقم کو لیں گے - اگر اس طرح ڈیمانڈ پیش نہ کیا جاتا تو رقم لیاپس (Lapse) ہو جاتی - یہ پوری رقم اس کام کے لئے خرچ ہوگی -

اس کے بعد ایک چھوٹی سی مد ہے جو معلوم ہوتا ہے کہ اکس کریمنل ٹرائیبس (Ex-criminal Tribes) کے بارے میں ہے - یہ ۵۵ ہزار کی مد ہے - اب تک جو خرچہ ہوا ہے یہ اوس سے کم ہے - اب جو خرچہ ہوگا وہ صرف نگرانی کی حد تک ہوگا - لنگال سٹلمنٹ کریمنل کالونی (Lingal Settlement criminal colony) کا اس طرح انتظام کیا گیا تھا کہ وہ پولیس کی نگرانی میں رہیں - وہاں کے قبائلیوں کو تعلیم دینے اور اون کو روزگار کے حاصل کرنے کے طریقے بتانے کے لئے ایک چھوٹا سا عملہ رکھا گیا تھا - اب یہ زیر غور ہے کہ اس کو سوشیل سرویس ڈپارٹمنٹ کے تفویض کرنا چاہئے - جس طرح کویا جاتی کے لئے کیا گیا ہے - اسی طرح لنگال میں بھی یہ کوشش کی گئی ہے - جب یہ تصفیہ ہوجائے تو اس مد کے تحت جو رقم رکھی گئی ہے وہ سوشیل سرویس ڈپارٹمنٹ کے تحت منتقل کردی جائے گی -

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :— यह जो ५५ हजार रुपये अेक्स क्रिमिनल ट्राअिब्ज के लिये मांगे जा-रहे हैं उसमे कुछ काम अबतक हुवा है या नहीं ? अब जिसे आप सोश्ल सर्विसेस डिपार्टमेंट में जम करना चाहते हैं तो जिससे पहले जिसके लिये क्या काम हुवा है यह मैं जानना चाहता हूं।

شری ڈگمبر راؤ بندو - اس کی منظوری کے بعد سوشیل سرویس ڈپارٹمنٹ ان کی تعلیم وغیرہ کے سلسلہ میں کام کرے گا - اب بھی روپ میکنگ (Rope making) میاٹ میکنگ (Mat making) وغیرہ کا کام ان کو سکھایا جاتا ہے -

شری کے-وینکٹ رام راؤ - کریمنل ٹرائیبس ایکٹ (Criminal Tribes Act) منسوخ ہونے کے بعد اس کی کیا ضرورت ہے -؟

شری ڈگمبر راؤ بندو - وہ ختم ہوگیا ہے لیکن اوس سے بالکل علحدہ اسپرٹ
(Spirit) میں ہیبی چوول افینڈرس بل (Habitual Offenders Bill)
اس هاؤز کے سامنے آچکا ہے جو اب سلکٹ کمیٹی میں ہے - وہ آج کل میں یہاں آجائےگا -
اوس کے تحت بھی اس کی گنجائش ہے کہ ایسے لوگوں کو جو لنگال میں ہیں، گو وہ
اکس کریمنل ٹرائبس کے افراد ہوں، ہیبی چوول افنڈرس کہنا درست نہیں ہے۔ اب
سوشیل سرویس ڈپارٹمنٹ کے تحت جس طرح کویا لوگوں کے لئے کام کیا جاتا ہے اوسی
طرح یہ کام بھی ہوگا - میں سمجھتا ہوں کہ یہ جو خیال ہے بہت مناسب ہے -

آر-ٹی-ڈی- کے تعلق سے دو ڈیمانڈس ہیں- ایک ڈیمانڈ نمبر ۶۱ اور دوسرا ڈیمانڈ
نمبر ۹۳ - ڈیمانڈ نمبر ۹۳ چھتیس لاکھ دو هزار کیپیٹل اکسپنڈیچر کیلئے ہے - آنریبل
ممبرس بجٹ کا تفصیلی معائنہ کئے ہونگے تو انہیں معلوم ہوا ہوگا کہ ریوینیوارننگس
(Revenue earnings) میں سے ہم نے اس کیلئے کوئی زیادہ رقم پرووائیڈ
نہیں کی ہے جو ہمارے اخراجات سے بڑھکر ہو - صرف کیپیٹل اکسپنڈیچر کے طور پر یہ
رقم بتلائی گئی ہے - اس میں وہ تمام اسکیمس ہیں جن کے تحت بسس میں اضافہ ہونا ہے
شلٹرس (Shelters) بنائے جاتے ہیں، پبلک ایمینیٹیز (Public amenities)
پرووائیڈ کئے جاتے ہیں انکے لئے گنجائش نکالی گئی ہے - پہلے ہی اس پر توجہ کیجانی
ضروری تھی - بس شلٹرس اور دوسرے ایمینیٹیز کیلئے خرچہ کیا گیا ہے - لیکن حالات
کے لحاظ سے زیادہ توجہ نہیں ہو سکی یہ شکایت عام طور پر رہتی ہے کہ ریوینیو
انکم کے جو مدات ہیں اور جن سے کافی آمدنی ہوتی ہےان میں لیبر کوبھی کچھ حصہ
ملنا چاہئے- فطرتاً یہ ضرور خواهش رہتی ہے-لیکن گورنمنٹ کا یہ نظریہ رہتا ہے کہ
جو ریوینیوارننگ ڈپارٹمنٹس ہیں ان میں بونس دینا یا لیبر کو بھی حصہ‌دار بنانے کا کوئی
طریقہ نہیں ہوسکتا - ہاں جو سہولتیں دیگر ڈپارٹمنٹ کے لوگوں اور گورنمنٹ سرونٹس
کو دی جاتی ہیں وهی سہولتیں آر - ٹی - ڈی - کو بھی ضرور دیجائینگی - اسلئے ایسا کوئی
ڈیمانڈ مناسب نہیں- کچھ مطالبات ٹرائیبونل کے حوالے کئے گئے ہیں اور اپیلیٹ کورٹ میں
ہیں- اور زیرتصفیہ ہیں کچھ ایسی چیزیں ہیں جنکے بارےمیں آر-ٹی-ڈی-لیبرس یونین کے
لیڈرس کے متفق ہونے پر کچھ راستہ نکالا گیا ہے- اس کا ذکر میں نے اس سے پہلے کیا ہے-
اس سلسلے میں بھی کچھ ہورہا ہے- میں امید کرتا ہوں کہ اس کا کچھ نہ کچھ
راستہ نکل آئیگا- لیبر یونین کی جو مانگیں تھیں حکومت نے انہیں دو مرتبہ تسلیم کرلیا -
کچھ تو ہماری گورنمنٹ بننے کےفوراً بعد ہی منظور کیگئی- اور اسٹرائیک کے بعد کچھ
مانگوں کا تصفیہ ہوا- اس کی وجہ سے بھی کافی رقم کابوجھ ڈپارٹمنٹ پر پڑا - اسکے
ساتھ حال ہی میں کچھ تجویزیں مان لی گیئں - ظاہر ہے کہ ہمارا جو گراس ارننگ
(Gross earning) ہے اس میں کوئی خاص کمی تو نہیں ہوئی ہے - لیکن
نٹ انکم میں جو کمی دکھائی دیتی ہے اس سلسلے میں دوسرے شعبے بھی ہیں ان میں
ایک یہ بھی ہے کہ ہمارے اخراجات بڑھ گئے ہیں - کیونکہ اب اورٹائم (Overtime)
بھی دیاجاتا ہے-فیکٹری ایکٹ لاگو ہو چکا ہے اس کی وجہ سے کام کے گھنٹوں کا تعین

ہوچکا ہے۔ اس سے بڑھکر کوئی کام نہیں ہوسکتا۔ اگر کوئی کرنا ہے تو اسکو اور ٹائم دینا پڑتا ہے ۔ اس طرح جو چیزیں ہوئی ہیں ان کی وجہ سے خرچہ بڑھنا لازمی ہے ۔ یہ بھی ایک سبب ہے جسکی وجہ سے ہم دیکھتے ہیں کہ ارننگس میں کچھ کمی ہوئی ہے ۔ اس میں بھی صداقت ہے۔ انفرنجمنٹ (Enfringement) دونوں طریقوں سے ہوتا ہے ۔ پاسنجرس تو اوورلوڈ(Over load) ہوتے ہیں ۔ محض اس خیال سے کہ ریٹ زیادہ ہونے کی وجہ سے آمدنی کم ہورہی ہے یہ تصور صحیح نہوگا ۔ دوسری طرف یہ کہنا بھی اس قدر صحیح نہیں ہے کہ سلمپ(Slump) کی وجہ سے ایسا ہورہا ہے۔ ہاں اس کی وجہ سے کسی قدر آمدنی متاثر ہوئی ہے کیونکہ میں نے فیگرس دئیے تھے کہ سلمپ کی وجہ سے یو۔ پی اور دوسرے اسٹیٹس میں کیا اثر ہوا ۔ اور خود ریلوے میں کیا ہورہا ہے ۔ وہ فیگرس دیکھنے کے بعد یہ سمجھ سکتے ہیں کہ اس کا کیا اثر ہورہا ہے ۔ لیکن یہ کہنا صحیح نہیں کہ صرف اسی سبب کی وجہ سے اثر پڑرہا ہے ۔ باوجود اس کے کہ بسس اوور لوڈ ہوتے ہیں آمدنی کم ہوتی ہے ۔ ایسی صورتؔ میں یہ سمجھنے کی کافی گنجائش ہے کہ اس میں کافی لوپ ہولس (Loopholes) ہیں۔ جسکی وجہ سے جو پیسہ گورنمنٹ کی ٹریژری میں آنا چاہئے وہ دوسروں کے جیب میں چلاجارہا ہے یہ تمام چیزیں ایسی ہیں جنکی طرف ڈپارٹمنٹ متوجہ ہے اور حال ہی میں ہمنے اس کے لئے ایک بورڈ بھی کانسٹیٹیوٹ (Constitute) کیا ہے ۔ وہ بورڈ ان تمام مسائل کے تعلق سے سوچ رہا ہے کہ کیا کیا جاسکتا ہے۔ اور آئندہ آر۔ٹی۔ڈی۔ کو کس طرح چلایا جائے انریبل ممبرس نے جو سجیشنس دئے ہیں ان پر ہمدردانہ غور کیا جا سکتا ہے ۔

ایک چیز یہ کہی گئی کہ اگر ریٹ میں کمی کردی جائے تو ہماری آمدنی ممکن ہے بڑھ جائے گی ۔ اوسکو ورک اوٹ (Warkout) کر کے دیکھا گیا اب آئی جی کرنسی میں فی میل ۳ ء ۱۰ پائی ریٹ ہے ۔ بمبئی میں ۹ پائی آئی ۔ جی فی میل لیا جاتا ہے ۔ یہ ورک اوٹ کیا گیا کہ ہم بھی وہی ریٹ لیں تو کیا ہوگا ۔ معلوم ہوا ہے کہ اس سے سالانہ ۳۶ لاکھ روپئے کی کمی ہوگی ۔ اسکا مطلب یہ ہے کہ اب ہم جو پرافٹ لے رہے ہیں وہ بالکل ختم ہوجائے گا ۔ اور آر۔ٹی۔ڈی کو نقصان میں چلانا پڑے گا ۔ یہ حساب کر کے دیکھا گیا ۔ پھر بھی میں ہاؤز کو یہ اطمینان دلانا چاہتا ہوں آر۔ ٹی ۔ ڈی لاس میں نہ چلے بلکہ کم از کم اوسکی آمدنی اور خرچ برابر ہوں اسکا لحاظ کرتے ہوئے پبلک کے فائدہ کیلئے جو بھی کیا جا سکتا ہے اسپر ضرور غور کیا جائے گا ۔ مجھے یہ بھی پتہ چلا کہ بمبئی میں جہاں ۹ پائی فی میل کرایہ لیا جا تا ہے وہاں بھی اسپر غور کیا جا رہا ہے کہ اس کو بڑھا کر ۱۰ پائی فی میل کرنا چاہئے کیونکہ اس شرح کے رکھنے سے نقصان ہوتا ہے۔ ایسی صورت میں میں سمجھتا ہوں کہ ہمیں اسپر کافی احتیاط کے ساتھ غور کرنے کی ضرورت ہے ۔ اگر اس میں جسٹیفیکیشن (Justification) ہو کہ واقعی کمی کیجانی چاہئے تو ضرور اس پر غور کیا جا سکتا ہے ۔

اب میں ان ڈیمانڈس کی طرف آتا ہوں جن کے متعلق جیسا کہ میں نے کہا انہیں ایک ایک گروپ سمجھنا چاہئے ۔ جیل ڈپارٹمنٹ اور جوڈیشل ڈپارٹمنٹ ۔ جوڈیشیل ڈپارٹمنٹ کے بارے میں آنریبل ممبرس کا اور خود میرا بھی یہ خیال ہے کہ جوڈیشری ، ڈیموکریسی کی بیک بون (Back bone) ہے ۔ اور جہاں جوڈیشیل ڈپارٹمنٹ ایفیشینٹ ہو اور لوگوں کو اس پر اعتماد ہو تو میں سمجھتا ہوں کہ وہاں ڈیموکریسی کے پنپنے کی کافی امید ہے ۔ یہ عام طور پر سمجھا جاتا ہے ۔ اسٹانڈرڈ کے بارے میں کہا گیا ۔ یہ واقعہ ہے کہ ہم جس دور سے گذر رہے ہیں اس کے لحاظ سے لوگوں میں جو معیار پیدا ہو جانا چاہئے تھا اس میں کمی ہے پھر بھی میں یہ نہیں سمجھ سکتا کہ اسٹینڈرڈ بالکل ہی گرا ہوا ہے حال ہی میں چیف جسٹس حیدرآباد نے تفصیلی دورہ کرکے منصفیوں کا معائنہ کیا۔ اور پورے حالات دیکھنے کے بعد وہ جس نتیجہ پر پہنچے اس کے لحاظ سے انہوں نے سجیشن تیار کئے ہیں ۔ اون میں سے کئی سجیشن پر عمل بھی ہورہا ہے ۔ انہوں نے پہلی بات یہ کہی کہ محض جوڈیشیل آفیسرس ہی نہیں بلکہ ہمارے پاس کے لائرس (Lawyers) اور قانون کا پیشہ کرنے والوں کا اسٹینڈرڈ جب تک نہ بڑھیگا عدالتوں کا اسٹینڈرڈ بھی بڑھنا مشکل ہے ۔ اس لئے انہوں نے بارہا اصرار کیا کہ جب تک انگریزی میں کام نہو لوگوں کو رغبت پیدا نہیں ہوسکتی۔ ان لوگوں کو انگریزی بات کرنا نہ بھی آئے توکم از کم وہ اس قابل تو ہو جائیں کہ آئندہ پیروی تو کرلے سکیں ۔ اور کچھ سمجھ تو لیں ۔ وہ یہ سمجھ لیں کہ لا رپورٹ میں کیا لکھا ہے۔ سپریم کورٹ یا دوسرے ہائیکورٹس کے کیا ججمنٹس (Judgments) ہیں انہیں معلوم ہونا چاہئے ۔ کیونکہ اس کا کرنٹ لٹریچر (Current literature) جو کچھ بھی ہے وہ انگریزی ہی میں ہے ۔ آج کوئی دوسری زبان ایسی نہیں ہے جس میں پورا لٹریچر ہو۔ ہمارے پاس عدالتوں میں آئین دکن یا دکن لا رپورٹ یا جو کچھ بھی ہیں وہ پرانے اصولوں پر ہیں ۔ وکلاء صاحبان اور ججس اتنا اسٹینڈرڈ تو رکھیں کہ انگریزی میں جو ججمنٹس آتے ہیں انہیں سمجھ جائیں ۔ کرنٹ ججمنٹس کیا ہیں ؟ کس مسئلہ پر سپریم کورٹ نے کیا کیا ہے ؟ امتحان وہ انگریزی میں پاس کریں یا نہ کریں یہ الگ بات ہے ۔ لیکن ان کا معیار اتنا بلند ہونا چاہئے کہ یہ چیزیں سمجھ سکیں ۔ اور اگر معیار اتنا بلند نہو تو یہ عدالتوں پر اثر کئے بغیر نہیں رہ سکتا ۔ وکلاء جب بحث کی تیاری کر کے آتے ہیں تو اس کا اثر لازماً عدالتوں پر پڑتا ہے ۔ وہ سمجھتے ہیں کہ کیا مسائل ہیں اور کس طرح ان کا فیصلہ کرنا چاہئے ۔ اگر مباحث ہی پیدا نہوں تو ظاہر ہے کہ کوئی ایسا فیصلہ جس کو اسٹینڈرڈ سمجھ سکیں ، نہیں ہو سکتا ۔ یہ باتیں ایک دوسرے پر اثر کرنے والی ہیں ۔ لائرس کا بھی اسٹینڈرڈ بڑھانے کی ضرورت ہے۔ امتحان کی حد تک چیف جسٹس نے ایک دو گروپس میں ناکام رہنے والوں سے متعلق جو طے کیا ہے اس کا مطلب یہ نہیں تھا کہ ان لوگوں کو فائدہ نہ پہنچے ۔ لیکن انہیں کم ازکم اتنی انگریزی تو آجائے کہ کرنٹ لٹریچر سے وہ واقف ہوسکیں ۔

جب تک یہ نہ معلوم ہو ہمارا اسٹینڈرڈ نہ بڑھ سکے گا۔ قانونی کتابوں کی فراہمی کے سلسلے میں اسٹینڈرڈ کمنٹریز (Standard commentaries) لارپورٹ وغیرہ کے لئے ہم نے راستہ نکالا ہے۔ اورکچھ مد اس کے لئے رکھا گیا ہے جس سے ہر عدالت میں قانونی کتب خریدی جا سکتی ہیں۔ چیف جسٹس نے ۳۳ عدالتوں کی ایک فہرست بنائی ہے جہاں عدالتوں کے مکانوں کا یہ حال ہے کہ جج چھتری لیکر بیٹھتے ہیں کیونکہ ان پر بھی اوپر سے پانی ٹپکتا ہے۔ یہ ایسا مسئلہ ہے۔ جسکا تعلق مالیات سے ہے اور اس کے لئے ہمیں کوئی نہ کوئی راستہ نکالنا پڑتا ہے۔ گورنمنٹ نے یہ سوچتے ہوئے ایسی ے عدالتوں کو، جہاں بیٹھنا بھی ناممکن تھا، تعمیر کرنے کا پروگرام بنایا ہے۔ اور میں امید کرتا ہوں کہ اس سال یہ انتظام ہوجائے گا۔

طلبانہ وغیرہ جیسے امور سے متعلق کچھ باتیں کہی گئیں۔ اس سے بڑھکر میں یہ کہتا ہوں کہ گواہوں کے بارے میں بھی پوچھا جاسکتا ہے۔ حالات اتنے بدلے ہوئے ہیں کہ ہم کو پھر سے تمام چیزوں پر نظرثانی کرنے کی ضرورت ہے۔ یہ ایک ایسا مسئلہ ہے جو گورنمنٹ آف انڈیا کے زیر غور ہے۔ میں یہ بھی کہہ سکتا ہوں کہ ہمارے کریمنل پروسیجر کوڈ کے سلسلہ میں اور دوسرے جوڈیشل پروسیجرس کے سلسلہ میں حکومت ہند کے پاس اس طرح کی یوجنا ہے۔ ہوم منسٹر کی جانب سے اس طرح کہا گیا ہے۔ اور میں سمجھتا ہوں کہ جلد ہی پروسیجرس میں بھی تبدیلی ہو جائیگی جس کی وجہ سے جو جو پیچیدگیاں معلوم ہوتی ہیں وہ رفع ہوسکتی ہیں۔ اس وجہ سے میں سمجھتا ہوں کہ ہمیں جوڈیشل ڈپارٹمنٹ کے تعلق سے مایوس ہونے کی وجہ نہیں ہے۔ ہمارے پاس آج کم ازکم ایسے لوگ ہیں جن پر کافی بھروسہ ہونا چاہیئے۔ وہ مستعد ہیں۔ سمجھدار ہیں اور حیدرآباد کے جوڈیشل ڈپارٹمنٹ کی ترقی ان کے پیش نظر ہے۔

ایک بات جو مجسٹریٹس کے تعلق سے کہی گئی اور میں بھی اس میں صداقت دیکھتا ہوں۔ وہ یہ کہ جب ان کے سامنے کوئی واقعہ آتا ہے تو خود ان کو انیشیٹو (Initiative) لینا چاہیئے۔ یہ بات نہیں ہوتی۔ مجسٹریٹ کو ایسے اختیارات ہیں۔ پروسیجر کوڈ میں ہیں۔ میرا تجربہ ہے کسی جگہ ایسا ذکر آیا تو تذکرتاً میں نے کہا کہ یہ بات ہے۔ آپ کو اختیار ہے اور آپ ایسا کرسکتے ہیں تو انہوں نے یہ کارروائی شروع کردی مجسٹریٹ کو جو کریمنل کوڈ کے تحت اختیارات ہیں ان کو پبلک کے مفاد کے لئے استعمال کرنا چاہیئے ورنہ پہلے زمانہ میں یہ رجحان تھا کہ جو چالانی مقدمات ہوتے ہیں ان میں لازمی طور پر سزا ہونی چاہیئے۔ اور کوئی استغاثہ کا مقدمہ ہو تو وہ خارج ہونا چاہیئے۔ عام طور پر یہ سمجھا جاتا تھا کہ جو لوگ استغاثہ داخل کئے ہیں وہ کامیاب ہوں گے۔ بہرحال مجسٹریٹس کو میں نے اس بارے میں توجہ دلائی ہے کہ مجسٹریٹ کو اپنی یہ ذمہ داریاں سمجھنا چاہیئے جو مقدمات استغاثہ کے ہوتے ہیں یا معمولی مقدمات ضرروغیرہ کے ہیں ان میں اگر کوئی

سچائی معلوم هو تو کڑی سے کڑی سزا دیجانا ضروری ہے - کیونکہ اگر مجسٹریٹ اس طرف رجوع نہوں تو ظاهر ہے کہ پبلک موریل (Public morale) پر بھی اس کا برا اثر پڑتا ہے -

شری عبدالرحمن (سلک پیٹھ) - عدالتوں کی زبان کے تعلق سے حکومت کی کیا پالیسی ہے ؟

شری دگمبر راؤ بندو - معاف کیجئیے - میں کہنے والا هی تھا - زبان کے تعلق سے کچھ غلط فہمی هوئی ہے - جیسا کہ میں نے کہا معیار اونچا کرنے کے لئے ہمارے چیف جسٹس کا یہ رجحان ہے کہ لائرس کو انگریزی جاننا چاهیئے اور جوڈیشل افیسرس کے لئے تو یہ لازمی ہے کہ انگلش میں فیصلے لکھیں - بیانات لینے کے سلسلے میں اڑوس پڑوس کے اسٹیٹس میں جو عمل هوتا ہے ایسا عمل یہاں نہیں هوتا - در اصل یہ پروسیجر هونا چاهیئے کہ گواہ جس زبان میں بولتا ہے اسی زبان میں بیان قلمبند کیا جائے تب هی همکو اصلیت معلوم هوسکتی ہے - اس کا ایک ڈبل ریکارڈ اس طرح تیار هونا چاهیئے کہ ایک تو گواہ کی لینگویج میں هو اور دوسرے انگلش میں هو کیونکہ پریسائیڈنگ آفیسر (Presiding officer) انگریزی سمجھتا ہے - دوسرے سررشتہ دار، پیشی کا اهلکار یا ٹرانسلیٹر هوگا وہ اس زبان میں بیان قلمبند کریگا جس زبان میں کہ گواہ بولتا ہے - هائیکورٹ سے اس بارے میں کافی مراسلت کے بعد یہ مان لیا گیا ہے کہ پبلک انٹرسٹ کس میں ہے گواہ کو بھی یہ معلوم هونا چاهیئے کہ میں نے جو بیان دیا وہ ٹھیک ہے کیونکہ آخر میں تو یہ لکھا جاتا ہے کہ "گواہ نے بیان سنکر صحت تسلیم کی"- ظاهر ہے کہ اسی لینگویج میں یہ بیان لکھا جانا چاهیئے - اس حد تک غور کیا گیا اور یہ طے کیا گیا کہ جہاں پر جو لینگویج بولی جاتی ہے اس میں بیان قلمبند کرنا چاهیئے - اس کی ڈبل انٹری (Double entry) هو البتہ پریسائڈنگ آفیسر بیان کو انگلش میں نوٹ کرسکتا ہے - لیکن جو اصل بیان هوتا ہے وہ اسی زبان میں قلمبند هونا چاهیئے اس میں ایک دقت یہ ہے کہ هرجگہ هر لینگویج کا انتظام تو نہیں هوسکتا - اس وجہ سے یہ سمجھا گیا کہ جس ایریا میں جو کورٹ کام کرتا ہے اسی لحاظ سے یہ عمل هونا چاهیئے - تب کورٹس کے لحاظ سے غور کیا گیا - فرض کیجئیے کہ ریلوے مجسٹریٹ کا کورٹ ہے یا حیدرآباد کا کوئی کورٹ ہے یا اسپیشل مجسٹریٹ کا کورٹ ہے جہاں پر ریاست بھر کے مقدمے آتے هیں تو وهاں پر کونسی لینگویجس رکھی جائیں ؟ تو وهاں کے لئے سب لینگویجس رکھی گئی هیں جیسے هندی ہے - اردو ہے تلگو - مرهٹی اور کنڑی هیں - ریلوے مجسٹریٹ کے پاس ان سب لینگویجس کا انتظام هوگا - حیدرآباد میں خاصکر اردو هندی اور تلگو کا انتظام هوگا - تو ایسی کوئی خاص تشویش نہ هونا چاهیئے جس کی وجہ سے یہ خیال پیدا هوجائے کہ کسی لینگویج کو دبانے کی کوشش هورهی ہے - اس میں لینگوسٹک پراونسس (Linguistic provinces) کا کوئی مسئلہ نہیں ہے بلکہ ولیجس اور

تلعقوں کے لحاظ سے جہاں پر جو زبانیں بولی جاتی ہیں ان کا انتظام کیا گیا ہے - چنانچہ ضلع ناندیڑ میں ایک تعلقہ ایسا ہے کہ جہاں پر تین زبانیں بولی جاتی ہیں تو وہاں ان کا انتظام کیا گیا ہے - اس کا پریس نوٹ عنقریب ہی شائع ہونے والا ہے -

شری شرن گوڑہ انعامدار (اندولہ - جیورگی) - ضلع گلبرگہ تعلقہ سیڑم اور النڈ میں کنڑی کا انتظام ہے - میں نہیں سمجھتا کہ النڈ اور سیڑم میں کنڑی بولنے والے ہیں -

شری دگمبر راؤ بندو - دونوں انتظامات ہیں تا کہ کسی کو یہ احساس نہو - النڈ میں کنڑی میں انتظام رکھا گیا ہے اور فیگرس دیکھکر ہی رکھا گیا ہے - معلوم یہ ہوا کہ سنہ ۱۹۰۱ع کے سنسس کے لحاظ سے ہائیکورٹ نے ایسا عمل کیا - لیکن جب ہائیکورٹ کو توجہ دلائی گئی تو ہائیکورٹ اور حکومت کے ارکان نے بیٹھکر غور و خوض کیا اس امر کے پیش نظر کہ لنگوسٹنک پریفرنس دینا نہیں ہے بلکہ عوام کو سہولت دینا ہے اس لحاظ سے جہاں پر دو لینگویجس بولی جاتی ہیں وہاں دو کا انتظام کیا گیا اور جہاں تین بولی جاتی ہیں وہاں تین کا انتظام کیا گیا - اس طرح سے . . . .

श्री व्ही. डी देशपांडे :— किसी लैंग्वेज को रेकगनाअिज करने के लिये क्या परसेंटेज रखा गया है ?

شری دگمبر راؤ بندو - عام طور پر یہ خیال رکھا گیا ہے کہ کم سے کم ۳۰ پرسنٹ تک کسی لینگویج کے جاننے والوں کی آبادی ہوگی تو اس کا بھی لحاظ کیا جائے - لیکن بعض جگہ کچھ ایسا ہوتا ہے کہ ایک دو ہی مواضعات ہیں جیسا کہ آنریبل ممبر نے سمجھایا تھا انہیں کسی اور تعلقہ سے متعلق کردیں تو کوئی دقت نہوگی - اس تعلق سے آنریبل ممبرس کو تشویش کی ضرورت نہیں ہے -

श्रीमती आशाताअी वाघमारे :— किनवट, माणिकगड, राजूरा येथे मराठी सुरुं केले आहे काय ?

श्री दिगंबर राव बिंद्रु :— कोठे ?

श्रीमती आशाताअी वाघमारे :— किनवट व माणिकगड राजूरा येथे मराठी सुरूं केले आहे काय ?

شری دگمبر راؤ بندو - کنوٹ اور راجیورہ دونوں میں مرہٹی ہے - البتہ بوتھ جو بائی لنگویل (Bi-lingual) ہے وہاں انتظام نہیں کیا گیا ہے کیونکہ ایسا انتظام نہیں کیا جا سکتا تھا - لیکن ہمارے سامنے یہ چیز تھی کہ پبلک کا مفاد ملحوظ رہے اور جیسا کہ میں نے کہا جہاں دو لینگویجس ہیں وہاں عموماً دونوں لینگویجس کا انتظام کیا گیا ہے - حیدرآباد میں تو ہندی - اردو - تلگو - مرہٹی - کنڑی پانچوں زبانوں کا انتظام کیا گیا ہے -

شری کٹا رام ریڈی - کیا یکم اپریل سے اس پر عمل ہوگا ؟

شری د گمبر راؤ بندو - ہاں وہ نوٹیفیکیشن آجائے گا - میں سمجھتا ہوں کہ جوڈیشل ڈپارٹمنٹ کے تعلق سے ایک اہم چیز رہ گئی تھی جس کی یاد دہی کے لئے میں آنریبل ممبر کا مشکور ہوں -

شری عبدالرحمن - میں اس سلسلہ میں مبارکباد بھی دیتا ہوں کہ حکومت اس ضمن میں بہت اچھی پالیسی اختیار کر رہی ہے -

شری د گمبر راؤ بندو - اس کے بعد جیل ڈپارٹمنٹ کے تعلق سے یہاں کچھ کہا گیا ہے . . .

شری شرن گوڑہ - میرا ایک کانسٹیٹیوشنل آبجکشن (Constitutional objection) ہے - ہائی کورٹ کے اخراجات ۱۰ لاکھ ۷۰ ہزار روپیہ بتلائے گئے ہیں - سالریز کے بارے میں چارجڈ اکاؤنٹ (Charged account) ہوسکتا ہے لیکن دوسرے اخراجات کے متعلق میرا اعتراض تھا کہ ان پر ووٹ نہیں دیا جاسکتا -

شری د گمبر راؤ بندو - وہ ووٹیبل (Votable) ہے - اور اسی لحاظ سے ان پر کٹ موشنس بھی آئے ہیں -

श्री व्ही. डी. देशपांडे :— अुनका कहना है कि सिर्फ चीफ जस्टिस और अुनके आमले तक ही चार्ज्ड होना चाहिये लेकिन यहां अुनके बाकी अेक्सपेंडीचर को भी चार्ज्ड बताया गया है यानी कुल हायकोर्ट का खर्च चार्ज्ड बताया गया है वैसा नहीं होना चाहिये था। अिसके लिये दो हिस्से बनाने चाहिये।

شری د گمبر راؤ بندو - ایسا نہیں ہے بلکہ ہائی کورٹ جو ہوتا ہے اس کا ایک خاص پوزیشن رکھا گیا ہے اور پورے جوڈیشل ڈپارٹمنٹ پر اڈمنسٹریشن اور فینانس کے نقطہ نظر سے ہمارا کنٹرول ہے - دوسری ماتحت عدالتوں پر اڈمنسٹریٹیو کنٹرول ہے - ہائی کورٹ ججس بھی جب مقرر ہوتے ہیں انہیں سپریم کورٹ کے مشورہ سے پریسیڈنٹ مقرر کرتے ہیں اور اس پر راج پرمکھ کی بھی رائے لی جاتی ہے - اس کا مطلب یہ ہے کہ گورنمنٹ کی رائے لی جاتی ہے - کانسٹیٹیوشن کے تحت ہائی کورٹ سپریم کورٹ کے تحت سمجھے جاتے ہیں - دوسری جو عدالتیں ہیں ان کے تعلق سے ہاؤز کے سامنے ڈیمانڈس رکھے جاتے ہیں - کیونکہ فینانس بھی ہمارے پاس سے ہی جاتا ہے - چونکہ آل انڈیا اسکیم کے تحت اس طرح کا عمل ہوا ہے میں سمجھتا ہوں کہ وہ ٹھیک ہی ہوا ہے -

جیل ڈپارٹمنٹ کے تعلق سے میں یہ عرض کر رہا تھا کہ کچھ چیزیں ایسی کہی گئی ہیں کہ جس کے بارے میں کم از کم آنریبل ممبرس آف دی ہاؤز کو میں سمجھتا ہوں کہ کوئی شکایت نہ ہونی چاہئے تھی - میں یہ دیکھتا ہوں کہ جو اصلاحی چیزیں جیل میں کی گئی ہیں ان سے فائدہ ہوا ہے - ممکن ہے کچھ تلخ تجربے ان دنوں کے پہلے کے ہوں گے اور ابھی ان کا اثر ذہنوں پر ہو - لیکن میں دعوت دیتا ہوں کہ وہ جیل جائیں - لیکن برے معنوں میں نہیں . . . . .

श्री. व्ही. डी. देशपांडे :— क्या व्हिजीटर के तौर पर नहीं रखा जा सकता ? अिसके लिये सिर्फ जल ही जाना पडेगा ?

(Laughter)

شری دگمبر راؤ بندو - آپ دونوں طریقوں سے جا سکتے ھیں - آپ قریب سے دیکھنا چاھتے ھیں تو جیل جا کر بھی دیکھ سکتے ھیں - (Laughter) اس کا موقع مل سکتا ھے - لیکن مجھے یقین ھے کہ آنریبل ممبر پھرسے جائیں ، چاھے کسی حیثیت سے جائیں تو ان کو یقیناً فرق نظر آئے گا اس کے بعد وہ مطمئن ھو جائیں گے کہ کم ازکم ھم نے کچھ قدم ترقی کی طرف اٹھایا ھے اور جو ایمینیٹیز دئے گئے ھیں اس کے متعلق میں نے الگ الگ اوقات میں قیدیوں سے بات چیت کر کے بھی پوچھ لیا ھے - حال ھی میں اگریکاچرل فارم کھولا گیا وھاں پر بھی کوئی ۴۰۰ ایسے لوگ ھیں جنہیں لائف سنٹنس (Life sentence) ملا ھے یا کافی بڑی مدت کی سزا میں لاک اپ (Lockup) ھیں اون کے متعلق یہ جانچ کرنے کے بعد کہ وہ بھاگ نہ جائیں گے اون کے لئے وھاں بیارکس کا انتظام کر کے کھیت کے کام پر لگایا گیا ھے - انھوں نے بہت خوشی سے کام کیا ھے اور میں نے دیکھا ھے کہ اپنی محنت سے قیدیوں نے چار باؤلیاں تیار کی ھیں - انھوں نے کافی اچھا کام کیا ھے وہ دیکھنے کے قابل ھے - میں کوئی ایسی چیز تو آپ کے سامنے رکھنا نہیں چاھتا کہ محض تعریف ھی تعریف ھو - لیکن میں ضرور یہ چاھتا ھوں کہ آپ سنٹرل جیل جا کر دیکھیں - سکندرآباد جیل جا کر دیکھیں - یہ دیکھنے کے بعد اور اطمینان کرنے کے بعد مجھے یقین ھے کہ آنریبل ممبرس اس معاملہ میں میری تائید کریں گے - اور وہ سمجھینگے کہ ھم نے جو اقدام اٹھایا ھے وہ اچھا اور ترقی کی طرف ھے ...

श्री. गोपिडी गंगारेड्डी (निर्मल आम) :— तालुकेजात मे जो रिमांडज रखे जाते हैं और अुनको जो तकलीफ होती है अुसके बारे में आपने कुछ नहीं बताया ।

شری د.گمبرراؤ بندو - جن لوگوں کو زیردریافت رکھاجاتا ھے ان کے بارے میں . . .

श्री. गोपिडी गंगारेड्डी :— जिन लोगों को तालूकेजात में रखा जाता है अुनके बारे में ।

شری دگمبرراؤ بندو - میں تعلقہ جات کے جیلوں کے بارے میں کہہ رہا ھوں - تعلقہ منصفی میں ھم نے لاک اپس (Lock ups) دئیے ھیں پہلے وہ لاک اپس تحصیل کے تحت تھے - تعلقہ جیل میں اون کو ھی رکھا جاتا ھے جن کے مقدمات چل رھے ھوں - اگر تعداد کافی بڑھ جائے تو ڈسٹرکٹ میں منتقل کیا جاتا ھے - تمام مقامات پر تو اون کے لئے مکان کا انتظام نہیں ھوسکا - لیکن ھر جگہ جس طرح پرووائیڈ (Provide) کیا گیا ھے اسی طرح اونکو بھی پرووائیڈ کیا گیا ھے - بھتہ اور کھانے پینے کی چیزوں میں کوئی فرق نہیں ھے - البتہ بعض جگہوں پر عمارتوں کی تکلیف ھے - اس کے لئے یہ سوچا جارھا ھے کہ عارضی طورپر ھم کیا کرسکتے ھیں -

شری کے۔ایل ۔ نرسمہاراؤ (یلندو۔عام) ۔ ریفارمس آنے کے بعد بھی قیدیوں سے برقنداز سے لے کر آفیسرس تک کے گھروں پر کام لیا جاتا ہے۔

شری دگمبرراؤ بندو ۔ میں نے ایسی شکایت نہیں سنی ہے۔ البتہ کھیتوں پر کام لیا جا تا ہے۔ باؤلیوں پر کام لیا جاتا ہے۔ پانی وغیرہ نکالنے کے لئے۔یا جیل کے برتن اور کپڑے وغیرہ دھونے کا کام لیاجاتا ہے۔

شری کے۔ایل ۔ نرسمہاراؤ۔ آفیسرس ذاتی کاموں کے لئے اون کو آرڈرلی (Orderly) کے طور پر رکھ لئے ہیں۔

شری دگمبرراؤ بندو۔ میرے پاس ایسی کوئی شکایت نہیں ہے ۔

شری اے ۔ راجنیدرا ریڈی ۔ اپوزیشن کے ممبرس میں کوئی نان آفیشیل ویزیٹرس جیلوں کے لئے نہیں لئے گئے اسکی کیا وجہ ہے؟

شری دگمبرراؤ بندو ۔ میں نہیں سمجھتا کہ ایسا ہوسکتا ہے۔ بات یہ ہے کہ دونوں طرف سے اچھی اسپرٹ ہونی چاہیئے ۔ اگر آپ کو ہم پر اعتماد ہے تو ہم کو بھی آپ پر اعتماد ہوسکتا ہے ۔ لیکن ابتداء ہی اس سے ہوتی ہے کہ آپ ہم سے بے بھروسہ رہتے ہیں۔ ایسی صورت میں ہم بھی آپ سے بے بھروسہ رہینگے۔ یہ چیزیں ایک دوسرے پر موقوف ہیں۔ اگر ہم ایک دوسرے کو سمجھ سکیں اور یہ اسپرٹ ہو کہ ہم کس حدتک مل کر کام کرسکتے ہیں تویقیناً ہم بہت آگے بڑھ سکتے ہیں۔ جہاں اختلافات ہوتے ہیں اونکو تو چھوڑ دیجئے۔ لیکن آج حالات ایسے ہیں کہ ہم کئی معاملات میں متفقہ طورپر کام کرسکتے ہیں ۔

ایک اور چیز یہ بھی کہی گئی کہ جیل ڈپارٹمنٹ میں سندھی لوگ ہی ہیں۔ میں نے اس کا جواب پہلے بھی دیا تھا۔مجھے افسوس ہے کہ آپ انکے متعلق اس طرح سے سوچ رہے ہیں۔ یہ وہ لوگ ہیں جو ایک زمانے میں سندھ کے جیل ڈپارٹمنٹ میں تھے ۔ اور گورنمنٹ آفیسرس تھے۔ اونکی بدقسمتی تھی کہ ملک کی تقسیم ہوگئی اور وہ یہاں آنے کے لئے مجبور ہوگئے۔ گورنمنٹ آف انڈیا نے جس طرح الگ الگ جگہوں پر اون کو آباد کیا یہاں بھی اون لوگوں کو بھیجا ۔ یہاں پر جیسے حالات پولس ایکشن کے بعد تھے اون کے تحت یہ مناسب سمجھا گیا کہ یہاں پر اونکو ضم کرلیا جائے۔ چنانچہ پبلک سرویس کمیشن کے مشورہ سے اون کو الگ الگ جگہوں پر رکھا گیا ۔ میں اس سلسلے میں یہی کہوں گا کہ ہم کو وسعت دلی کے ساتھ دیکھنا چاہئے ۔ میں هاؤز سے اپیل کرونگا کہ یہ لوگ سندھی ہیں یا پنجابی ہیں اس نقطہ نظر سے نہیں سوچنا چاهئے بلکہ کام کے لحاظ سے معیار کے لحاظ سے اونکی ذاتی قابلیت کے لحاظ سے سوچنا چاهئے ۔ اگر کوئی آدمی نااهل ہے تو ضرور اسکے بارے میں الگ طور پر سوچا جاسکتا ہے۔ محض سندھی ہونے کی بناء پر اون کے خلاف سوچنا یا سمجھنا مناسب نہیں ۔

پولس کے تعلق سے آنربیل ممبرس نے جو سجیشنس رکھے ہیں وہ وہی سجیشنس ہیں جن کے بارے میں حکومت خود بھی غور کررہی ہے ۔ اس وجہ سے جو سجیشنس آئے ہیں میں ان کو ویلکم (Welcome)کرتا ہوں اور خاص کر میرے دوست لیڈر آف دی اپوزشن نے کانسٹیبلس کے تعلق سے جو خیال ظاہر کیا ہے اوسکو ویلکم کرتا ہوں ۔ اس کے پہلے انہوں نے کبھی اونکے متعلق غور نہیں کیا تھا۔ میں اس کی وجہ سے کانسٹیبلس کو بھی قابل مبارکباد سمجھتا ہوں کہ کم از کم آج آنربیل لیڈر آف دی اپوزیشن یہ سمجھنے لگے ہیں کہ وہ بھی انسان ہیں ۔ اون لوگوں کو بھی آسائش کی ضرورت ہے ۔ اونکے لئے بھی کچھ نہ کچھ کرنے کی ضرورت ہے۔ مجھے اونکے اس کہنے سے کافی تشفی ہوگئی ۔

श्री व्ही. डी. देशपांडे :– पिछले वक्त भी मैंने कहा था कि कांस्टेबल्स को बेटर हाउसिंग मिले और उनका पे स्केल भी बेटर हो अैसा कहा था अिसे सिर्फ ज्यादा डिटेल में कहा है ।

شری دگمبر راؤ بندو ۔ دونوں بھی قابل مبارك باد ہیں ۔ ہمیشہ پولیس کے بارے بحث کرتے ہوئے دو تین چیزیں زیادہ کہی جاتی ہیں ۔ ایک تو یہ کہا جاتا ہے کہ وہ لوگ ان افیشنٹ (Inefficient) ہیں ۔ کرپٹڈ (Corrupted) ہیں ۔ انہیں اپوزیشن پارٹیز کو سپرس (Suppress)کرنے کے لئے استعمال کیا جاتا ہے ۔ میں اس سلسلہ میں یہ کہوں گا کہ حکومت کی پالیسی ایک بنیاد پر ہوتی ہے ۔ اگر حکومت کی پالیسی کریٹسیزم (Criticism)کے قابل ہے تو ہاؤز اس پر کھلے طور پر کریٹسیزم کرسکتا ہے ۔ لیکن اگر کوئی آدمی غلط کام کرتا ہے تو اس کی اتنی ذمہ داری ہم پر نہیں ڈالی جاسکتی جتنی کہ ڈالنے کی کوشش کی جاتی ہے ۔ اور اس کو ایسا رنگ دیا جاتا ہے کہ پالیسی کے طور پر حکومت نے یہ کام کروایا ہے ۔ جیسا کہ دس آدمیوں میں سے دو آدمیوں نے کوئی غلط کام کیا ہو تو یہ کہنا کہ دس آدمیوں نے یہ کام کیا ہے۔آپ دوسروں پر الزام لگانے کی کوشش کرتے ہیں اور یہ کہتے ہیں کہ ایسے لوگوں سے آپ یہ کام کراتے ہیں ۔میں تو یہ سمجھتا ہوں کہ یہ ہم پر شبہ ہے ۔ ہمارے کیریکٹر پر دھبہ لگانے کی کوشش ہے ۔ حکومت کو ذلیل کرنے کی کوشش ہے ۔ در اصل اگر پولیس کے تعلق سے حکومت حیدرآباد کی یہ پالیسی ہوتی کہ پولیس کے ذریعہ کمیونسٹ پارٹی یا کسی دوسری پارٹی کو دبایا جائے تو ہاؤز جانتا ہے کہ کمیونسٹ پارٹی پر سے جو بیان (Ban)اٹھادیا گیا وہ نہ اٹھتا اور برابر یہی بتا یا جاتا کہ اس بیان کو کنٹینیو (Continue) کرنا چاہیئے ۔ اور جن لوگوں پر مقدمات تھے وہ نہ اٹھائے جاتے ۔ آنربیل ممبرس آف دی اپوزیشن کے ذمہ دار کارکن جانتے ہیں کہ محض ہماری کوشش کی وجہ سے یہ مقدمات اٹھائے گئے ۔ ہم یہ محسوس کررہے تھے کہ ٹیکنیکلی (Technically) تو یہ مقدمات چل سکتے ہیں لیکن ذاتی طورپر میں خود بھی ان مقدمات سے مطمئن نہیں تھا اس لئے ہم نے یہ مناسب نہیں سمجھا کہ بلا وجہ ان لوگوں کو سالہاسال

تک جیلوں میں سڑایا جائے - جو لوگ بوڑھے اور بیمار ہیں ان کی زندگی خواہ مخواہ جیلوں میں ختم کردیجائے - ہم نے اس کے متعلق ہیومینیٹیرین پائنٹ آف ویو (Humanitarian point of view) سے سوچا - چنانچہ بہت سے مقدمات اٹھالئے گئے - ڈیٹینیوز (Detenues) کی حیثیت سے جو لوگ جیلوں میں تھے ان کے جیل سے چھوٹنے کے بعد ان پر آرمس ایکٹ (Arms Act) کے تحت مقدمے چلائے جارہے تھے - لیکن ہم نے یہ مناسب سمجھا کہ چونکہ وہ لوگ پہلے ہی دو ایک سال جیلوں میں رہ چکے ہیں اس لئے ان پر مقدمات چلانا مناسب نہیں - ہمارے اصرار پر گورنمنٹ آف انڈیا نے اس کو تسلیم کیا کہ ہم اس پوزیشن میں ہیں کہ یہ مقدمات اٹھالئے جائیں - کئی مقدمات ایسے ہیں جن کے بارے میں میں نے یہ کہا تھا کہ کسی معیار پر ان کو جانچنا چاہیئے اس کے بارے میں کوئی اسٹینڈرڈ ہونا چاہیئے - اور بھی کئی ایسے مقدمات ہیں جو وتھڈرا (Withdraw) کرنے کے قابل ہیں یا متعلقہ لوگوں کی رہائی عمل میں لائی جاسکتی ہے ان کے بارے میں بھی سوچا جارہا ہے - اگر حکومت کی یہ پالیسی ہوتی کہ اپوزیشن کو سپرس کیا جائے تو یہ چیزیں نہیں ہوتیں - ہم نے جو کچھ کیا وہ اس بات کا ثبوت ہے کہ ہمارے دل میں کوئی چیز نہیں ہے - ہمارے دل بالکل صاف ہیں - ہماری پالیسی سنٹرل گورنمنٹ کی پالیسی ہے - اور پالیسی آتی ہے ان قوانین کے ذریعہ جو اس وقت موجود ہیں - اس لئے نیک نیتی سے ہمارا یہ فرض ہو جاتا ہے کہ جو قوانین ہیں ان پر خود بھی عمل کریں اور دوسروں سے بھی عمل کروائیں - ہم حتی المقدور اسی طرح کی کوشش کررہے ہیں - میں ان کا دعویدار نہیں ہوں کہ ہم اس میں سو فیصدی کامیاب ہوگئے ہیں - بلکہ ہم اس ڈائرکشن میں چلنے کی کوشش ضرور کررہے ہیں - ایک صاحب نے یہ کہا کہ اگر اسی طرح دبانے کی پالیسی جاری رہے تو نتیجہ یہ ہو جائیگا کہ ہوم منسٹر کو ہٹنا پڑیگا - میں ایک چیز صاف کردینا چاہتا ہوں کہ میں ایسا آدمی واقع ہوا ہوں کہ مجھ پر ڈرانے اور دھمکانے کا اثر نہیں ہوتا - اگر کوئی یہ سمجھتا ہے کہ محض اس طرح سے ڈرانے سے میں ہٹ جاؤں گا تو یہ بات غلط ہے - البتہ اگر میری پالیسی اور ہاؤز کی پالیسی میں اختلاف ہے اور باوجود اس کے کہ میرا ضمیر صاف ہے اور میں سمجھتا ہوں کہ ٹھیک راستے پر ہوں لیکن ہاؤز اسکو نہیں مانتا اور یہ خیال کرتا ہے کہ یہ آدمی مناسب نہیں تو ایسی صورت میں مجھے یہاں سے نکل جانے میں بالکلیہ کوئی رنج نہیں ہوگا - میں اس معاملہ میں بالکل صاف ہوں - یہ بھی کہا جاتا ہے کہ کیا پالیسی ہے کہ ہر وقت دفعہ (۱۴۴) نافذ کیا جاتا ہے - یہ پالیسی خود کریمنل پروسیجر کوڈ میں موجود ہے - اس کا منشاء یہ ہے کہ ایسے تدابیر اختیار کئے جائیں جن کی وجہ سے کوئی سنگین معاملہ واقع ہونے نہ پائے - انسدادی تدابیر اختیار کرنے کے لئے یہ دفعات وضعات کئے گئے ہیں - کانسٹی ٹیوشن میں مطلق ایسی لبرٹیز (Liberties) نہیں دی گئی ہیں - اس میں یہ بتایا گیا ہے کہ

Reasonable restrictions for the security of the State, for the maintenance of Public order.

اس میں یہ تمام چیزیں ہیں - دفعہ (۱۴۴) کانسٹی ٹیوشن کی چوکھٹ میں ٹھیک بیٹھتا ہے - اس وجہ سے آج تک اس کو کسی نے چیلنج نہیں کیا - اگر کوئی ممبر یہ سمجھتے ہیں کہ یہ دفعہ غلط ہے تو وہ ایک رٹ اپلیکیشن(Writ application) عدالت میں دے کر دیکھیں کہ ہائی کورٹ کیا طے کرتا ہے - مجسٹریٹ کو یہ اختیار دیا گیا ہے کہ انسدادی تدابیر اختیار کرنے کے لئے دفعہ (۱۴۴) نافذ کرنے کی ضرورت پڑے تو نافذ کرے - اس میں گورنمنٹ کی پالیسی کا کیا سوال ہے - کیا ممبرس یہ چاہتے ہیں کہ گورنمنٹ یا ہوم منسٹر کو جب تک اطلاع نہ دیجائے کرفیو نافذ نہیں کرنا چاہئے - اگر ایسا ہوتو یہ ان کے کام میں بیجا مداخلت ہوگی ہمارا کام یہ ہے کہ اون کے اختیارات کی تعظیم کریں - ہم سیول ڈس اوبیڈینس (Civil disobedience) گاندھی جی کی ستیہ گرہ کے اصول پر کرتے ہیں لیکن اس کی جو اصل اسپرٹ ہے اوس کو دور رکھنا چاہتے ہیں - گاندھی جی نے کبھی یہ نہیں بتا یا کہ راستہ چلنے والے لوگ عمداً قانون توڑیں اور پھر شکایت کریں کہ پولیس نے اون کو گرفتار کیوں کیا - گاندھی جی نے کبھی شکایت نہیں کی کیونکہ پولیس نے انہیں گرفتار کیا - آپ ایک طرف تو قانون توڑیں اور پھر شکایت کریں - جب آپ نے سمجھ بوجھ کر یہ کیا ہے تو اوس کا نتیجہ بھی بھگتنا پڑیگا - اگر کسی آدمی نے قانون توڑا ہے تو محض اس وجہ سے کہ اوس نے پیس فلی (Peacefully) قانون توڑا ہے کوئی مار پیٹ نہیں کی - یا ہتیار ہاتھ میں رکھکر قانون نہیں توڑا اس لئے پولیس اوس کے متعلق کوئی کارروائی نہ کرے - اگر ہم ایسا طے کرتے ہیں تو پھر یہ ہوجائیگا کہ ہر اسمبلی یا پارلیمنٹ کے بنائے ہوئے قانون کو کوئی بھی توڑ سکتا ہے - ایک ہیومرسٹ نے ایک بڑے مزے کی بات لکھی ہے انہوں نے لکھا ہے کہ بعض قفل ایسے ہوتے ہیں جو بند تو ہوتے ہیں کنجی کے بغیر لیکن کھولنے کے لئے کنجی کی ضرورت ہے لیکن میں نے ایک ایسا قفل بنا یا ہے جس کو کھولنے کے لئے کنجی کی ضرورت نہیں ہوتی لیکن بند کرنے کے وقت کنجی کی ضرورت ہوتی ہے - اسی طرح قانون جو ہم بناتے ہیں وہ اس طرح توڑنے کے لئے نہیں بنائے جاتے - اگر کوئی یہ کہتا ہے کہ میں پیس فلی قانون کو توڑنا چاہتا ہوں تو توڑیئے اس کا نتیجہ بھی بھگت لیجئے - اس وقت پھر یہ شکایت کرنا کہ پولیس نے کیوں گرفتار کیا نا واجبی ہوگا جو کچھ ہوگا قانون کے لحاظ سے ہوگا - ہمیں اوس میں انٹرسٹ (Interest) نہیں ہے - لیکن ہم یہ چاہتے ہیں کہ جو قانون ہے اوس کے سب پابند ہوجائیں آفیسرس بھی پابند ہوجائیں اور عوام بھی پابند ہوجائیں کچھ ایسے آفیسرس ہوسکتے ہیں جو خود قانون کی خلاف ورزی کرتے ہیں اون کے لئے بھی ہم کو راستہ ڈھونڈنا ضروری ہے . . .

شری کے - وی - رام راؤ - کیا مجسٹریٹ بغیر پولیس کے مشورہ کے دفعہ (۱۴۴) لاگو کرسکتا ہے ؟

شری ڈگمبر راؤ بندو - پولیس رپورٹ کرتی ہے کہ حالات ایسے ہیں کہ اس دفعہ کولاگو کرنے کی ضرورت ہے - جب عدالت سطمئن ہوجاتی ہے کہ واقعی ایسے حالات ہیں تو یہ دفعہ لگایا جاتا ہے -

لیکن یہ انسدادی دفعات ہیں جو آئندہ چل کر سنگین جرائم سرزد ہونے کے امکانات کو روکنے کے لئے رکھے گئے ہیں - اگر ان کو بر وقت استعمال نہ کیا جائے تواس کا مطلب یہ ہوگا کہ کریمنل پروسیجر کوڈ (Criminal proceedure code) کو ہم بدل رہے ہیں . . . .

श्री व्ही डी. देशपांडे: मशविरा पुलिस देती है, तो जिम्मेदारी भी पुलिस को ही लेना चाहिये।

شری ڈگمبر راؤ بندو - رپورٹ پیش کرنا ان کا کام ہے - مجسٹریٹ تو خود اپنے طور سے یہ کام نہیں کرسکتے ان کا فرض ہے کہ وہ اس طریقہ سے عمل کریں - جو کوئی قانون کی زد میں آنے کی کوشش کریگا اوس کواوس کا نتیجہ بھگتنا ہی پڑیگا - گاندھی جی نے قانون کو توڑنے کی کوشش کی تھی یہ کہا جائے تو کوئی ٹھیک بات نہیں ہوگی لیکن اوس کے ساتھ ساتھ یہ بھی تو دیکھنا چاہئے کہ گاندھی جی نے اوس زمانے کے قانون کو توڑنے کی جو کوشش کی اوس کے نتیجے میں انہیں بھی تو جیل جانا پڑا تھا - کہا گیا کہ جھوٹے مقدمات لگائے جاتے ہیں میرا خیال یہ ہے کہ سو میں ایک آدھ شخص بھی ایسا نہیں ہوگا جو یہ اعتراف کرے کہ مجھ پر سچا مقدمہ قائم کیا گیا ہے - جس کسی پر الزام لگایا جائے وہ یہی کہتا ہے کہ الزام جھوٹا ہے - مقدمہ صحیح نہیں ہے - اون لوگوں کی شکایات سننے کے بعد بہت سے لوگ اون کی ہمدردی میں تائید کرنے اور اون کی شکایتیں لانے کے لئے کھڑے ہوجاتے ہیں - میں برابر اون کی نیک دلی کا اعتراف کرتا ہوں - اون کی پبلک اسپرٹ کی تعریف کروں گا - وہ پبلک ورکر (Public worker) ہونے کی حیثیت سے ایسا خیال رکھتے ہیں کہ پبلک کے کسی فرد کو کسی قسم کی تکلیف نہ ہونے پائے - کسی مصیبت زدہ آدمی کی مصیبت کی داستان سننے کے بعد وہ اوس کی مدد کے لئے آمادہ ہو جاتے ہیں یہ سب ٹھیک ہے - لیکن میں اوس پبلک ورکر سے اوس ہمدرد سے جو اوس مصیبت زدہ کی امداد کے لئے آمادہ ہوکر آیا ہے اور اوس کی وکالت کر رہا ہے یہ پوچھنا چاہتا ہوں کہ کیا اوس نے ایک جج (Judge) کی حیثیت سے اون واقعات کو سنا ہے کیا وہ اس سے مطمئن ہے کہ اس میں صداقت ہے - کیا اوس نے اپنے طور پر انکوائیری (Enquiry) کرلی ہے - اگر اوس نے ان سارے مراحل کو طے کرلیا ہے اور وہ اوس کی بے گناہی کا یقین رکھتا ہے تو پھر میں یقین دلاتا ہوں کہ ضرور اون کی وکالت کا لحاظ ہوگا - اور مجھے بھی اعتماد ہوگا کہ ایک آنریبل ممبر ہیں انہوں نے خود اپنے طور پر انکوائیری کرلی ہے اور وہ اس سے مطمئن ہوکر یہاں آئے ہیں تو یقیناً وہ بے گناہ ہوگا - لیکن حقائق پر غور کئے بغیر ، حالات کا غیر جانبداری کے ساتھ مشاہدہ کئے بغیر ، معاملہ کی تحقیق و تصدیق کئے بغیر محض کسی کے کہنے سننے پر آپ اوس کی وکالت کریں ،

اوس کی شکایت کو ہوم منسٹر کے پاس یا چیف منسٹر کے پاس پہنچا دیں اور کہیں کہ اس پر بھروسہ کیا جائے تو میں صاف صاف کہتا ہوں کہ اس پر میں تیار نہیں ہوں۔ البتہ میں آپ کو اطمینان دلانا چاہتا ہوں کہ اگر کوئی ایسی چیز ہو جس سے خود آپ مطمئن ہو چکے ہوں اور اس کا ثبوت آپ کے پاس ہو کہ واقعی کوئی بے گناہ ہے تو ضرور اس کا لحاظ کیا جائے گا۔ میرے پاس جتنے ریپریزنٹیشن (Representations) آئے ہیں ان میں بہت تھوڑے ایسے ہیں کہ جن میں خود اپنے طور پر کوئی انکوائیری (Enquiry) کی گئی ہو۔ اگر ایسے کیسس آئے ہیں تو میں نے خود انکوائیری کرائی ہے ایک نہیں دو دو تین تین مرتبہ انکوائیری کرائی گئی ہے لیکن ہر کیس میں تو اس طرح سے نہیں کیا جا سکتا۔ کہیں کسی موقع پر غلط کام ہوا ہے تو میں نے فوری ایکشن (Action)لیا ہے لیکن اس کی چرچا نہیں کی۔ کام کر کے ڈھول نہیں پیٹا۔ یہ ڈنکا نہیں بجایا کہ ہم نے یہ کیا وہ کیا۔ اس طرح کرنے سے دوسری طرف جو اثر ہوتا ہے اس کا بھی لحاظ کرنا ضروری ہے۔ جن کا کردار ٹھیک ہوتا ہے جو امن و امان کے طالب رہتے ہیں ان کو بھی طمانیت دینا ضروری ہوتا ہے۔ یہاں تو سب کو یکجا لا کر عام طور پر الزامات لگائے جاتے ہیں۔ اس طرح کا عمل رہا تو کوئی پولیس ڈپارٹمنٹ میں نوکری کرنا پسند نہیں کریگا۔ میں خاص طور پر لیڈرس آف دی اپوزیشن سے کہوں گا کہ اس کو پارٹی کوئسچن (Party Question) نہیں بنانا چاہئے۔ دراصل یہ پارٹی کوئسچن نہیں ہے۔ اڈمنسٹریشن (Administration) کی افیشینسی (Efficiency) کو بڑھانا جس طرح اس طرف کی پارٹی کا کام ہے اوسی طرح آپ لوگوں کا بھی کام ہے۔ اپوزٹ سائیڈ (Opposite side) میں بیٹھنے والوں کا بھی کام ہے کہ وہ اڈمنسٹریشن کی افیشینسی کو بڑھانے کی کوشش کریں۔ اس بارے میں دونوں کو ایک ساتھ کوشش کرنی چاہئے۔ یہ نہ کریں اور بلائنڈ چارجس (Blind charges) لگائیں تو میں کہوں گا کہ ڈی مارالائیز (Demoralise) کرنے کے مترادف ہوگا۔ ممکن ہے کہ آج جو ٹریژری بنچس پر بیٹھے ہوے ہیں وہ کل اپوزیشن میں آجائیں اور جو اپوزیشن میں ہیں وہ ٹریژری بنچس پر آ جائیں ایسی صورت میں آپ کو اسی مشنری سے کام لینا پڑیگا۔ قانون تو یکدم آپ بدل نہ سکیں گے۔ اسی قانون کے تحت اڈمنسٹریشن کو چلانا پڑیگا۔ یہ تو نہیں ہوگا کہ چین میں جس طرح یکدم مشنری کو بدل دیا گیا ویسا ہی یہاں بھی بدل دیا جائے۔ آپ پر لازم ہوگا کہ اسی مشنری سے کام لیں جیسا کہ ہم نے لیا ہے۔ پھر اوس وقت کیا ہوگا؟ ایک آنریبل ممبر آف دی اپوزیشن نے کہا کہ پی۔ ڈی۔ ایف کے لوگوں کو ملازمت میں نہیں لیا جاتا میں اون آنریبل ممبر کے معلومات کے لئے کہنا چاہتا ہوں کہ کئی لوگوں نے شکایت کی کہ کانگریس کے اسٹرگل (Struggle) میں جن لوگوں نے حصہ لیا ہے اون کو ملازمت میں نہیں لیا جاتا یہ کیوں؟ لیکن وہ کیا جانتے ہیں کہ اگر کوئی پالیٹکس (Politics) میں آجائے تو پھر وہ گورنمنٹ کے اڈمنسٹریشن کے کام کا نہیں رہتا۔ یہ فنڈامنٹل چیز ہے کہ وہ اڈمنسٹریشن

(Administration) کے لئے بالکل ان فٹ (Unfit) ہوتا ہے - یہ ایک مانا ہوا پرنسپل (Principle) ہے - ہمیں ڈس آنسٹی (Dishonesty) اور کرپشن کے خلاف فائیٹ اوٹ (Fightout) کرنا ہے ہمیں افیشینسی کو بڑھانا ہے - ڈیٹرمنیشن (Determination) کے ساتھ سوچنے کی ضرورت ہے - اگر مجموعی طور پر ایک لاٹھی سے ہانکنے کی کوشش کی جائے تو اس کے برے انرات سرویس پر ہوے بغیر نہیں رہ سکیں گے - بار بار یہ کہنا کہ سرویسس ایفکٹیو (Effective) نہیں ہیں یہ چیز کچھ ٹھیک نہ ہوگی - میں اون آنریبل ممبرس کو جو اوس طرف بیٹھے ہوے ہیں دعوت دینا ہوں کہ وہ سنجیدگی کے ساتھ ان امور پر غور کریں - اپنے کہنے کے طریقے کو بدلیں - اپنی باتوں کے انداز کو بدلیں - جب آپ کو ڈپارٹمنٹس پر شبہ ہے اور حکومت کے عمل پر اعتراض ہے تو میں پوچھتا ہوں کہ عدالت میں کیوں نہیں جاتے تو اس بات پر چڑ جاتے ہیں اور کہا جاتا ہے کہ عوام کو عدالت کا راستہ بتایا جاتا ہے - پھر میں کونسا راستہ بتاؤں - پولیس کا کوئی شخص انکوائیری کرنے کے لئے جاتا ہے تو آپ کہتے ہیں کہ وہ تو سب ایک جھاڑ کے پتے ہیں - ظاہر ہے کہ آپ کو ان پر اعتماد نہیں ہے - اور نہ اعتماد ہو سکتا ہے - بعض مرتبہ کہا جاتا ہے کہ پولیس والوں نے فلاں فلاں جرم کا ارتکاب کیا ہے ، وہ جرائم قابل دست اندازی ہیں - میں جب انوسٹی گیشن (Investigation) کرانا ہوں تو وہ صحیح ثابت نہیں ہوتے اور آپ کو اس پر بھروسہ نہیں ہوتا - اب کیا کیا جائے - اس پر میں کہتا ہوں کہ عدالت کا دروازہ کھلا ہوا ہے جائے استغاثہ کیجئے - اگر ثبوت موجود ہے تو پریشانی کی کوئی وجہ نہیں ہے - یہی راستہ ہوسکتا ہے جو عوام کو میں دکھا سکتا ہوں - آج عدالتیں اگزیکیٹیو گورنمنٹ کے ماتحت نہیں ہیں - یہاں یہ بات اطمینان بخش ہے کہ پہلے ہی سے عدلیہ عاملہ سے الگ ہے - پھر بھی اوس زمانے کی گورنمنٹ کے عدلیہ پر ان ڈائرکٹلی (Indirectly) پریشر (Pressure) ہو سکتا تھا لیکن آج ایسے بھی اسباب نہیں ہیں - ہائی کورٹ کے ججس کو اس کی ضرورت نہیں ہے کہ وہ ہمارے پاس آکر خوشامد کریں - وہ سپریم کورٹ کے تحت ہیں - میں یہ ماننے کے لئے تیار نہیں ہوں کہ وہ اپنی ذاتی مرضی یا حکومت کے دباؤ سے جو چاہیں کرسکتے ہیں -

ایک مرتبہ اسمبلی میں خون آلود کپڑے پہنچانے کی کوشش کی گئی تھی میں نے اوس وقت بھی یہ کہا تھا کہ جب آپ کے پاس اتنا ثبوت موجود ہے تو عدالت میں کیوں نہیں جاتے - جب آپ وہ کھلا ہوا راستہ اختیار نہیں کرتے تو ہم یہ سمجھنے پر مجبور ہیں کہ آپ کے پاس کوئی ثبوت نہیں ہے خالی باتیں ہیں - کہا جاتا ہے کہ ایک غریب آدمی کہاں سے شہادت لاسکتا ہے - لیکن جب آپ یہ کہتے ہیں کہ فلاں آدمی اچھا نہیں ہے تو اس پر کیسے بھروسہ کرلیا جائے - بہت سے لوگ اس طرح کہتے ہیں کہ ہم پر بھروسہ کیا جائے لیکن میں پوچھتا ہوں کہ آپ نے بھی اس کی صداقت کا کچھ اطمینان کرلیا ہے یا نہیں ؟ اگر آپ نے اطمینان کرلیا ہے تو کیا مواد ہے ؟

کیا ثبوت ہے کہ وہ گنہگار نہیں ہے ؟ یا اگر آپ پولس پر الزام لگاتے ہیں تو آپ کے پاس کیا ثبوت ہے کہ وہ مورد الزام قرار دینے کے قابل ہے - اگر مجھے ان امور کا اطمینان نہیں دلاسکتے تو میں مجبور ہوں -

کرپشن (Corruption) کے بارے میں بھی بہت کچھ کہا گیا ہے - تفصیلات تو آپ کے سامنے پیش کرنے کا موقع نہیں ہے لیکن صرف اس قدر کہونگا کہ یہاں جو ٹریبیونل (Tribunal) قائم ہے اس کے ذریعہ جو مقدمات فیصل ہوئے ہیں ان میں ۱۳ گزیٹیڈ آفیسرس اور (۸) نان گزیٹیڈ اس طرح جملہ (۲۱) اشخاص ڈسمس (Dismiss) ہوچکے ہیں - ایک آنریبل ممبر نے دریافت کیا کہ انٹی کرپشن (Anti-corruption)کا کیا کام ہوا ہے - اس تعلق سے میں کہوں گا کہ انٹی کرپشن کمیشن کی جو رپورٹ آئی ہے اس میں کئی چیزیں پیش کی گئیں ہیں - انکی سفارشات کی جانچ کرنے کی ضرورت ہے - وہ مسئلہ کیابینیٹ (Cabinet) میں آیا ہے - اسمبلی کے اجلاسوں کی وجہ سے وقت نہیں ملا کہ اس پر ڈسکس (Discuss) کیا جائے - مجھے امید ہے کہ بہت جلد اس مسئلہ کا تصفیہ ہو جائیگا - ہم نے اس کے لئے گنجائش رکھی ہے کہ انٹی کرپشن برانچ (Anti-corruption Branch)کو وسیع کیا جائے -

سی - آئی - ڈی - کے سلسلے میں بھی کہا گیا - کمیونسٹ آرمڈ اسٹرگل (Communist Armed Struggle) کے بند ہونے کے بعد مختلف لوگوں نے خلاف قانون جو آرمس رکھے تھے اونکو برآمد کرنا کوئی معمولی کام نہ تھا - یہ کام سی - آئی - ڈی کی مدد ہی سے کیا گیا ہے - جو آرمس برآمد ہوئے ہیں انکی تفصیل یہ ہے -

ARMS	
.333 rilles	20
B. L. Guns	2
Bombs	2
B. L. Revolvers	6
B. L. Pistols	1
M. L. Pistols	4
Sten guns	2
Italian rifles	1
Winchester rifle	1
Repeating rifle	1
.410 automatic pistol	1
Revolvers	4
M. L. guns	17
Swords	13
Spear	1
Sub-machine gune	1
Hand-gune	1
Tommy cartridges	..

یہ اس سال کی تعداد ہے - اس سے پہلے کے بہت سے آرمس ہیں مین صرف سی - آئی - ڈی کی طرف سے جو کام ہوا ہے ......

شری کے - ایل - نرسمہا راؤ - یہ سب واپس کئے ہوئے آرمس کی تعداد تو نہیں ہے -

شری ڈگمبر راؤ بندو - اون کا حساب الگ ہے - میں یہ کہہ رہا ہوں کہ خفیہ طور پر جن لوگوں نے ہتیار اپنے قبضے میں رکھے تھے اون کو سی - آئی - ڈی نے برآمد کیا ہے - میں نے اس کا حوالہ اس لئے دیا کہ حالات سے آنریبل ممبرس باخبر رہیں - اور یہ اعتراض کیا گیا کہ سی - آئی - ڈی یہ دریافت کرتی پھرتی ہے کہ آنریبل ممبرس کہاں رہتے ہیں کیا کرتے ہیں - ظاہر ہے کہ پولیٹیکل پارٹیز کیا کام کرتی ہیں وہ دیکھتی ہے - ہر ایم - ایل - اے کے بارے میں انکے پاس ریکارڈ رہتا ہے - منسٹروں کے بارے میں بھی وہ مواد رکھتے ہیں -

یہ کیوں سمجھا جارہا ہے کہ کسی خاص پارٹی ......

श्री. व्ही. डी. देशपांडे: जिस तरह अबतक आपने अपने पुलिस डिपार्टमेंट में अॅन्टी कम्युनिस्ट ब्रँच रखी है, वैसे ही अॅंटी काँग्रेस, अॅंटी हिंदुमहासभा, अॅंटी सोशलिस्ट क्या अैसे भी ब्रँचेस रखी गअी हैं?

شری ڈگمبر راؤ بندو - اگر آپ وہ چیزیں بھول جائیں تو معلوم ہوگا کہ جو کچھ بھی ہورہا ہے معقولیت کے ساتھ ہی ہورہا ہے - آپ آج کے زمانے کی طرف دیکھئے .....

श्री. व्ही. डी. देशपांडे: अिस तरह पहले हालात मे अॅंटी कम्युनिस्ट ब्रँच सी. आय. डी. में अलग रखी गअी थी, वैसे अब रखने की जरूरत नहीं है।

شری ڈگمبر راؤ بندو - مجھے افسوس اس کا ہے کہ آنریبل ممبر نے غور سے نہیں پڑھا - صفحہ ۱۱۱ پر دیکھئے - اینٹی کمیونسٹ اسکیم اس زمانے میں تھی جب کہ آپ نے آرمڈ ریوولٹ (Armed revolt) کیا تھا - جب کبھی ہوگا اس کے.........

श्री. व्ही. डी. देशपांडे: जो बजट हमारे सामने पेश किया गया है अुसके पेज नंबर ३४६ पर अॅन्टी कम्युनिस्ट ब्रँच के लिये आज भी खर्चा बताया गया है। मैं यह समझता हूं कि आज भी अुस ब्रँच पर अलग तौर पर खर्चा किया जारहा है।

شری ڈگمبر راؤ بندو - وہ اس وقت کے حالات کے لحاظ سے تھا -

श्री. नरेंद्र (कारवान): जो अन सोशल अेलिमेंट्स (Unsocial Elements) हैं अुनके खिलाफ अलग ब्रँच रखना पडता है। और बराबर सी. आय. डी. की निगरानी अुनपर रहती है।

श्री. व्ही. डी. देशपांडे: आज के हालात में अॅंटी कम्युनिस्ट के तौर पर अलग ब्रँच रखना मैं ठीक नहीं समझता हूं।

شری داجی شنکر راؤ (عادل آباد) - کیا اینٹی آریا سماج اسکیم بھی ہے -

شری ڈگمبرراؤبندو - وہ سب ھیں جن سے خطرہ ھوسکتا ھے اون کے بارے میں جو رپورٹس مہیا کرنا ھے وہ برابر کام کرتے رھتے ھیں - اور رکھے جاتے ھیں - میں آنریبل ممبرس کو اس جانب توجہ دلانا چاھتا ھوں کہ جب ھمیں پولس بجٹ میں کمی کرنے کی جانب توجہ دلائی جاتی ھے تو دیکھنا چاھئے کہ ھم کن حالات سے گزررھے ھیں - پاک امریکن پیکٹ (Pak-American Pact) کے بارے میں حکومت ہند کیا کررھی ھے - ھماری سرحدات پاکستان اور تبت سے ملی ھوئی ھیں - اور حیدرآباد ایک ایسا اسٹیٹ ھے جہاں کمیونسٹ پارٹی نے آرمڈ ریوولٹ کیا - اور حیدرآباد ھی ایسی ریاست تھی جس کی اس زمانے کی حکومت نے گورنمنٹ آف انڈیا کے خلاف آرمڈ ریوولٹ کیا - اسکو پیش نظر رکھنا چاھئے - اسکے برخلاف آپ کہتے ھیں کہ آرمڈ فورسس کم کردیجئے پولیس کے نا کے برخاست کردیجئے - میں یہ چاھتا ھوں کہ آپ حقیقت پسندی سے کام لیں - میں ضرور اس پر کسیقدر اطمینان کے سانھ کہنے کے لئے تیار ھوں - شائد آنریبل ممبرس آف دی کمیونسٹ پارٹی یا پی-ڈی-یف کی شائد یہ مرضی نہ ھو کہ اس قسم کی حرکات کریں - لیکن حیدرآباد میں بہت سے ایسے عناصر ھیں جن کی روک تھام کی جانی ضروری ھے - اور امن قائم رکھنا ضروری ھے - خصوصاً ایسے وقت جب کہ پوری دنیا اور ھمارے پاس بھی ٹنشن (Tension) ھے - یہ خطرہ سے خالی نہوگا کہ ھم فورسس نکال دیں - اگر جرائم کم ھوں تو ھم بٹالینس (Battalions) نکال سکتے ھیں اور خرچہ کو کم کرسکتے ھیں ھم خود خرچہ کم کرنا چاھتے ھیں - کچھ آنریبل ممبرس نے جو سجیشنس دئے ھیں وہ خود ھمارے سامنے ھیں- اس سے بھی مزید خرچہ کم کیا جا سکتا ھے- لیکن ھم ایسی کوئی چیز کرنے سے مجبور ھیں جسکی وجہ سے امن کو خطرہ ھو - میں اس سے بڑھکر ھاؤز کا ٹائم لینا نہیں چاھتا - میں اسپیکر صاحب کا مشکور ھوں کہ انہوں نے مجھے کچھ ٹائم زیادہ دیا- اور میں ھاؤز کا بھی مشکور ھوں-

Demand No. 8—Charges on account of Motor Vehicles Acts, —Rs. 16,22,000.

State Transport Authority (District Inspectors).

Shri R. P. Deshmukh : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of the State Transport Authority in the City.

Shri Annajirao Gavane (Parbhani) *:* I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Policy of Government in respect of Road permits and amenities to passengers.

Shri K. Ananth Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Taxation on vehicles.

Shri Syed Akhtar Hussain (Jangaon) : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of the Offices of the Motor Vehicles Inspectors in the Districts.

Shri Gopidi Ganga Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of R.T.A. in the Districts.

Shri K. Ananth Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Mr. Speaker : The question is :

"That a sum not exceeding Rs. 16,22,000 under Demand No. 8 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh."

The motion was adopted.

Demand No. 16—General Administration C—Elections—Rs. 5,85,500.

Govt's. failure to disburse the Expenses incurred by the village officials during the last general elections.

Shri Gopidi Ganga Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Inadequate arrangements for payment of allowances in connection with elections etc.

Shri P. Vasudev (Gajwel): I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Misuse of funds by the Government in connection with the elections.

Shri Viswanath Rao Soore (Lakshetipet—General): I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Bye-elections.

Mr. Speaker: The question is:

"That the grant under Demand No. 16 be reduced by Re. 1."

The motion was negatived.

Mr. Speaker: The question is:

"That a sum not exceeding Rs. 5,85,500 under Demand No. 16 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh."

The motion was adopted.

Demand No. 18.—*Administration of Justice* —*Rs.* 43,94,000.

Providing free legal advice to poor litigants.

Mr. Speaker: The question is:

"That the grant under Demand No. 18 be reduced by Rs. 100."

The motion was negatived.

Speedy and less expensive method of administration of justice.

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 18 be reduced by Rs. 100."

The motion was negatived.

Administration of the Judicial Department.

Shri Sharangowda Inamdar : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Delay in disposal of Cases

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 18 be reduced by Rs. 100."

The motion was negatived.

Working of the Judicial Department.

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 18 be reduced by Rs. 100".

The motion was negatived.

Inadequate Legal aid to the accused in capital cases and protection against harrassment of the witnesses by the Police.

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 18 be reduced by Re. 1".

The motion was negatived.

Reorganisation of Courts and the Policy of Languages therein

Shri Abdur Rahman : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Regional and Urdu languages in the Courts

Shri Annajirao Gavane : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Delay and heavy expenses in administering Justice.

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 18 be reduced by Re. 1".

The motion was negatived.

Mr. Speaker : The question is :

"That a sum not exceeding Rs. 48,94,000 under Demand No. 18 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March, 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh."

The motion was adopted.

Demand No. 19—Jails and convict settlements—Rs. 25,82,000.

Jail Reforms.

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 19 be reduced by Rs. 100".

The motion was negatived.

Jail Reforms with special reference to the need to make Jails self-supporting

Mr. Speaker : The question is :

" That the grant under Demand No. 19 be reduced by Rs. 100 ".

The motion was negatived.

Inefficiency and maladministration in Jail Administaration of the State

Mr. Speaker : The question is :

" That the grant under Demand No. 19 be reduced by Rs. 100 ".

The motion was negatived.

Appointments, duties and responsibilities of administrative officials in the Jail Department

Mr. Speaker : The question is :

" That the grant under Demand No. 19 be reduced by Rs. 100 ".

The motion was negatived.

Jail industries and measures for their Development.

Mr. Speaker : The question is :

" That the grant under Demand No. 19 be reduced by Rs. 100 ".

The motion was negatived.

Maladministration and implementation of the reforms

Shri R. P. Deshmukh : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of the Dept.

Mr. Speaker: The question is:

"That the grant under Demand No. 19 be reduced by Rs. 100".

The motion was negatived.

Conditions of Jail Industries

Shri P. Vasudeo: I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Conditions of prisoners in Jails and matters Pertaining to remissions and Parole

Shri A. Ramchandra Reddy: I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Maladministration in Jails in respect of persons under remand and in lock-ups

Shri Gopidi Ganga Reddy: I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of Jails and Convict Settlements

Shri A. Ramchandra Reddy: I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Mr. Speaker: The question is:

"That a sum not exceeding Rs. 25,82,000 under Demand No. 19 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending the 31st day of March 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh".

The motion was adopted.

Demand No. 20–*Police–Rs.* 3,29,39,000
Economy in Police Expenditure

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 75,00,000".

The motion was negatived.

Shri V. D. Deshpande : I demand a division, Sir.

The House then divided.

Ayes.....49 Noes .. 77

The motion was negatived.

Reduction in Armed Police and Economy in Police Expenditure

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 21,00,000".

The motion was negatived.

Repatriation of Police Officers on Deputation

Mr. *Speaker :* The question is :

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 21,000."

The motion was negatived.

Excesses of Police on the Public

Shri M. Buchiah : (Sirpur) : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn

Malpractices of Police in the day to day administration

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand Nc. 20 be reduced by Rs. 100".

The Motion was negatived.

Malpractices and heavy corruption in District Police Force.

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 100".

The motion was negatived.

Working of the Police Motor Transport Section.

Shri R. P. Deshmukh : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Failure of Government to eradicate and to raise the standard of efficiency of the District Police Force.

Shri Ankush Rao Ghare (Partur): I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of the Railway Police

Shri Ankush Rao Ghare : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

The New organization of the City Police

Shri Annaji Rao Gawane : I beg leave of the House, to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

The establishment charges of the City Police, Hyderabad.

Shri Annaji Rao Gawane : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion, was by leave of the House, withdrawn.

Working of the Police Training Centre at Bidar and Amberpet

Shri Annaji Rao Gawane: I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was by leave of the House, withdrawn.

The working of the Anti-corruption Branch.

Mr. Speaker: The question is:

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 100."

The motion was negatived.

The Administration of the Police Department

Mr. Speaker: The question is:

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 100."

The motion was negatived.

The amalgamation of H.S.R.P. with the Armed Police Force

Shri Annaji Rao Gawane: I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

The New Organization of the City Criminal Investigation Branch.

Shri Annaji Rao Gawane: I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

The recruitment of Policy of the Government in the Department.

Shri Annaji Rao Gawane: I beg leave of the House to withdraw muy cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Reorganization of the District Police.

Shri Annaji Rao Gawane: I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

The policy of the Department in curbing civil liberties in the name of maintenance of law and order and detection of Crime.

Mr. Speaker: The question is:

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 100."

The motion was negatived.

Reorganization of the Department

Mr. Speaker: The question is:

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 100."

The motion was negatived.

Working of the District Criminal Investigation Department.

Shri Bhagwan Rao Boralkar: I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of the village Patels

Shri Bhagwan Rao Boralkar: I beg leave of the House to withdraw my cutmotion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

The working of District Subordinate Officers

Shri Bhagwan Rao Boralkar: I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Failure of the Police to control the activities of unsocial elements.

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 100."

The motion was negatived.

The necessity of associating the public with the Police by the introduction of a system of compulsory police training in schools and colleges, volunteer assistants, home guards, etc., for the preservation of internal peace

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Rs. 100."

The motion was negatived.

Salaries, T.A. and D.A. paid to the Police Officers and Constables

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1".

The motion was negatived.

Taking of forced labour by Police

Shri R. B. Gurumurthy (Khammam General): I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Failure to release Political Prisoners

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1."

The motion was negatived.

Use of Police Force to put down Strikes and settle Land Disputes

Shri K. L. Narsimha Rao : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of City Police and economy in their expenditure

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1."

The Motion was negatived.

Working of Police Station Houses in Karimnagar district and instituting of false cases on public workers in Jagtial and Peddapalli taluqs

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1."

The motion was negatived.

Repression and instituting false cases by Police in Bhir, Osmanabad and Nanded districts.

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re 1."

The motion was negatived.

Police repression and institution of false cases in Nalgonda

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re 1."

The Motion was negatived.

Repression in Telangana

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1".

The motion was negatived.

Misuse of powers and corruption by Police Officers in districts

Shri Viswanath Rao Soore : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Closing down of Armed Police camps in the Villages in Telangana

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1."

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Rdution in numberof police-subdivisions and 81 Police station houses

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1."

The motion was negatived.

Reduction and working of Seth Sendhis and Police Patels

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1."

The motion was negatived.

Working of Criminal Settlements

Shri Uppla Malsur (Suryapet-Reserved) *:* I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of Police Force in Warangal district

Shri B. Krishniah(Koammam-General): I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Government's failure to give proper training to the Police Officers in Detecting Crimes

Shri K. Ananth Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Rash and rude attitude of the Police officers towards Public

Shri K. Venkat Rama Rao : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

The necessity of enforcing strict discipline in the low paid Officers and Police Constables

Mr. Speaker : The question is:

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1."

The motion was, negatived.

Economy in Railway Police

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1."

The motion was negatived.

Economy in and working of the C.I.D.

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1."

The motion was negatived.

Failure of the "X Branch" to control corruption

Shri B. Krishniah : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Scales of pay, housing conditions and recruitment and training of Police Forces

Shri Pendem Vasudev : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of "Police Porsecution Officers"

Shri A. Laxminarsimha Reddy (Wardhannapet) : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Harrassment of Harijans by Police

Shri P. Laxmiah (Nalgonda-Reserved): I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Behaviour of Police Officers

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1."

The motion was negatived.

Malpractices and High-handedness of the Village and district Force

Shri Viswanathrao Soore: I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of the Police Department in Districts and Rural Areas

Shri Viswanathrao Soore: I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Necessity of efficient Police Force

Shri K. Ananth Reddy: I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of the Police Department

Mr. Speaker: The question is:

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1."

The motion was negatived.

Necessity of purchase of Arms and Ammunition

Shri Annajirao Gawane: I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Administration of the Police Department

Shri Syed Hassan: I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Corruption and High-handedness of the District Police Officers.

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1."

The motion was negatived.

Failure of the District Police to maintain Law and Order

Shri Bhujang Rao (Jintur) : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

The necessity of opening New Police Station houses in Telengana

Mr. Speaker : The question is :

"That the grant under Demand No. 20 be reduced by Re. 1."

The motion was negatived.

Mr. Speaker : The question is :

"That a sum not exceeding Rs. 3,29,39,000 under Demand No. 20 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March, 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh."

The motion was adopted.

Demand No. 61—*Receipt from R. T. D.,—Working expenses-Rs.* 2,53,88,000

Working of the R.T.D.

Shri R.P. Deshmukh : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House,

Failure of the Department to provide ameneties to the Public

Shri Sharangowda Inamdar : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

High rates of transport and corruption in the Department

Shri M. Buchiah : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Necessity of opening new bus routes in the Districts

Shri K. Ananth Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Necessity of having an efficient inspection staff in the Department

Mr. Speaker : The question is :

" That the grant under Demand No. 61 be reduced by Re. 1. "

The motion was negatived.

Reduction in the Bus fares to I. G. 6 pies per mile.

Mr. Speaker : The question is :

" That the grant under Demand No. 61 be reduced by Re. 1. "

The motion was negatived.

Association of the public with the R. T. D. Administration through an Advisory Committee as in the Railway Department

Mr. Speaker : The question is :

" That the grant under Demand No. 61 be reduced by Re. 1. "

The motion was negatived.

Inadequate number of buses on the existing routes and opening of new routes

Shri Syed Akhtar Hussain : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Granting of Bonus to R.T.D. Employees.

Mr. Speaker : The question is :

" That the grant under Demand No. 61 be reduced by Re. 1 ."

The motion was negatived.

Store purchases by the R.T.D. and the need for an Investigation Committee

Mr. Speaker : The question is :

" That the grant under Demand No. 61 be reduced by Re. 1 ."

The motion was negatived.

Over-loading of busses and various inconveniences to the passengers regarding shelter, drinking water, urinals, etc.

Mr. Speaker : The Question is :

" That the grant under Demand No. 61 be reduced by Re. 1 ."

The motion was negatived.

Corruption in the Road Transport Department.

Shri Viswanathrao Soore : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Amenities to the staff and their general working conditions.

Shri Ch. Venkatram Rao (Karimnagar) : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Failure of the Government to give bonus to the R.T.D. Workers.

Mr. Speaker : The Question is :

"That the grant under Demand No. 61 be reduced by Re. 1."

The motion was negatived.

Mr. Speaker : The Question is :

"That a sum not exceeding Rs. 2,53,88,000 under Demand No. 61 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March, 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh."

The motion was adopted.

Demand No. 75–Evacuee Department–Rs. 1,58,300.

The Working of Evacuee Department.

Shri R. P. Deshmukh : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Failure of Evacuee Department to speedily settle Evacuee disputes

Shri Abdur Rahman : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Policy of the Government regarding Evacuee Property

Shri Viswanath Rao Soore : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Arrangements made by Government to run the M.C.S. Farm in Nizamabad.

Shri K. Ananth Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Mr. Speaker : The Question is :

" That a sum not exceeding Rs. 1,58,300 under Demand No. 75 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March, 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh."

The motion was adopted.

Demand No. 80—*Grant for Rehabilitation of displaced persons before, during and after Police Action—Rs.* 2,50,000.

Rehabilitation of displaced persons.

Mr. Speaker : The Question is :

" That the grant under Demand No. 80 be redcued by Rs. 100.

The motion was negatived.

Working of the Rehabilitation Department.

Shri Annajirao Gawane : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Working of the Rehabilitation Department.

Shri R. P. Deshmukh : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Mismanagement of the Rehabilitation Fund.

Mr. Speaker : The Question is :

" That the grant under Demand No. 80 be reduced by Re. 1."

The motion was negatived.

Rehabilitation of displaced persons.

Shri K. Venkatrama Rao: I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Mr. Speaker : The Question is :

"That a sum not exceeding Rs. 2,50,000 under Demand No. 80 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March, 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh."

The motion was adopted.

Demand No. 81—*Welfare of ex-Criminal Tribes in the State—Rs.* 55,000.

Inadequate funds provided for the welfare of ex-Criminal Tribes.

Shri K. Ananth Reddy : I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Neglect of welfare of the ex-Criminal Tribes in the State.

Shri Uppala Malsur: I beg leave of the House to withdraw my cut-motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Mr. Speaker: The Queation is:

" That a sum not exceeding Rs. 55,000 under Demand No. 81 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March, 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh."

The motion was adopted.

Demand No. 93—*Capital Outlay on Road Transport Schemes outside the Revenue Account*—Rs. 36,22,000

Capital Outlay on Road Transport Schemes in Karnatak

Shri Sharangowda Inamdar : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Failure of Government to establish a bus depot in Parbhani district.

Mr. Speaker : The Question is ;

"That the grant under Demand No. 93 be reduced by Rs. 100."

The motion was negatived.

Capital Outlay on Road Transport Scheme

Shri V. D. Deshpande : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Necessity of plying buses in Parbhani district.

Shri Bhujang Rao : I beg leave of the House to withdraw my cut motion.

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Mr. Speaker : The Question is :

"That a sum not exceeding Rs. 36,22,000 under Demand No. 93 be granted to the Rajpramukh to defray the several charges that would come for payment during the course of the year ending 31st day of March, 1955. The Demand has the recommendation of the Rajpramukh."

The motion was adopted.

The House then adjourned till Half Past Two of the Clock on Wednesday, the 17th March, 1954.
